दतिया काव्य धारा

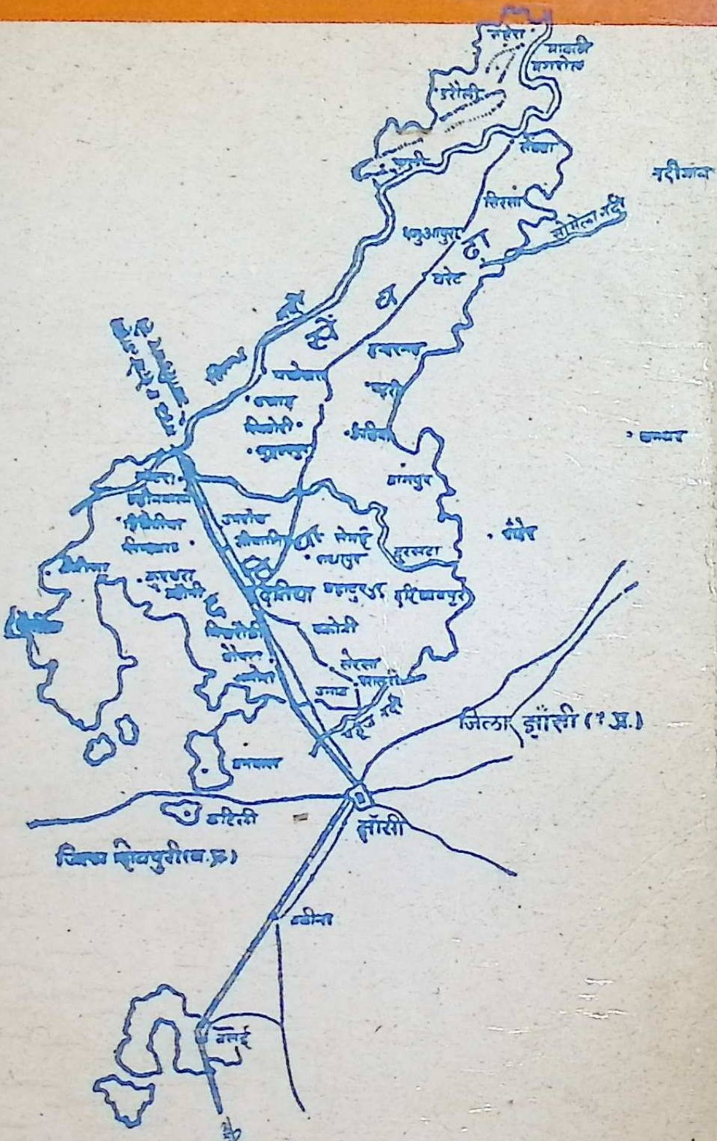

दतिया
काव्य-धारा

Bhawan's Sri Sankaracharya Sanskrit
628
Mahavidyalaya Bharatiya Vidya

प्रकाशक
म० प्र० बाल साहित्यकार परिषद्
शाखा-दतिया (म० प्र०)
मुद्रक
भानु प्रिन्टर्स, मुड़ियन का कुआँ, दतिया [म०प्र०]
प्रथम संस्करण) सन् १९९० (मूल्य २५ रुपया

दतिया-काव्य-धारा

उत्प्रेरक—

डा० हरिहर गोस्वामी 'मानस विश्वास'
प्राध्यापक, 'हिन्दी विभाग'
शा० स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दतिया

डा० रामेश्वर प्रसाद गुप्त
अध्यक्ष, (संस्कृत विभाग)
शा० स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दतिया

सम्पादक मण्डल-

हरि सिंह 'हरीश' **जगदीश शरण विलगैयाँ 'मधुप'**
चन्द्र प्रकाश पटसारिया **ऋषि मोहन श्रीवास्तव**
राजकिशोर गोस्वामी 'राज'

628

कोषाध्यक्ष:-
श्रीमती शान्ति गोस्वामी

विशेष-उक्त सभी पूर्ण अवैतनिक।

※ सम्पर्क सूत्र ※

१. पं० जगदीश शरण विलगैयाँ 'मधुप' द्विवेदी'
श्री चामुन्डा तन्त्र संस्थान, पट्ठा पुरा, दतिया
अध्यक्ष, म०प्र० बाल साहित्यकार परिषद्, शाखा-दतिया

२. राज किशोर गोस्वामी सिविल लाइन्स, दतिया
सचिव, म०प्र० बाल साहित्यकार परिषद्, शाखा-दतिया

३. श्रीमती शान्ति गोस्वामी (कोषाध्यक्ष, 'दतिया काव्य धारा')
निवास स्थल-मानस विश्वास भवन, चूनगर फाटक, दतिया।

प्राक्कथन

डॉ० रामेश्वर प्रसाद गुप्त
अध्यक्ष, संस्कृतविभाग,
शा० महाविद्यालय, दतिया

दतिया अपने जन्म से ही सिद्ध, प्रसिद्ध कवियों, कलाकारों और साहित्यकारों से गौरवान्वित रही है। इस प्राचीन नगरी के आदि से अद्यतन कवियों की परिगणना करना एक कठिन कार्य है।

आदि कवि महर्षि वाल्मीकि, सिद्ध कवि श्रीकृष्ण द्वैपायन वेदव्यास, कवि कुल गुरू महाकवि कालिदास एवं मानवीय मार्मिक भावों के श्रेष्ठ कवि भवभूति की काव्य कृतियों की सुरभि से सुरभित यह धराधाम रीति कालीन कीर्ति प्राप्त महाकवि केशव, प्रखरप्रतिभा के प्रसिद्ध कवि पद्माकर, गंगतरंग सम आह्लादप्रद सिद्ध कवि गंगाधर, जनमन बिहारी रसिक एवं भक्त सुकवि बिहारी आदि के सम्पर्क से परम गौरव प्राप्त है। वर्तमान शताब्दी में भी स्व० पं० सुधाकर शुक्ल तथा पं० वासुदेव गोस्वामी ने अपनी विभान्विता काव्य-सुधा से समस्त भारत में दतिया की सुकीर्ति का विस्तार किया है।

'दतिया में कवियों की परम्परा' शोध का विषय है। 'बुन्देल वैभव', 'दतिया दर्शन' तथा 'दतिया उद्भव और विकास' आदि पुस्तकों में दतिया के कवियों की सामान्य संतोषप्रद जानकारी उपलब्ध है; तथापि उक्त विषय में अभी पर्याप्त शोध आवश्यक है।

अधुना दतिया में न केवल स्थानीय कवि ही सुपरिगण्य हैं, अपितु-ग्रामीण अञ्चलों के अनेक सुप्रसिद्ध कवि मनीषी लोककल्याणकारी कविता कामिनी की आस्वाद्य रस-स्रोतस्विनी के सुस्रोत हैं। इन सभी के विषय में 'विशद-गहन-शोध' समाज- कल्याण एवं साहित्य—समृद्धि की दृष्टि से अपरिहार्य रूप से अपेक्षित है।

प्रस्तुत संकलन 'दतियाकाव्यधारा' दतिया के कवियों मनीषियों के प्रति भारतीय समाज, साहित्यकारों एवं शासन की दृष्टि-आकर्षण हेतु एक लघु प्रयास है। विश्वास है कि यह सहज उपक्रम समाज, शासन और प्रशासन को दतिया की मनीषा के विकास में अपेक्षित सहयोग का उत्प्रेरक बनेगा। ✱

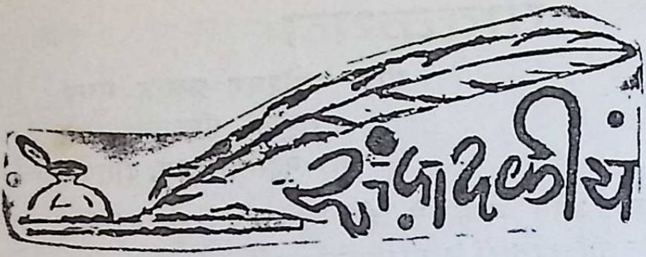

समय की सद्प्रेरणा से शुभ शिवरात्रि के सुदिन में डा० रामेश्वर प्रसाद गुप्त, अध्यक्ष, संस्कृत-विभाग शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दतिया (म०प्र०) के निवास पर दतिया के कवियों की रचनाओं पर एक संकलन प्रकाशित कराने का संकल्प लिया गया। सम्पादक मण्डल प्रस्तुत संकलन के लिए प्रयत्नशील हुआ एवं इसे साकार रूप दे सका। इसमें डा० हरिहर गोस्वामी 'मानस विश्वास' तथा उनकी धर्म-पत्नी श्रीमती शान्ति गोस्वामी (प्रस्तुत संकलन की कोषाध्यक्ष) का वाञ्छित सहयोग मिला।

प्रस्तुत संकलन का नाम दतिया के कवि के स्थान पर 'दतियाकाव्यधारा' अधिक समीचीन प्रतीत होने से ही किया गया।

यह संकलन प्रमुखतः दतिया जिला से सम्बद्ध कवियों की सहयोग राशि से प्रकाशित हुआ है। उसकी अनुक्रमणिका में अतीत और वर्तमान दो भाग प्रदर्शित हैं। अतीत में रचनाकार की रचना 'शीर्षक प्रधानता' से उपेत है। वर्तमान भाग में कवि का नाम शीर्ष पर है।

दतिया में निर्वाण प्राप्त शताधिक कवि विश्रुत हैं; किन्तु आर्थिक विवशतावश उन स्व० कवियों को ही स्थान दिया जा सका है, जिनके निकटस्थों से सहयोग राशि उपलब्ध हुई है। इसी प्रकार वर्तमान में दतिया में दो सौ से अधिक कवि होने पर भी केवल सहयोग प्रदाता कवि ही प्रकाशित किये जा सके हैं। सम्भवतः आगामी संकलनों में ग्रामीण-अंचलों तथा स्थानीय अवशिष्ट कवियों को उन्हीं के सहयोग से प्रकाशित किया जा सकेगा, ऐसा विश्वास है।

प्रस्तुत संकलन में विशिष्ट आर्थिक सहयोग के लिए श्री श्याम सुन्दर बंसल, कार्यपालन यंत्री (पी० एच० ई० विभाग, दतिया), श्री महेन्द्र कुमार राय, सी० एम० ओ०, दतिया तथा श्री पंकज शुक्ल, भू० पू० चेयरमैन, नगर पालिका, दतिया का नाम विशेष उल्लेखनीय है।

प्रस्तुत कार्य में इस संकलन के उत्प्रेरक डा० रामेश्वर प्रसाद गुप्त अध्यक्ष, संस्कृतविभाग, शा० स्नातकोत्तर महा० विद्या० दतिया ने निःस्पृह भाव से अपना अमूल्य परामर्श-सहयोग प्रदान किया। इनका सम्पादक मण्डल हृदय से आभारी है।

दतिया के प्रसिद्ध साहित्यकार डा० हरिमोहन लाल श्रीवास्तव (वर्मा) तथा श्री विपिन विहारी श्रीवास्तव के वाञ्छित सहयोग से सम्पादक मण्डल उनका कृतज्ञ है।

सीमित साधनों एवं कठिनाइयों के कारण संकलन में कतिपय त्रुटियाँ सम्भव हैं, विज्ञ सुधी पाठक उनपर ध्यान न देकर सार-विचार ग्रहण कर संकलन को यशस्विता प्रदान करेंगे, ऐसी आशा है।

जड़ चेतन गुन दोषमय, बिस्वकीन्ह करतार।
संत हंस गुन गहहिं पय, परि हरि बारि बिकार॥

प्रस्तुत संकलन दतिया के बहुश्रुत कवियों का सामान्य परिचय एवं एक या दो रचनाओं को प्रस्तुत कर उनके विषय में एक शोध पूर्ण दृष्टि-प्रक्षेप-हेतु प्रेरित करेगा एवं समाज-उपयोगी सिद्ध होकर साहित्यकोष की समृद्धि में वृद्धि करेगा, ऐसा पूर्ण विश्वास है।

अनुक्रमणिका

अतीतभाग—दिवंगत कवि

क्रमसंख्या	काव्यकार	पृष्ठांक
१	स्व० पं० श्री पंचम कवि	१
२	स्व० पं० श्री चतुरेश चतुर्वेदी	२
३	स्व० पं० श्री सुन्नू लाल पटैरिया 'मदन'	३
४	स्व० श्री छोटे लाल वर्मा	४
५	स्व० पं० श्री सुधाकर शुक्ल	५
६	स्व० पं० श्री बैजनाथ भौंड़ेले	६
७	स्व० पं० श्री श्रीनाथ त्रिवेदी 'कवि जी'	७
८	स्व० पं० श्री लक्ष्मी नारायण पथिक	८
९	स्व० पं० श्री गौरी शंकर सुधाकर	९
१०	स्व० श्री बलवीर सिंह फौजदार	१०
११	स्व० श्री गणेश प्रसाद बड़ेरिया	११
१२	स्व० पं० श्री भगवान दास सरवरिया 'द्विजदास'	१२
१३	स्व० पं० श्री भगवती दास 'भगवंत' कविजू	१३
१४	स्व० पं० श्री द्वारिका प्रसाद पाठक 'द्वारिकेश'	१४
१५	स्व० श्री शम्भु दयाल 'ब्रजेश'	१५
१६	स्व० पं० श्री मूलचन्द्र द्विवेदी 'मूलेन्द्र'	१६
१७	स्व० श्री शान्ति स्वरूप 'सरोज'	१७
१८	स्व० पं० श्री सुन्दर लाल भट्ट	१८
१९	स्व० आचार्य श्री दुर्गा प्रसाद 'दुर्गेश'	१९
२०	स्व० पं० श्री बेद प्रकाश शर्मा	२०
२१	स्व० पं० श्री किशोरी शरण मिश्रा 'रुस्वा'	२१
२२	स्व० पं० श्री चतुर्भुज दीक्षित 'चतुरेश'	२२
२३	स्व० पं० श्री काशी प्रसाद 'भट्ट'	२३
२४	स्व० पं० श्री हरिदास द्विवेदी 'शलभ'	२४

वर्तमानभाग—वर्तमान कवि

क्रमसंख्या	काव्यकार	पृष्ठांक
१	पं० श्री वासुदेव गोस्वामी	२५
२	श्री हरिहर प्रसाद शर्मा 'हरिकेश'	२६
३	डा० मुन्शीलाल पटैरिया 'शशिधर'	२७
४	श्री नारायण दास श्रीवास्तव	२८
५	श्री हरिमोहन लाल श्रीवास्तव	२९
६	श्री माधौ सिंह श्रीवास्तव	३०
७	प्रो० अज़ीज उल्ला कुरेशी	३१
८	पं० श्री राधा चरण द्विवेदी 'चरण'	३२
९	श्री शम्भू दयाल 'राजकवि'	३३
१०	श्रीमती राज कुमारी व्यास	३४
११	श्री राम प्रसाद कटारे	३५
१२	श्री शशि त्रिपाठी	३६
१३	श्री हर प्रसाद रायकवार 'जलेश'	३७
१४	श्री रणवीर सिंह चौहान	३८
१५	श्री रामदास यादव 'यादवेन्द्र'	३९
१६	श्री अवधकिशोर श्रीवास्तव 'अवधेश'	४०
१७	श्री राम भरोसे चतुर्वेदी 'शृंग'	४१
१८	श्री किशोरी शरण श्रीवास्तव 'मानस किंकर'	४२
१९	श्री मथुरा प्रसाद गोस्वामी	४३
२०	श्री जगमोहन सिंह 'मोहन'	४४
२१	श्री द्वारिका प्रसाद उपाध्याय	४५
२२	श्री रामप्रकाश श्रीवास्तव 'उन्मत्त'	४६
२३	श्री राधा मोहन नगार्च	४७
२४	श्री स्वामी शरण सक्सेना एडवोकेट'	४८
२५	श्री राधेश्याम त्रिपाठी 'शांत'	४९
२६	श्री अनन्तराम गुप्त	५०
२७	श्री डी० डी० सिंह चंदेल 'पीयूष'	५१
२८	श्री रामाधार तिवारी 'निर्भीक'	५२
२९	श्री गजराज सिंह खरे 'निर्भीक'	५३

क्रम संख्या	काव्यकार	पृष्ठांक
३०	श्री प्रभुदयाल श्रीवास्तव	५४
३१	श्री हरिसिंह 'हरीश'	५५
३२	पं० श्री चन्द्रशेखर मिश्रा	५६
३३	पं० श्री जगदीश शरण विलगैयाँ 'मधुप' द्विवेदी	५७
३४	पं० श्री नर्मदा प्रसाद ज्योतिषी 'मानस मराल'	५८
३५	श्री प्रभुदयाल गोस्वामी	५९
३६	श्री मिस्टरअली पहलवान	६०
३७	पं० श्री बाबूलाल दुबे 'निषंग'	६१
३८	श्री सीताराम खरे 'मानस चातक'	६२
३९	श्री जयवीर सिंह	६३
४०	डा० श्री हरिशंकर शर्मा	६४
४१	श्री गुलाब चन्द्र अग्रवाल 'वालिद'	६५
४२	डा० हरिहर गोस्वामी 'मानस विश्वास'	६६
४३	श्री हमीर सिंह जी 'कृषक'	६७
४४	श्री ओम किशोर श्रीवास्तव 'चाचा'	६८
४५	श्री बैजनाथ उदैनिया 'विमल'	६९
४६	श्री श्याम सुन्दर बंसल	७०
४७	श्री अब्दुल रहीम	७२
४८	डा० कृष्ण बिहारी लाल पाण्डेय	७३
४९	श्री महेश कुमार मिश्र 'मधुकर'	७४
५०	श्री राम स्वरूप सगर 'मानसहंस'	७५
५१	श्री कण्ठमणि बुधौलिया 'एडवोकेट'	७६
५२	कुँ० नारायण सिंह कटारिया 'एडवोकेट'	७७
५३	श्रीमती ममता श्रीवास्तव	७८
५४	सैयद अलमदार अली ज़ैदी 'अख्तर'	७९
५५	श्री तुलसीराम दांगी	८०
५६	श्री प्रकाश चन्द्र बिलगैयाँ	८१
५७	श्री कमलेश कुमार श्रीवास्तव	८२
५८	श्री घनश्याम यादव	८३
५९	श्री बैजनाथ अहिरवार	८४

क्रम संख्या	काव्य कार	पृष्ठांक
६०	श्री भागीरथ जाटव	८५
६१	श्री सियाशरण भट्ट 'वज्र'	८६
६२	डॉ० रामेश्वर प्रसाद गुप्त	८७
६३	श्री हरीराम पहारिया	८८
६४	श्री कृपा शंकर त्रिपाठी	८९
६५	श्री महेन्द्र कुमार राय	९०
६६	श्री अब्दुल सत्तार ख्याल 'मन्सूरी'	९२
६७	श्री पी० एस० सूर्यवंशी	९३
६८	श्री मती राजदुलारी लक्ष्मी देवी भट्ट	९४
६९	श्री द्वारिका प्रसाद विश्वदेवा 'निडर'	९५
७०	श्री भगवान दास पाठक 'पत्रकार'	९६
७१	प्रो० पी०आर० शुक्ल 'रवि'	९७
७२	श्री वीरेन्द्र जैन	९८
७३	श्री महेश लाक्षाकार 'अनुरागी'	९९
७४	श्री चन्द्र प्रकाश पटसारिया	१००
७५	श्री आर० एस० बौद्ध	१०१
७६	श्री बाबूलाल अग्रवाल 'राही'	१०२
७७	श्री सुरेश कुमार सेन	१०३
७८	श्री भगवान दास निरंजन	१०४
७९	श्री तफ़ज्जुल अली हसनी	१०५
८०	श्री अवधेश उपाध्याय	१०६
८१	श्री ऋषि मोहन श्रीवास्तव	१०७
८२	डॉ० रमेश चन्द्र गुप्त 'सोनी'	१०८
८३	श्री वीरेन्द्र कुमार शर्मा	१०९
८४	श्री सन्तूराम उदासीन	११०
८५	श्री महेन्द्र 'इकदिर्ला'	१११
८६	श्री विजय भटनागर	११२
८७	श्री शैलेन्द्र बुधौलिया	११३
८८	श्री राज गोस्वामी	११४
८९	श्री अजय कुमार जैन	११५
९०	पं० श्याम बिहारी शर्मा	११६

क्रम संख्या	काव्य कार	पृष्ठांक
९१	श्री सुरेन्द्र कुमार तिवारी	११७
९२	सुश्री उमा भार्गव	११८
९३	श्री उमा चरण शर्मा बिलगैयां "अजेय"	११९
९४	श्रीमती कुमकुम भट्ट 'कुमकुम'	१२०
९५	पं० राजेन्द्र कुमार उदैनिया	१२१
९६	श्री शान्ति स्वरूप सक्सेना	१२२
९७	श्री रवि ठाकुर	१२३
९८	श्री फूलसिंह जाटव	१२४
९९	श्री अनूप किशोर गोस्वामी 'मयूर'	१२५
१००	श्री निलय गोस्वामी	१२६
१०१	श्री संतोष दुबे	१२७
१०२	श्री सुरेश कुमार साटम	१२८
१०३	श्री राजेन्द्र 'राज'	१२९
१०४	श्री मिर्जा अकरम बेग 'अकरम दतियावी'	१३०
१०५	श्री हरिश्चन्द्र गौड़	१३१
१०६	किरणमयी यादव 'किक्की'	१३२
१०७	श्री राजकुमार सोनी 'राजू'	१३३
१०८	कु० वन्दना ठाकुर	१३४
१०९	श्री ब्रजेश कुमार शर्मा	१३५
११०	श्री नौशाद उद्दीन 'सुहेल' दतियावी	१३६
१११	कु० रजनी बुन्देला	१३७
११२	श्री कल्याण सिंह राजपूत 'मुन्ना'	१३८
११३	कु० अरुणा त्रिपाठी	१३९

⁂ कवित्त ⁂

रचयिता:- स्व० पंचम कवि

जन्म:- संवत १६१६ ई० में विद्यमान

निर्वाण:– अज्ञात

परिचय:-भार्गव ब्राह्मण कुल में जन्में उच्चकोटि के भक्त एवं सिद्ध कवि ।

विशेष:– आपके नाम से प्रसिद्ध पंचम कवि की टौरिया वर्तमान में तारापीठ के नाम से सिद्ध स्थान है ।

अक्का धतूरो, सदा भंग पूरो
जटाजूट जूरौ, हलाहल पियें हैं।
नेत्रन त्रिशूली, चढ़ी अंग धूरी,
उमा संग पूरी,भेष जोगी को कियें हैं
कैलाश वासी, गले सर्प फाँसी
पढें वेद काशी, प्रकाशी हिये हैं।
'पंचम' भरोसो, सदा ध्यान तुम्हरो ,
सुन्दर वदन चंद्र आड़ो दिये हैं।

द्वारा – रमेश कुमार कवि, वंशज

कवित्त

रचयिता:- स्व०चतुरेश चतुर्वेदी, बड़ौनी खुर्द

जन्म:- अज्ञात

निर्वाण:- अज्ञात

विशेष:- स्व० महाराजा गोविन्द सिंह जू देव के समकालीन कवि

परिचय:- भक्ति एवं प्रकृति सौन्दर्य विचारधारा के प्रेमी कवि ।

(१)

पर्वत सुमेरू कैसो कोट घेर आसपास,
विष्णु कौ विलास वेस विधि में गड़ो नीको ।
जल जमुना सो जामें लहरें तो अनेक उठें,
फूले हैं जलज जामें चितुवो चढौनी को ।
भने चतुरेश बहु अदेंस मिट जात जहाँ,
पक्षी डोले बोलें वृक्ष सघन खड़ौनी को ।
संत जन जापें तत्काल ख्याल आन करें,
आनन्द वो जाल,बडौ ताल है बड़ौनी को ।

(२)

पर्वत विलन्द सिरें सिखरें उतंग ताकी,
नाना भांति वृक्ष पक्षी-शोभा सब सेखिये ।
बावरी विसाल जामें सुन्दर सरोवरी,
भने चतुरेश कुंड कुइया भरें विसेखिए ।
चम्पो चारू केम, मिल प्रेम की वयार बहे,
शीतल सुगन्ध, मंद आनन्द अलेखिये ।
निकट वड़ौनी वरदायक गुफा में उग्र,
देवता प्रसिद्ध सिद्ध गोपेश्वर देखिये ।

द्वारा:— श्री मदन मोहन शर्मा
स्मृति पट से-श्री बाबू लाल सोनी

कविता

रचयिताः- स्व० पं० मुन्नू लाल पटैरिया 'मदन'

जन्मः– ६-५-१९०६ ई०

निर्वाणः– मई १९४४ ई०

परिचयः–महाकवि, चित्रकार, संगीतज्ञ, रावणवध महाकाव्य के प्रणेता, अनेक स्फुट रचनाओं के प्रणेता।

उद्‌भट हुआ पंडित जगत में वेदभाषी शास्त्र का,
जगमान्य था नर वीर था वह विज्ञ अतिशस्त्रास्त्र का।
था जानता प्रति अङ्ग परम पुनीत शासन नीति का,
सबसे प्रथम आचार्य वह था जगत में रणरीति का।

सहयोग द्वारा—श्री वृज भूषण पटैरिया

गीत

रचयिता:- स्व० छोटे लाल वर्मा

जन्म:- १८९५ ई० के लगभग

निर्वाण:- १९५९ ई०

परिचय:— लोक भाषा के सहज कवि एवं जीवन मूल्यो के प्रेरक साहित्यकार

डोले फगवारा फाग हेत चहुँ ओर।
भक्ति फाग खेले बिना होय तृप्ति नहिं तोर॥

मन चेत चैत चित्त चपला विहाय के।
वैसाख वैर भाव कपट छल नशाय के।
जस ज्येष्ठ विभव जग की जरुरत भुलाय के।
आषाढ़ अपनपा के ध्यान को हटाय के।
सावन सरल स्वभाव हो समता बढ़ाय के।
भादौं भले बुरे के बिचारों को नाय के।
आसौज आत्म ज्ञान प्राप्त विधि बनाय के।
कार्तिक विषय कामादि की होली जलाय के।
अगहन अबीर रंग गुलाल वृत्ति की लाय के।
दृढ़ नेम फाग साज पौष लख सजाय के।
भ्रम त्याग माघ माधव चरण लव लगाय के।
फागुन पुनीति फाग भक्ति की रचाय के।
हरि प्रेम रंग में छोटे रंग आनन्द पायके।

द्वारा: - ओम प्रकाश श्रीवास्तव, दतिया

मेघ-सुधा

रचयिताः-स्व० पं० श्री सुधाकर शुक्ल

जन्म - १९२० ई०　　निर्वाण—१९८५ ई०

बिशेष - गांधी सौगन्धिकम भारती, स्वयम्बरम, उर्वशी, स्वामिचरित, चिन्तामणि आदि संस्कृत के महाकाव्यों के प्रणेता। चन्द्रकला, प्रेम प्रमा, कसक आदि। हिन्दी के महाकाव्यों एवं खण्डकाव्यों के रचयिता ईसुरी पुरस्कार तथा म०प्र० शासन आदि से सम्मानित। सहृदय एवं सिद्ध लोक विश्रुत साहित्यकार।

वत बत्सर भर रह विरह विकल,
रमणी रस रहित प्रवासी।
यों राज राजरुष जनित शाप,
भाजन बन यक्ष विलासी।
रम रहा रामगिरि अविरल तरुवृत,
आश्रम उटज विहारी।
जो जनक-सुता तनु मज्जन ज्वर हर,
निर्झर झर झरकारी।
तनु कनक छरी मद मदन भरी,
रदनावलि कुन्दकली सी।
कुँदरू से अधर नत नाभि सजग,
मृग दृग कटि क्षीण छली सी।
दुर्वह नितम्ब भर, अलस ललित गति,
कछु कुच कलश लची सी।
यो युवति पंच बिच सुरुचि संचि,
प्रथमहि विरंच विरची सीं।
यह मंद-मंद मृदु मदिर गंधवह,
वहति पवन पुरवैया।
तव वाम ओर यह मधुर शोर,
कर रहा सगर्व पपैया।

कवित्त

रचयिता :- स्व० बैजनाथ भौंडेले

जन्म -अज्ञात

निर्वाण- अज्ञात

विशेष - भक्त एवं सिद्ध कवि।

ताकेंगे न और को, निहारेंगे न आँखन सों
चरण सरोज चित्त माँहि अब लाखेंगे।
भाखेंगे न और सों विनय की बान दीन ह्वै के,
लीन ह्वै कें नाथ, गुन गाथ अमी चाखेंगे।
सुर नर मुनि ब्रह्मादिक सें न कछू काम,
बैजनाथ यों ही हिय मांझ कर राखेंगे।
राजतधिराज रघुराज, राज जे गरीब-
के निबाज जो हमारी लाज राम राखेंगे।

रचना-वैश्य राम स्वरुप पहारिया से प्राप्त।

सहयोग द्वारा- अरुण कुमार भौंडेले, वंशज।

हृदयोद्गार

रचयिताः- स्व० श्रीनाथ त्रिवेदी 'कविजी'

जन्म — १६०० ई०

निर्वाण — १९६५ ई०

बिशेष — भक्त एवं लोकमान्य सिद्ध कवि।

अखिल विश्व में व्यापक तुम हो,
तुम्ही हो सृजन हार।
फिर क्या कारण अन्तस्तल का,
मिटता नही विकार।
मैं कुछ नही तुम्ही हो स्वामी,
उत्प्रेरक प्रभु अन्तर्यामी।
पाप-पुण्य की अकथ कहानी,
कहता बारम्बार।
तुम काड़ी सम छुपे हुए हो,
संघर्षण से प्रकट हुए हो,
निराकार—साकार।
काम, क्रोध, मद, लोभ सताते,
माया के दौरे क्यों आते ?
उद्दीपन हो देह-देह में,
मन्मथ उठे पुकार।
विनय करूँ श्री कृष्ण मुरारी,
पद पंकज पै हो वलिहारी।
शरण गहे की लाज राख दो,
तव साँचों उपकार।

सहयोग द्वारा — श्री शिव कान्त तथा श्रीपत त्रिवेदी।
आत्मज-स्व० श्री विष्णुकान्त त्रिवेदी

प्रीति

रचयिता—स्व० लक्ष्मी नारायण पथिक

जन्म:—अज्ञात

निर्वाण:—१८ जून १९८७ ई०

विशेष:—प्रकृति प्रेम एवं जीवन मूल्यों के समर्थक, सहज एवं सिद्ध कवि।

है प्रीति का वृक्ष हरा,
फूला फला भरा।
आशा धर्म लतायें जिसमें, ऐक्य सुबीज परा।
प्रीति सर्वदा अटल रहत है जीवित होय मरा॥
प्रीतिहि सर्वव्यापनी जग में, रीती परम्परा।
प्रीतिहि देवी, प्रीतिहि ईश्वर प्रीतिहि वसुन्धरा॥

बसंत

आली री ! शीतल सुगन्ध समीर चलै,
कोकिला किलोल कमनीय किलकंत है।
वृक्षन में, पक्षिन में, पुष्पन में, कण-कण में,
छन-छन में सुछावे सुछमता पगंत है।
करत बिहार स्वच्छन्द वन—उपवन में,
मधु लोभी मधुप अधिक हरषंत है।
श्याम नहिं आयौ न कारण जनायौ कछु,
आयो वसंत कैधौं आयौ बस अंत है।

सहयोग द्वारा—श्री राघवेन्द्र नारायण शर्मा

कवित्त-दोहा

रचयिता-स्व० श्री गौरी शंकर सुधाकर

(दतिया वासी महाकवि पद्माकर के वंशज)

जन्म-अज्ञात निर्वाण—सन् १९४५ ई०

※ ये महाराज गोविन्द सिंह की पटरानियों के दीक्षा गुरु, उत्कृष्ट कवि एवं विद्वान थे। अप्रकाशित ग्रंथ नीति-विलास।

विशेष:- दीवान काजी के समय में काजी के साथ उनका चित्र सम्पादक 'मधुप' ने देखा है। जो घनश्याम दास सैन के यहाँ था। कुंजन पुरा दतिया में आज भी उनका मकान विद्यमान है। ये रीति कालीन परम्परा के सिद्ध प्रसिद्ध कवि थे।

※ कवि कृत एक कवित्त की बानगी ※

दीने दान विप्रन अजाची कर दीने बहु,
कैयक सुमेर पेर बेर कर दीने है।
'सुधाकर" कलिंदी कूल कुंजन बृज वीथिन में,
मुहरें लुटाय मग परत न चीन्हे हैं।
नाच रंग विधि, विविध उमंग भर साजे।
तवला - सरंगी और गव पर बीने हैं।
वखत बुलंद भूप पारीछत नंद जू ने,
दान सोर माय तरे माय कर लीने हैं।

※ कवि पूर्वज कवि वंश के कुछ नाम ※

तिनके सुत कविवर प्रगट, मिहीलाल* गुन खान
दूजे अंबुज जानिये, सीलवान बुधवान।

※ नीति विलास रचना काल ※

इन्दु तत्त्व निधि शुक्रदृग. पूस कृष्णपख, तीज,
कवि लोगन की कृपा सों कियो ग्रंथ सुख बीज।

※ महाकवि पद्माकर के पुत्र का नाम।

सहयोग द्वारा—श्री गिरिराज शरण शुक्ल, एडवोकेट

छंद

रचयिता—स्व० श्री बलवीर सिंह फौजदार

जन्म—अज्ञात

निर्वाण—१९८३ ई०

विशेष—सुप्रसिद्ध भक्त कवि ।

(१)

घनश्याम ललामता राम की है,
सिय की छवि दामिनि की दुति कारिन ।
शुभ राम चरित्र पवित्र वयारि,
नऊँ रस वृष्टि है दृष्टि पसारिन
नव युक्ति तृणांकुर छन्दन की,
मृदु लोल—लता लहरे मन हारिन।
तुलसी कृति मानस है वरषा रितु
तापन-तापित जीवन तारिन, ।

(२)

वर भक्तन के मन मोर नचे
वटु दादुर मण्डलि शब्द उचारिनि।
वसुधा पर भक्ति सुधा भरिता, दरिनि
सरिता वही पाप पहारिनि ।
"बलवीर" सुधी तपो संतन जव,
महीतल, हीतल सीतल कारिनि ।
तुलसी कृति मानस है बरसा रितु.
तापन तापित जीवन तारिनि ।

सहयोग द्वारा—श्री केशव तिवारी ।

कवित्त

रचयिता— स्व० श्री गणेश प्रसाद बड़ेरिया

जन्म–१९२५ ई० के लगभग

निर्वाण–अज्ञात

बिशेष–प्रगतिशील, रीति शैली के कवि।

दाँतन सें लेत है चबाय जीव धारिन कों,
मानै न शंक सो निशंक अति भारी है।
धावैं मुखबाय के रिसाय मग लोगन पै,
वेठी लगाय आश माँस को अहारी हैं।
कहत गनेश लाट साहब तें सुन ऐसी,
ताहि समझ पठायौ लोकेन्द्रभूप भारी है।
पूरण प्रतापी श्री गोविन्द सिंह महाँराज,
हप्पो हॉक एक ही दुनाली घाल मारी हैं।

सहयोग द्वारा– श्री हरि बड़ैरिया।

कवित्त

रचयिता-स्व० पं० श्री भगवान दास सरवरिया 'द्विजदास'

जन्म—अज्ञात

निर्वाण— २६/१०/८४ ई०

विशेष— रामभक्ति धारा के समर्पित कवि

अमित भू मण्डल के भार से बड़े हैं शेष,
तिनसे महेश, फिर भूधर ललाम है ।
लंकाधिप गिनो जात बड़ौ कैलाश हूते,
जाने गिरि धार के अपूर्व कियो काम है।
रावण से प्रबल प्रतापी वानरेश बालि,
बालि हू से रामशर जन सुखधाम है ।
बाण बड़े बीर शासक श्री रामचन्द्र,
राम हू ते बड़ौ "द्विजदास" रामनाम है ।

सहयोग द्वारा- डॉ० एच० एम० तिवारी ।

हनुमत-वन्दना

रचयिता-स्व० भगवती दास (भगवंत) कविजू

जन्म- अज्ञात

निर्वाण= अज्ञात

विशेष=महाराज गोविन्द सिंह के समकालीन कवि।

धन्य धन्य रामदूत, पवन पूत करुणा के सिंधु,
बार - बार विनय हमारी चित्त धरियो।
हों तों अज्ञानी अभिमानी भाँति - भांतिन सों,
अंजनी के वीर मोरी सुधि ना विसरियो।
भनत भगवंत लीन्ही शरण तुम्हारी नाथ,
होकर दयालु कार्ज मेरे सिद्ध करियो।
दीनन हितकारी शुभकारी हनुमंत वीर,
श्री अवध के बिहारी सों हमारी अर्ज करियो।

सहयोग द्वारा- पंडित राम सेवक कविजू

छंद

रचयिता-स्व० पं० द्वारिका प्रसाद पाठक 'द्वारिकेश'

जन्म— सम्वत, १९५६ निर्वाण—२२-४-८६ ई०

प्रकाशित कृति - द्वारिकेश दर्शन।

विशेष—प्रकृति समाज राष्ट्र और भक्ति के समन्वय वादी कवि। महाकवि सुधाकर और पथिक जी के अभिन्न मित्र रहे, रतनगढ़ की माता के चरणों में ग्राम मरसेनी-बुजुर्ग में जन्म हुआ।

बेकारी में विवश है नर—नारी सत्संग।
जनसंख्या दस वर्ष में, डेबड़ी बड़ी असंग॥
बिना काम के घर रहें, पति-पतिनी वह दोय।
दिवस-निशा की सुधि नही, काम-विवश जब होय॥
आग फूस सत—संग से, अग्नि प्रज्ज्वलित होय॥
दोषारोपण है नही, सत — संगति फल होय।
नर-नारी धन्धे करें, प्रीति अलौकिक होय॥
द्वारिकेश पाठक कहें. जनसंख्या कम होय।

बात में वात बढ़ने पर रोग होता है।
बात की बात में मुख बन्द होता है॥
बात से सब काम किये जाते हैं।
बात न हो तो संसार में दीन कहे जाते है॥
आदि में वात होता हैं।
वाद में पित्त होता है॥

मानव ने मानव को देखा।
अपने को नहि देखा है॥
नीति पुनीत चाल चलने की।
रीति पुरानी चलता है॥
जो संचित निधि पूर्व काल में।
उसमें ही मन भरता है॥
द्वारिकेश कहें भेद की बातें।
भेद-छेद नहि भरता हैं॥

सहयोग द्वारा-श्री शिव कुमार पाठक।

छंद

(विप्र-वीर-परशुराम)

रचयिता-स्व० श्री शम्भु दयाल 'ब्रजेश'

जन्म अज्ञात
निर्वाण — ७-११-७६ ई०
शिक्षा — विशारद।
विशेष — सुप्रसिद्ध विचारक, देशभक्ति से परिपूर्ण भावनाओं के प्रसिद्ध कवि, अनेक प्रकाशित एवं अप्रकाशित ग्रँथों के प्रणेता ।

मनाते हैं तुम्हारा जन्मदिन भगवान भृगुनन्दन,
करें दर्शन रुचिर, अतएव है आह्वान भृगुनन्दन।
पिता आदेश पालन से जननि-बध-अघ नहीं व्यापा,
जगादो देश-संतति में स्वयं सा ज्ञान भृगुनन्दन।
जननि वैधव्य-रोदन से, द्रवित होकर सहसभुजको,
सकुल मारा, मिलाया धूल में अभिमान भृगुनन्दन।
निबल के रक्त से जो हाथ रंगते थे दुराचारी,
उन्हें बधकर, किया विप्रों को धरणी दान भृगुनन्दन।
पले आस्तीन में जो साँप, पय पीकर गरल उगलें,
सुरक्षित रह, कुचल दे फण, दो अमृतदान भृगुनन्दन।
मिटाने तक्ष की चालें, बनादो हमको जन्मेजय,
हिलादें इन्द्र का आसन, लहें सन्मान भृगुनन्दन।
सभी हैं राम राज्येच्छुक, करो तुम भूमिका पूरी,
बनेंगे राम जन-जन, तुम करो धनु दान भृगुनन्दन।
तुम्हारे से गुणी, त्यागी, तपस्वी शौर्य, बलशाली,
तथा हों देश सेवक, दो यही बरदान भृगुनन्दन।

सहयोग द्वारा - श्री अटल बिहारी श्रीवास्तव

युवकों से!

रचयिताः- स्व० श्री मूलचन्द्र द्विवेदी 'मूलेन्द्र'

जन्म— सम्वत् १९८० माघ शुक्ल ४ शनिवार।

निर्वाण- अज्ञात

विशेष- देश भक्ति एवं जीवन मूल्यों के उत्प्रेरक सिद्ध कवि।

जाग उठो वीरो जाग, हो जाओ सचेत अब,
हो गई है खंड-खंड मातृभूमि देखो तुम।
भाई आज भाई के करों से कत्ल हो रहे हैं,
पूर्ण महिमंडल में जाके घूम देखो तुम।
हिम्मत बहादुर बनो धर्म की कसम शीघ्र,
देश रक्षा में मस्त होके झूम देखो तुम।
कामिनी का चुम्बन किया है मुख बार-बार,
एक बार तो कटार धार चूम देखो तुम।
बड़ों का अदब छोड़ बेअदब न बनो कभी,
धर्म और शर्म को सलाम कर बैठो ना।
हमेशा तुम्हारी ओर अंगुली उठावें लोग,
ऐसा विचित्र कोई काम कर बैंठो ना।
सीने पर चोट वज्र बाणों की सहना छोड़,
आज फूल से अधिक मुलाम बन बैंठो ना।
नव युवको! धर्म की कसम है तुम्हें देखो भूल,-
कामिनी के केवल गुलाम बन बैठो ना।

सहयोग द्वारा- श्री शीतल प्रसाद दुबे।

गीत

रचयिता—स्व० श्री शान्ति स्वरुप 'सरोज'

जन्म—सम्वत २०१५ निर्वाण- २६ मार्च १९८८

विशेष-अनेक प्रकाशित काव्य कृतियाँ एवं अनेक अप्रकाशित रचनाएँ। गांधीवादी, समाजवादी, एवं प्रगतिवादी विचार धारा के सक्षम सिद्ध कवि।

मैंने न कभी स्वीकार किया,
तुम बन्दी हो, प्राचीरों में।
मैंने तो तुमको, श्रमिकों के,
श्रम-कण में ढलते देखा है॥
आरम्भ रश्मियों में तुम ही।
'सन्देश' कर्म का बिखराते।
तुम ही पावस, मधुमास बने,
अभिनव हरीतिमा उपजाते।
मैंने न कभी देखा तुमको,
प्रासादों में, आडम्बर में।
मैंने तो तुमको, कृषकों की,
आशा में पलते देखा है॥
श्रम-कण में ढलते देखा है॥
समवेत स्वरों के लक्ष्य तुम्हीं,
तुम ही उत्साह, उड़ानों में।
तुम ही सौरभ,सुषमा तुम ही,
सुमनों की मधु मुसकानों में॥
प्रतिभाजीवी के चिन्तन में,
विवशों के उत्कंठित मन में,
मेरे आंगन में शिशु बनकर,
घुटनों पर चलते, देखा है॥
श्रम-कण में ढलते देखा है॥

सहयोग द्वारा —रामावतार शर्मा 'सुमन'

नारी तेरे रूप अनेक

रचयिता- स्व० सुन्दर लाल भट्ट

जन्म—अज्ञात निर्वाण -अक्टूबर१९८६ ई०

रिटायर्ड प्रधान आरक्षक, पुलिस विभाग

विशेष-सुधारवादो एवं प्रगतिवादी विचार धारा के समर्थ कवि।

दुर्गे दुर्गति नाशिनि
काली काल विनाशिनि।
उमा अमा तम हारी,
ब्रह्माणी रखवारी।
राधा ! बाधा नाशक,
सीता ! धैर्य प्रकाशक।
गायत्री ! शिव शक्ति,
शारदा देती बुद्धि—विवेक।
नारी तेरे रूप अनेक (१)

दुर्गति—दुर्ग बचावन हारी।
दुर्गावति बलिहारी।
पूनम का बन चांद,
चाँद बीबी ने प्रभा निखारी।
दानी बनी अहिल्याबाई,
वीर प्रसूतो जीजाबाई।
लक्ष्मी कुशल कलारण,
इन्द्रा राजनीति में एक।
नारी तेरे रूप अनेक (२)

सहयोग द्वारा -श्री अवनीश कुमार भट्ट।

पढ़ लिखकर प्रतिकूल हो गई

रचयिता- स्व० आचार्य दुर्गा प्रसाद 'दुर्गेश'

जन्म—सवंत् १९७४ निर्वाण—३० अगस्त १९७३ ई०

विशेष—सामाजिक स्वातन्त्र्य तथा समानता के प्रवंतक प्रगतिवादी, प्रसिद्ध कवि। अनेक काव्य कृतियों के प्रणेता।

पढ़ा–लिखाकर सभ्य बनाया, लेकिन बुद्धिस्थूल हो गई।
कारों में अब घूमा करती, विस्कुट, चाय हमेशा चलती।
तड़क-भड़क की इस दुनिया में,हर दिल का वह शूल हो गई।
पढ़ लिखकर.........................

क्रीम-पाउडर लगा-लगाकर, अपने मुख को सजा–सजा कर।
व्यंग्य भरे सुन्दर शब्दों में, कहती प्रियतम भूल हो गई।
पढ़ लिखकर.........................

नेहरू ने सरकार बनाई, नारी को आजाद कराई।
सोशल वैलफ़ेयर में आकर, नारी अब निर्मूल हो गई।
पढ़ लिखकर.........................

मैंने कुर्सी थी बनवाई, किन्तु कहूँ क्या आफत आई ?
नारी उस पर बैठ न पाई, वह कुर्सी स्टूल हो गई।
पढ़ लिखकर.........................

मैं समझा था इसको अबला, लगी बजाने अब वह तबला।
जाकर बैठी पहले शो में, पिक्चर में मशगूल हो गई।
पढ़ लिखकर.........................

मैंने उसको जब समझाया, न्यू फैशन को गलत बताया।
'कवि' को दकिया नूशी कहकर, उसकी आज्ञा रूल हो गई।
पढ़ लिखकर प्रतिकूल हो गई।

सहयोग द्वारा —श्री कमल किशोर शर्मा

गजब की भीड़ है भाई

रचयिता— स्व० श्री वेद प्रकाश शर्मा

जन्म—अज्ञात. निर्वाण २५-१०-८८ ई०
विशेष--श्रेष्ठ व्यंग्यकार, गीतकार, सिद्ध कवि,
एवं सफल संयोजक के रुप में विश्रुत रहे।

✳

गजब की भीड़ है भाई, समझ का दम घुटा जाता।
कतारों पर कटारें हैं, प्रगति का भ्रम मिटा जाता।
उठा कर आँख तो देखो, नया मेहमान आता है।
वो माँ की छातियों को चूस, हिन्दुस्तान आता है।

जिधर देखो उधर ही रोशनी पर मुर्दनी छाई।
न जाने क्यों उपज की देश में इक बाढ़ सी आई?
कली अंगार बन दहकी, फफोले फूल के ऊपर।
अँगनियाँ घिन उगलती हैं, सिसकते पालने दिन भर।

न माखन औ मलाई है, न सोहर ही थिरकता है।
अजब खामोशियाँ बैठी, जमाना भर सिसकता है।
न इनको लाड़ मिल पाया, चुरू भर प्यार को तरसे।
न इनपर नेह ही बरसा, बिचारे नैन भर बरसे।

न तन पर ही झंगुलियां है, न बौरीना न रुनझुनियाँ।
न कोई गोद खाली हैं, न मचले ले चलो कनियाँ।
न शिक्षा दे सकी वरदान, जीना भी नहीं आया।
मरे भी तो मुशीवत में, न तन को भी कफन पाया।

इसी से कह रहा हूँ, भीड़ को रोको मेरे भाई।
जमाने का तकाजा हैं, तरीका मोड़ दो भाई।
खुशी को देश की फिरसे, चहकने दो मेरे भाई।
प्रगति की हर गली को, फिर महकने दो मेरे भाई।

सहयोग द्वारा— श्री, नवनीत शर्मा

ग़ज़ल

रचयिता-स्व० किशोरी शरण मिश्रा 'रुस्वा'

शिक्षा — हाईस्कूल

जन्म—१४-१-१९३८ ई०

निर्वाण—२७-१०-१९८८ ई०

विशेष—सशक्त विचारक, व्यंग्यकार एवं ध्वनि प्रवर्तक मनीषी कवि।

पूंछा जो उनसे हाल तो धीरे से मुस्कराये,
कहने लगे वो हमसे वायदे पै तुम न आये।
मेरे बन्धु-बाँधवों ने क्या-क्या न सितम ढाये,
अच्छे सुलूक उनको न जाने क्यों न भाये?
सुनते रहे वो दर्द मेरा ध्यान से मगर,
आँखों से उनकी लेकिन आँसू भी दो न आये।
शमशान तक हैं सीमित दुनिया के रिश्ते-नाते,
ले जायेंगे जो अर्थी फकत कंधे पै उठाये।
दुश्मन बनेंगे आपके पंडित औ मौलवी,
पाखंडियों के परदे तुमने अगर उठाये।
थाली में जिसमें खाया ठुकरा दिया उसी को,
दुनिया में हमने 'रुस्वा' ऐसे भी लोग पाये।

॥ क़ता ॥

दिल को बेचैन बनाती है तेरी याद अक्सर,
कितनी रातों को गुजारा है तुझे क्या मालूम?
रात के सन्नाटे में काटे आलमे तन्हाई में,
तेरी जुल्फों को संवारा है तुझे क्या मालूम?

सहयोग द्वारा— श्री अनिल कुमार मिश्र

लपकनू लालटैन

अप्रकाशित कृति, "ज्ञानगुदगुदी" से

रचयिता-स्व० चतुर्भुज दीक्षित 'चतुरेश'

जन्म सन् १९०९ ई०

निर्वाण—१ मार्च १९८४ ई०

विशेष—प्रकाशित कृतियाँ - हँसी का फौबारा, चटनी, रस
गुल्ला, चीन की चैं चैं, चीन की चटक-मट
तथा अनेक अप्रकाशित रचनायें। हास्य
रससिद्ध कवि के साथ दर्शन, ज्ञान, भ
एवं ज्ञानमयी धारा के विशिष्ट रचनाकार।

अपने अंदर का अंधकार तू मेंट लपकनू लाल
कुछ, दिन की दीप्ति देखती जा तम-तोम तमकनू लाल
जग ने तुझ में भर तेल दिया, बाती का सुन्दर मेल कि
तू फिर भी लपक उठी लोलुप, ये कैसा बेढव खेल कि
ज्योतिर्मय हो सुस्थिर हो जा, ओ अरी! भभकनू लाल

सहयोग द्वारा - श्री लक्ष्मी नारायण दीक्षित, मुस्कान म

छन्द

रचयिता—स्व० काशी प्रसाद 'भट्ट'

जन्म—अज्ञात निर्वाण= अज्ञात

विशेष—महाराज गोविंद सिंह के कृपा पात्र, भक्त एवं मनीषी कवि।

इत राम अवधेश, उत कृष्ण मथुरेश
इतै कुल है दिनेश, उतै चन्द्रवंश धाम।
इतै तारी रिषि नारी, उतै कूबरी बिचारी,
इतै धनु सरधारी, उतै वंशरी के ग्राम
कवि 'काशी' मनभाषी, जुग चरन निवासी
भज राम कृष्ण,राम कृष्ण, राम कृष्णराम।

सहयोग द्वारा—पं० श्री सीताराम भट्ट।

गीत

रचयिता- स्व० डा० हरिदास द्विवेदी 'शलभ'

एम० ए०, पी० एच० डी०

जन्म–अज्ञात निर्वाण १–५–१९८८ ई०

विशेष–अनेक कृतियों के रचयिता, स्फुट गीतों के प्रणेता, समर्थ, गीतकार, सामाजिक उत्थान के कवि, अनेक शिक्षक संस्थाओं के संस्थापक, गांधीवादी विचार धारा के अनुयायी थी।

मावस की अँधियारी में क्यों विचलित होता मन ?
पूनम का चंदा आयेगा किरणों का दान।
तम की कारा में बन्दी है सचमुच ही उजियाला।
जैसे साकी के अधरों पर पहुँच गया हो प्याला।
मदिरालय की मदहोशी में जागेगी सिहरन।
मावस की अँधियारी में क्यों विचलित होता मन।
झंझा मचल रही है सचमुच मानवता के घर में।
पशुता नग्न नृत्य करती है माझी के अन्तर में।
सत्य अहिंसा आयेगी ले कुसुमित नव नन्दन।
मावस की अँधियारी में क्यों विचलित होता मन ?
आशाओं को कुण्ठाओं में क्यों परिणित करते हो ?
कर्मवीर होकर क्या तुम कर्तव्यों से डरते हो।
कभी चेतना आयेगी ले रंगभरी चितवन।
मावस की अँधियारी में क्यों विचलित होता मन ?
बापू के आदर्श लिये हम व्यर्थ उन्हें बदनाम कर रहे।
नारों का बोझा ढो - ढोकर पशुओं जैसे काम कर रहे।
कभी क्रान्ति की लहर उठेगी कब तक पनपेगा शोषण ?
मावस की अँधियारी में क्यों विचलित होता मन ?

सहयोग द्वारा – श्री राम नारायण पांचाल, शिक्षक

पं० वासुदेव गोस्वामी

जन्म-दतिया, बैशाख कृष्ण ८, सम्वत् १९७१ विक्रमी, (१८-४-१९१४ ई०), प्रकाशित ग्रन्थ-भक्त कवि व्यास जो (शोध), विद्रोही बानपुर (इतिहास),त्रिवेणी के संगम (विवध कविता संग्रह) उड़ते छींटे (हास्य व्यंग्य कविता संग्रह) बुद्धि के ठेकेदार (व्यंग्य निवन्ध), केनोपषिद् पद्यानुवाद, दार्शमिक वेतन तालिका आदि। स्थापना-'हरित्रयी' बर्ग के प्रवर्तक।

पुरस्कार व सम्मान-उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान लखनऊ, विन्ध्य प्रदेश, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, राजस्थान सरकार से पुरस्कृत एवं कई संस्थाओं द्वारा अभिनंदित।

सरस्वती वन्दना

ध्यान धरों जब ही तब ही हँसि कें हिय हंस विहारती आई
माल लएँ जप की कर में प्रिय पुस्तक पाठ की धारती आई।
बीनहिं तें बसुदेव के कारन तारन कौं झनकारती आई।
ज्ञान उचारती भक्ति प्रचारती काज सँभारतीभारती आई।।
माल में मंगल मंत्र मनोगत ब्रह्म के लोक तें नाकत आ गई।
पुस्तक में बसुदेव की छाप लगाय कै छन्द कौं टांकत आ गई।
साधक वृन्द उपस्थित ज्ञान कृपा भरी दृष्टि सों झाँकत आ गई।
बंदना पूरी नही कर पाये सरस्वती हंस की हाँकत आ गई।।

भारत माता

जा के पग पायलें परी हैं रतनाकर की,
बंग गुजरातकल कंकन करति या।
विन्ध्याचल जासु करधौनी अति नौनी लसै,
वासुदेव मुकुट हिमालय धरति या।
सारी जरतारी बनी बनक बनारस की,
गंगा सी किनारी धारी शोर सरबति या।
दिल्ली दिपै बेंदी जाकी कासमीर सीस फूल,
बृन्दावन बेसर गरे कौ हार दतिया।

श्री हरिहर प्रसाद शर्मा 'हरिकेश'

जन्म सं० १९६७ वि०। रचनाएँ (१) काल्पनिक कुञ्ज (२) मीरा (३) सनकुआ महात्म्य (४) अनेक स्फुट रचनायें (५) विद्वान, प्रतिभा सम्पन्न, सिद्ध कवि (६) समर्पित साहित्यकार।

मीरा खंडकाव्य के अंश

जनमत रोयौ तब पालना में पौढ़यो जाला,
हिय हुलसाय हाथ-हाथ हला-हली होत।
ज्वानी में गुमान अभिमान आन बान भरो,
तान कें कमान नैन-बान घला-घली होत।
हो गयौ निराश जब झंडा झुक्यो वृद्ध भयो,
सोच-सोच एक दूसरे में भला-भली होत।
चेत तन चित्त चाव चौगुनों चढ़त जात,
चैन बिना चार ही दिना में चला-चली होत॥

जनम लियौ है जानै अवसि मरैगो ताहि
किलक-किलक मरी मारी दुलरावौ क्यों?
आँसू आह शाप भरी दौलत सम्हालता तूँ,
यहीं रह जाती है न तेरे साथ जावै क्यों?
नंगा छिपा रेशमी लिबास में भी फेर नंगा,
कवि 'हरिकेश' मृग नीर हेत धावै क्यों?
स्वारथ संजोयौ सुख सपने की नींद खोयौ,
रोयौ धोयौ खायौ तऊ जगत कहावै क्यों?

डॉ० मुंशी लाल पटैरिया 'शशिधर'

एम० ए०, (हिन्दी संस्कृत) साहित्य रत्न, विद्या वाचस्पति

जन्म १-६-१९१३, अवकाश प्राप्त—प्राध्यापक (कवि, कहानीकार, उपन्यासकार) रचनायें-बापूचरितामृत, पन्ना धाय जय-वंग भूमि, वैश्यायन, बुन्देली रामायन आदि।

१० काव्यो का प्रकाशन, अनेक स्फुट कविताओं के सृजक। बुन्देली रामायण पर सा० वा० रामचरण हयारन 'मित्र" पुरस्कार ५००० रु० का प्राप्त। सर्मपित कवि एवं सिद्ध साहित्यकार।

दतिया के दरसन कर लेओ

जाँ ताँ कृतिम प्राकृतिक दोउ, छबियाँ झिलमिल रूप दिखा रई।
चारउँ ओर सरोवर सुन्दर, परबत और पहड़ियाँ भा रई।
मन्दिर बने बिसाल नगर में, सिल्प कला छवि दृग भर लेओ।
दतिया के दरसन कर ले ओ॥

पंचकव है सिद्ध टौरिया, तन बल जाँचत उड़नु टौरिया।
संत बसत है चिरइटौरिया, गुप्तेसुर में गुप्त खोरिया।
ऊँचे तन मन के सरूप सब, जीवन कौं ऊँचौ कर लेओ।
दतिया के दरसन कर लेओ॥

पूरब में बालाजी मंदिर, पच्छिम में सोनागिरि सुन्दर।
उत्तर में सुनकुआ मनोहर, दक्खिन पीताम्बरा सदन वर।
काँ जानें दतिया तज बहार, चारउ धाम हेंइ कर लेओ।
दतिया के दरसन कर लेओ॥

पीताम्बरा देवी मठ कीरत, जग छा गई सबइ जस गायें।
धन पद इन्दर हिआ आन कें, तज अभिमान सीस खों नायें।
सिरधा सुमन चढ़ा तपसी थल, ससिधर जनम सफल कर लेओ।
दतिया के दरसन कर लेओ॥

श्री नारायण दास श्रीवास्तव

जन्म-ग्राम रिछरा जिला दतिया

दास कवि का जन्म श्री संवत १९७२ भाद्र माह शुक्ल ३ गुरुवार को हुआ था। यह हिन्दी व उर्दू सहित मेट्रिक पास इलाहाबाद से हैं ये शिक्षक थे। ये आजकल पेन्शनर है।

कवित्त जगदम्बा का

आदि शक्ति जगदम्बा, शेरपेसवारी करें।
तेगा तलवार लिये, काल की निशानी हैं॥
जोगनी हैं सभी साथ, सेवा में हाजिर रहें।
धारें विकराल रूप, विकट दिखानी हैं॥
काली महाकाली माई, इनके अनेकों रूप।
किसी ने न जान पाया, जगकी भवानो है॥
कहते है दासकवि, महाँमाई पूजनीय।
वड़े वड़े मुनियों ने, महिमा न जानो हैं॥

कवित्त काल देव का

काल देव वड़ा वली, डरे न किसी से नेक।
जीव के निकट जाप, सजग कराता है॥
प्रथम इशारे पर, दांतों को उखाड़ देत।
अभी चेत जाओ जीव, नीति को बताता है॥
दूसरे इशारे पर, कानों से बहरा करे।
फिर भी न चेता जीव, आँधरा बनाता है॥
कहते हैं दास कवि, तीसरे इशारे पर।
घर से ले जाय काल, जीव को सताता है॥

श्री हरिमोहन लाल श्रीवास्तव

जन्म—१३ अगस्त १९१७। जाने माने शिक्षक और साहित्यकार। अनेक कृतियाँ —वीरांगना लक्ष्मीबाई, रासो, दतिया दर्शन, स्वतंत्रता के सेनानी, श्री बालाजी हनुमत् हुंकार, मनन मंजूषा आदि।

भूख और भय (गद्यकाव्य)

जीवन के चौगान में जब मैं अंकुर के रूप में उदित हुआ, धरती और आकाश मेरे ऊपर वरदानों की वर्षा करने के लिये आकुल हुए। विहगों का कलरव मेरे कानों में संगीत घोल कर मुझे विकास और उड़ान का आमंत्रण दे रहा था। सूर्य और चन्द्र एक जीवन के लिये नहीं असंख्य जीवनों के लिये दीप जलाने हेतु मुझे प्रेरित कर रहे थे।

तभी मेरे जीवन की नन्हीं कोंपलों को दो भयंकर रोगों के—भूख और भय के जीवाणुओं ने घेर लिया। विविध वेश बदल कर ये दोनों मुझे आक्रांत किये हुये हैं। पेट या पैसे की बल या कुर्सी की भूख ने सभी को जकड़ रखा है। मैं ही नहीं सारा संसार भूखा है। भूख है, जो शांत होने का नाम नहीं लेती-बेहद भटका कर बस क्रोध बढ़ाती है।

भूख की भाँति भय भी जीव-मात्र में व्याप्त है। कारण, सब ओर दुःख है, और है दुख दूर करने के ज्ञान की कमी। चोट, रोग और मौत का भय, समाज, राज्य और न्याय का भय, और इनसे भी ऊपर कुछ को कातर बनाने के लिये है धर्म या ईश्वर का भय! भयभीत राष्ट्र शस्त्रों से लैस होकर डराते हैं। किसी ठौर कुछ निरंकुश कहते हैं—ईश्वर हैं वहाँ-दुनिया से डरो। भूख और भय हमें-तुम्हें पनपने न देंगे।

प्रेम

रवि से लिये विदा संध्या आरक्तमयी जब होती।
विमल चन्द्र के स्वागत हित रजनी जब हार पिरोती॥
या निज विरह-वेदना से ही तारों के मिस रोती।
तभी क्षितिज के सूनेपन में दृष्टि हमारी खोती॥
उस एकान्त पटल में ही होना है इनको लीन।
जग-नयनों के तारे देखें होकर प्रेम विलीन॥

श्री माधौ सिंह श्रीवास्तव

जन्म-तिथि- २८ अगस्त सन् १९१८, ई०

शिक्षा—मेट्रिक, कृषि डिप्लोमा

पता-तिगैलिया, होली पुरा दतिया

अधीक्षक, शासकीय कृषि क्षेत्र, दतिया (म०प्र०)

विशेष —काव्य सृजन में सहज अभिरुचि, व्यंग्यकार एवं सुधारवादी प्रवृत्ति के सशक्त साहित्यकार।

सस्पेन्शन

सस्पैन्शन वरदान है, हो खाने को पास,
घर बैठे वेतन मिले, मिले पूर्ण अवकाश।
मिले पूर्ण अवकाश, मास दस-पांच विताके,
होंगे पुनः बहाल, अंत में वार्निंग पा के।
बिन सोचे समझे किया, अफसर मूढ़ महान,
दंड समझ मुझको दिया, सस्पैन्शन वरदान।

BVBSSMV

प्रो० अज़ीज उल्ला कुरेशी रिटायर्ड

जन्म तिथि—१९ दिसम्बर १९१८ ई०

शिक्षा-एम० ए०, बी० टी०, एम० एड०

ग़ज़ल

मज़ा मिल भी गया बिल फ़र्ज़ तुमको आबे हेवां का ,
तो ये समझो कि रोना ही रहेगा हश्र तक जां का ।
न ये तक़दीर का कायल, न ये तदबीर का मायल,
अजब आलम है मेरे इस जुनूँने फितना सामाँ का ।
जुनूँ कुर्बा हुआ जिन धज्जियों के गिर्द फिर-फिर कर,
बो एक बिखरा हुआ शीराज़ा है मेरे गिरेबां का।
कहीं पर पज़मुरदा खातिर गुल,कहीं अफसुरदा दिल बुलबुल,
यही है गुलिस्ताँ हमदम तो क्या कहना गुलिस्ताँ का।
किये तो जा रहे हो हाँ मेरी हर बात पर लेकिन ,
समझते हो निभाना किस क़दर दुशबार है हां का।
रहीने मिन्नते सैयाद है हर इक नपूस मेरा ,
बनाया मुझको खूगर तल्ख़ ये आजारे जिन्दां का।
'अज़ीज' उम्मीदे हमदर्दी किसी खुशहाल से नाहक ,
परेशां हाल से कीजे बयां हाले परीशाँ का।

---

१. बिल फर्ज-मान लेना
२. आवे हेवां-आबे हयात-पानी का चश्मा समरता
३. कितना सामां-अशांति फैलाने वाला
४- जुँनू कुर्बां-पागलपन, निसार करना(समर्पण)
५. शीराजा-जमीं हुई चीज को विखेर देना।
६. पज मुर्दा-मुरझाया हुआ
७- अपूसुरदादिल-रंजीदा-मुरझाया हुआ
८. नपूस-हर साँस
९. खूगर-आदी होना

628

BVBSSMV

श्री राधामोहन नगार्च

जन्म—२ फरवरी सन १९३३ ई०

शिक्षा—मैट्रिक, साहित्य बिशारद,

व्यवसाय-प्रधान अध्यापक

विशेष—साहित्य सेवी, संगीतज्ञ, प्रकृति प्रेमी और मानवता वादी विचारक कवि।

सम्पर्क—शिवगिरि मन्दिर के पास, दतिया

गीत

प्रिये ! तुम क्यों जाती हो पार ?
तुम्हारे प्रथम मिलन का प्यार,
तुम्हारे बचनों का व्यबहार,
पालता रहा मुझे दिन रैन,
तुम्हारे अन्तर उर का प्यार,
साल सा है मुझको हर बार,
प्रिये ! तुम क्यों जाती हो पार ?

कुसुम खिलने भी ना पाया।
"कली" क्यों पहले मुरझाई ?

शमा क्यों पहले ही बुझ गई।
शलम की लगन न मिट पाई।
तुम्हारा कैसा यह उपकार ?

प्रिये ! तुम क्यों जाती हो पार ?

जो चाहा गाऊँ मै संगीत,
सुनादूँ तुमको अन्तिम गीत,
मगर कह भी नहि सका अतीत'
सुनादो प्रिय को अन्तिम गीत,
टूटा बीणा का तार,
प्रिये ! तुम क्यों जाती हो पार ?

श्रीमती राजकुमारी व्यास

जन्म तिथि–१५-१-१९२४ ई०

शिक्षा-एम० ए० (हिन्दी) साहित्यरत्न, उच्च श्रेणी शिक्षका के पद से १९८२ ई० में सेवा निवृत।

पता–मुख्य डाक घर के पीछे, व्यास कुटीर, दतिया (म०प्र०]

विशेष-मानव जीवन की कसक को सँजोये काव्याभिव्यक्ति में अभिरूचि।

जिन्दगी

जीवन भर दौड़-धूप कर, जिस स्वप्न को सजोया।
वर्तमान की पकड़ में अपने भूत, भविष्य को भी खोया।
स्मृति के छोर को कहाँ से पकड़ मैं ?
जीवन-खण्ड का कोई टुकड़ा अनजाने ही अलग हो गया है।
तभी तो भीतर ही भीतर, तप जाता है कुछ—
कितना मुश्किल है अपने वर्तमान में खड़े रह पाना।
स्मरण के विनमय में वे ध्यान रहकर भी
औपचारिकता की पगडंडी पर चलपाना
जीवन के दुखते स्थलों पर, अपनों की सावधान उंगलियाँ-उंगलियाँ

घूम फिर कर हालत की, पपडियों पर सह पाना
आज के प्रतिमानों के संदर्भो के आँचल में
यह जीवन-प्रवाह चल रहा है।
आमने-सामने के, चेहरे सफेद नकाब से ढके हैं
और हवा भी सहमी–सहमी आतंकित है
इसलिये जिन्दगी-जीवन धारा से बंचित है
कितना कठिन है समय की मनहूसियत में रह पाना
और फिर मन आत्मा के प्रतिकूल सारे बैपरीत्य को पचा पाना।
इसलिये सच ही कहयूं तो जिन्दगी खाली-खाली सी है
और अपनी देहरी पर अनजानी सी है।

श्री रामप्रसाद कटारे

शिक्षा—हाई स्कूल, साहित्य रत्न।

व्यवसाय दुकानदारी- सर्राफ

जन्म तिथि—१९ अक्टूबर सन् १९२५ ई०

अध्यक्ष सर्राफ एसोशियेशन।

विशेषः उन्मुक्त हास्य वैशिष्ट्य युक्त व्यक्तित्व, जन सामान्य के प्रति सहृदय भाव उपेत सृजन में रुचि।

गीत

जीवन में बस दुःख ही दुःख है।

फूल स्वयं बन जाते काँटे,
अपने और पराये नाते,
आशाओं के आसमान से देख
क्षितिज से दूर न सुख है।
जीवन में बस दुःख ही दुःख है।

जीवन है अभिशाप करें क्या?
गति विधियों की माप करें क्या?
व्यर्थ भटकना है जीवन भर,
लक्ष्य सदा से ही अभिमुख है।
जीवन में बस दुःख ही दुःख है।

तुझे खोजता रहा सदा रे,
हारे चरण मरण के द्वारे।
कल कल, छल छल बहता जीवन,
कहता रे संघर्ष प्रमुख है।
जीवन में बस दुःख ही दुःख है।

श्री शशि त्रिपाठी

जन्म तिथि—२५ सितम्बर १९२६ ई०

विशेष—काव्य सृजन में सहज अभिरुचि, मानवतावादी कवि।

शिक्षा—एम० ए०.-एल-एल० बी०, विशारद, कोविद।

गीत

अभी अभी भरे नयन,
अनजानी सुधियों का आहत सा आगमन।
अन्तस की पुलक पीर, उमड़ी भर सहज नीर
उठा उद्‌गम के युगल तीर, तरल शून्य सी अधीर।
अभी-अभी झुकी घटा, अभी-अभी झुका गगन,
करुणा के द्वार पर करने शत-शत नमन।
अभी-अभी भरे नयन।

मंदिर में सिमिट आए अनबोले चक्रवात,
एक दीप ज्योतिर्मय, पीड़ा से भरी रात।
अवश, अथक, अन्तहीन, अभी-अभी रुका पवन,
आँसू से हो रहा, स्वासों का आचमन।
अभी-अभी भरे नयन।

सागर की एक बूँद स्वत्व अनन्तता।
सृष्टि में समा गई रूप की विभिन्नता।
आदि से असीम का अभी-अभी हुआ मिलन,
बिन गाये गीत सा बिखर-बिखर गया सपन।
अभी-अभी भरे नयन।

श्री हर प्रसाद रायकवार 'जलेश'

जन्म तिथि—३०-९-१९२६ ई०

शिक्षा—राष्ट्र भाषा, रत्न।

सर्व प्रथम रचना सुकवि कानपुर में १९४७ में प्रकाशित।

प्रकाशित पुस्तकें— कहार उत्थान (२) व्यंग्य बल्लरी (३) युगल पच्चीसी (४) दुधारा (५) मदनमाल

विशेष—समर्पित साहित्यकार एवं भारतीय संस्कृति के पोषक सुकवि।

"कूप-मण्डूक"

मैंने तो दुनिया छानी है,
मुझे कूप मण्डूक न समझो।
बरसों साथ रहा हंसो का,
वासर अंध उलूक न समझो।

पद-पदवी पर पिता पुत्र को,
द्वन्द युद्ध में पड़ते देखा।
जर-जोरू जमीन की खातिर,
जग-वालों को लड़ते देखा।
छुपी हुई पिस्तौल पश्चिमी,
हूँ देशी बन्दूक न समझो। मैंने०

अपना देश बहुत ही ऊँचा,
बतला रहे गली औ कूचा।
खलक सिंह को कहते देखा;
हुई तरक्की कहता बूँचा॥
मैंने तृप्ति गुलाम बनाली,
वह कंगाली भूख न समझो॥ मैंने०

श्री अवध किशोर श्रीवास्तव

'अवधेश'

जन्म तिथि—१ अक्टूबर १६२८ ई०

शिक्षा — एम० ए०, साहित्य रत्न आयुर्वेद रत्न (रजि० वैद्य)

प्रकाशित रचनायें—श्रमणा, शवरी के राम (महाकाव्य), ब्रज नन्दन बुन्देल भारती, कविता बाला, चित्रगुप्त नाटक, नाटिका बाटिका, समय सुहावन, लोकगीत आदि।

विशेष -मानस प्रवचनकार, कवि, पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित कला मंच के संस्थापक,काव्य कला परिषद के अध्यक्ष आदि अनेक संस्थाओं के अध्यक्ष, मंत्री, संचालक।

संपर्क -श्याम कुटीर, रिछरा फाटक, दतिया।

बुन्देली-फाग

हम तौ बुन्देली के कवि है, सिरस सुमन है पवि है।
दद्दा थे दक्षिणायणी सूरज हम उत्तरायण रवि है॥
पूत नर्मदा के पाथर है सरल सहज है शिव है।
चतुरन के चाकर है चोंखे द्वेष दम्भ को दवि है।
मात शारदा के सुत वारे, ब्रह्म किरण की छवि है।

श्री राम और यमुना

परसे पद पंकज ज्यों प्रभु के कृत कृत्य भई पग पावरी ह्वै गइ,
जब न्हात मैं गात छुओं रघुनाथ को सूर सुता अति बावरी ह्वै गइ।
अचबे हित पानि में पानि लियो अधरान लगी सत भाँवरी ह्वै गइ,
जुग भेतहि तें जमुना अवधेश के साँवरे रंग में साँवरी ह्वै गइ।

श्री राम भरोसे चतुर्वेदी 'शृंग'

जन्म— सन् १६२८ ई०

प्रकाशित पुस्तक-बहार, मानस तरंग,

संपर्क—बिरथरिया भवन, भरतगढ़, दतिया (म० प्र०)

विशेष-दार्शनिक विचारधारा के समर्थक व्यवहारवादी कवि

कलियुग वर्णन

कलियुग तेरी महिमा अपार है अपार।
सतयुग से आयु तेरी एक बटा चार।
चार लाख अरु बत्तीस हजार। कलियुग
अभी कलियुग बालक है, फिरभी इतना घालक है
जब आयेगी कलियुग की जवानी की बहार।
तब दुनिया में बढ़ेगा अति अत्याचार। कलियुग
कलि माने मशीन युग जाने जमाना।
कलि युग है मशीन ही का जमाना।
हर काम मशीन से होता है।
मशीन बिन मानव रोता है।
मशीनों का खूब हो रहा आविष्कार। कलियुग
बिजली, इंजन, मोटर, रेल, जहाज,
तार, फोन, ग्रामोफोन, टी. बी. की आवाज
सिनेमा सुनते देखते चित्र विचित्र।
रेडियो, टी० वी० से गाना, खबरें सुनते सर्वत्र।
दुनिया में खबरें पहुंचाओ मिनटों में
वस्तुओं को भी मंगवाओ घंटों में
दुनियाँ का भी भ्रमण करलो दिन दो चार। कलियुग

श्री रणवीर सिंह चौहान

जन्म तिथि–१ जनवरी १९२७ ई०

शिक्षा–एम० ए०, बी० एड०

विशेष– सेवा निवृत प्रधान अध्यापक, प्रौढ़ एवं सहज साहित्यकार भावना प्रधान रस सिद्ध कवि ।

परिचय:-

प्रबल क्षत्रिय कुल में ही हमारा जन्म,
दतिया बुन्देल खन्ड माहि हम रहाते हैं ।
श्री युत वल्देव सिंह धाम खनियाधाना,
जिनके सुपुत्र जग जाहिर जनाते हैं ।।
वीररस वनाते अरु हास्य को सजाते तथा,
झूठी नहि कायरों की रचना रचाते हैं ।
सेवक महावीर के कहाते रणवीर सिंह,
कविता पयोनिधि में डुबकी लगाते हैं ।।

सूर सूर तुलसी शशी की आलोचना

दोहा:— कवि कोविद जन सूर को वरने सूर्य समान ।
पर न योग उपमा अहे, वरनों जासु प्रमान ।।

सवैया:—

इन सूर की आंधिरी आँखिन में वृजराज प्रभा की भराभरी है ।
जिनके प्रति अंग में कोटिन सूर के तेज की होत हराहरी है ।।
निर्भीक इते विहरें जग में, उतै राहु ग्रसे- की डराडरी है ।
इन सूर की पुण्य प्रभावरी में, उन सूर की कौन वरावरी है ।।

दोहा:— तुलसी को शशि सम कहत, अधिक होत है दोष ।
दोष रहित तुलसी अहे चन्द दोष को कोष ।।

सवैया:—

चन्द्र के हिये कलंक बसै तुलसी हिय में बसै मूरत साँवरी ।
जासु न भानन की छवि पै, अस कोटिक चन्द्र की होत निछावरी ।।
भीत बिदुन्दुहु की तिहि पै, दिन रैन नभाञ्चल में भरे भाँवरी ।
झाँवरी है शशिकी उपमा, तुलसी की करे किम चन्द्र वरावरी ।।

श्री रामदास यादव 'यादवेन्द्र'

जन्म— १-६-१६२७ ई०

अवकाश प्राप्त शिक्षक, दतिया (म०प्र०)

विशेष-सहज काव्य कला में भावात्मक अभिरुचि, के कवि।

सम्पर्क—सुमन - साहित्य—सदन, दतिया

स्वागत-गान

स्वागत यथावत् नाथ का हम छात्रगण कैसे करें?
हैं कौन ऐसे शब्द जिनसे भाव को भाषित करें?
शुचि दान विद्या का दिया, मिटना बताया धर्म पर।
कहना बताया सत्य का चलना सिखाया कर्म पर।
हा! है अनर्थ महा, विलग गुरु देव से हम हो रहे।
पाकर सदा वात्सल्य सुख हत भाग्य पर हम रो रहे।
भगवान्! सुखी रखना निरंतर प्रेम की इस मूर्ति को।
हम बालकों की प्रार्थना पावे अचल परिपूर्ति को।
गुरुदेव! स्वागत आपका हम बालगण कैसे करें?
है कौन ऐसी वस्तु जो उपहार में आगे धरें?
है यहाँ परम्लान सुमनों से खचित यह पुष्प माला।
और खारे जल कणों से पूर्ण है यह चक्षु - प्याला।
स्वीकार हे गुरुदेव! करिये प्रेम की इस भेंट को।
सुधार—रखिये सदा स्मरण अपने बालकों के प्रेम को।
इनका—रखिये सदा स्मरण अपने क्षुब्ध—बाल समाज को।

श्री रणवीर सिंह चौहान

जन्म तिथि–१ जनवरी १९२७ ई०
शिक्षा–एम० ए०, बी० एड०
विशेष– सेवा निवृत प्रधान अध्यापक, प्रौढ़ एवं सहज
साहित्यकार भावना प्रधान रस सिद्ध कवि ।

परिचय:-
प्रबल क्षत्रिय कुल में ही हमारा जन्म,
दतिया बुन्देल खन्ड माहि हम रहाते हैं ।
श्री युत वल्देब सिंह धाम खनियाधाना,
जिनके सुपुत्र जग जाहिर जनाते हैं ॥
वीररस वनाते अरु हास्य को सजाते तथा,
झूठी नहि कायरों की रचना रचाते हैं ।
सेवक महावीर के कहाते रणवीर सिंह,
कविता पयोनिधि में डुबकी लगाते हैं ॥

सूर सूर तुलसी शशी की आलोचना

दोहा:— कवि कोविद जन सूर को वरने सूर्य समान ।
पर न योग उपमा अहे, वरनों जासु प्रमान ॥

सवैया:—
इन सूर की आंधिरी आँखिन में वृजराज प्रभा की भराभरी है ।
जिनके प्रति अंग में कोटिन सूर के तेज की होत हराहरी है ॥
निर्भीक इते विहरें जग में, उतै राहु ग्रसे– की डराडरी है ।
इन सूर की पुण्य प्रभावरी में, उन सूर की कौन वरावरी है ॥

दोहा:— तुलसी को शशि सम कहत, अधिक होत है दोष ।
दोष रहित तुलसी अहे चन्द दोष को कोष ॥

सवैया:—
चन्द्र के हिये कलंक बसै तुलसी हिय में बसै मूरत साँवरी ।
जासु न भानन की छवि पै, अस कोटिक चन्द्र की होत निछावरी ॥
भीत बिदुन्दुहु की तिहि पै, दिन रैन नभाञ्चल में भरे भाँवरी ।
झाँवरी है शशिकी उपमा, तुलसी की करे किम चन्द्र वरावरी ॥

श्री रामदास यादव 'यादवेन्द्र'

जन्म— १-९-१९२७ ई०

अवकाश प्राप्त शिक्षक, दतिया (म०प्र०)

विशेष-सहज काव्य कला में भावात्मक अभिरुचि, के कवि।

सम्पर्क—सुमन - साहित्य—सदन, दतिया

स्वागत-गान

स्वागत यथावत् नाथ का हम छात्रगण कैसे करें?
हैं कौन ऐसे शब्द जिनसे भाव को भाषित करें?
शुचि दान विद्या का दिया, मिटना बताया धर्म पर।
कहना बताया सत्य का चलना सिखाया कर्म पर।
हा! है अनर्थ महा, विलग गुरु देव से हम हो रहे।
पाकर सदा वात्सल्य सुख हत भाग्य पर हम रो रहे।
भगवान्! सुखी रखना निरंतर प्रेम की इस मूर्ति को।
हम बालकों की प्रार्थना पावे अचल परिपूर्ति को।
गुरुदेव! स्वागत आपका हम बालगण कैसे करें?
है कौन ऐसी वस्तु जो उपहार में आगे धरें?
है यहाँ परम्लान सुमनों से खचित यह पुष्प माला।
और खारे जल कणों से पूर्ण है यह चक्षु-प्याला।
स्वीकार हे गुरुदेव! करिये प्रेम की इस भेंट को।
सुधार—रखिये सदा स्मरण अपने बालकों के प्रेम को।
उनका—रखिये सदा स्मरण अपने क्षुब्ध—बाल समाज को।

श्री अवध किशोर श्रीवास्तव

'अवधेश'

जन्म तिथि—१ अक्टूबर १९२८ ई०

शिक्षा — एम० ए०, साहित्य रत्न आयुर्वेद रत्न (रजि० वैद्य)

प्रकाशित रचनायें—श्रमणा, शवरी के राम (महाकाव्य), ब्रज नन्दन बुन्देल भारती, कविता बाला, चित्रगुप्त नाटक, नाटिका बाटिका, समय सुहावन, लोकगीत आदि।

विशेष -मानस प्रवचनकार, कवि, पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित कला मंच के संस्थापक,काव्य कला परिषद के अध्यक्ष आदि अनेक संस्थाओं के अध्यक्ष, मंत्री, संचालक।

संपर्क -श्याम कुटीर, रिछरा फाटक, दतिया।

बुन्देली-फाग

हम तौ बुन्देली के कवि है, सिरस सुमन है पवि है।
दद्दा थे दक्षिणायणी सूरज हम उत्तरायण रवि है॥
पूत नर्मदा के पाथर है सरल सहज है शिव है।
चतुरन के चाकर है चोंखे द्वेष दम्भ को दवि है।
मात शारदा के सुत वारे, ब्रह्म किरण की छवि है।

श्री राम और यमुना

परसे पद पंकज ज्यों प्रभु के कृत कृत्य भई पग पावरी ह्वै गइ,
जब न्हात मैं गात छुओं रघुनाथ कौ सूर सुता अति वावरी ह्वै गइ।
अचबे हित पानि में पानि लियो अधरान लगी सत भाँवरी ह्वै गइ,
जुग भेतहि तें जमुना अवधेश के साँवरे रंग में साँवरी ह्वै गइ।

श्री राम भरोसे चतुर्वेदी 'शृंग'

जन्म— सन् १९२८ ई०
प्रकाशित पुस्तक–बहार, मानस तरंग,
संपर्क—बिरथरिया भवन, भरतगढ़, दतिया(म० प्र०)
विशेष-दार्शनिक विचारधारा के समर्थक व्यवहारवादी कवि

कलियुग वर्णन

कलियुग तेरी महिमा अपार है अपार।
सतयुग से आयु तेरी एक बटा चार।
चार लाख अरु बत्तीस हजार। कलियुग
अभी कलियुग बालक है, फिरभी इतना घालक है
जब आयेगी कलियुग की जवानी की बहार।
तब दुनिया में बढ़ेगा अति अत्याचार। कलियुग

कलि माने मशीन युग जाने जमाना।
कलि युग है मशीन ही का जमाना।
हर काम मशीन से होता है।
मशीन बिन मानव रोता है।
मशीनों का खूब हो रहा आविष्कार। कलियुग
बिजली, इंजन, मोटर, रेल, जहाज,
तार, फोन, ग्रामोफोन, टी. बी. की आवाज
सिनेमा सुनते देखते चित्र विचित्र।
रेडियो, टी० वी० से गाना, खबरें सुनते सर्वत्र।
दुनिया में खबरें पहुंचाओ मिनटों में
वस्तुओं को भी मंगवाओ घंटों में
दुनियां का भी भ्रमण करलो दिन दो चार। कलियुग

श्री किशोरी शरण श्रीवास्तव

'मानस किंकर'

जन्म-२-१०-१६२८ ई०
संपर्क—मानस-किंकर बरगाय, जिला-दतिया (म०प्र०)
सेवा निवृत पटवारी ।
विशेष—राम भक्तिधारा के समर्थ एवं सशक्त कवि,
प्रवचनकार तथा सत्संग प्रेमी ।

"जो राम नाम को नहिं जाने"

जो राम नाम को नहिं जाने ।
वह राम चरित की क्या जाने ?
जिस पर न कभी आई बिपदा,
वह पर दुःख को क्या पहचाने ?
जो दीन दुःखी को देखत ही,
जिसका नहिं हृदय द्रवित होता ।
उसका उर कोल कठोर की सदृश,
वह दीन बन्धु को क्या जाने ?
संतों के दर्शन करने से,
आनन्द लहर नहिं उठती है ।
वह मोह निशा में सोता है,
वह सत-संगति में क्या जाने ?
है ब्रह्म जीव दोऊ संगाती,
इतना है प्रेम परस्पर का ।
माया में गदला बना जीव ,
श्री राम ब्रह्म को क्या जाने ?
जब तक न त्याग है ममता से,
जिसका विलास से नहिं विराग,
वह तुलसीदास को क्या जाने ?
जिसका न भाव है भक्ति में
नहिं भगवत का गुणगान करें,
जिसका कुचित्त में चित्त फँसा ।
वह चित्रकूट की क्या जाने ?

श्री मथुरा प्रसाद गोस्वामी

जन्म—२५ नवम्बर १९२८ ई०

शिक्षा—बी० ए०, एल० एल० बी० एडवोकेट

सम्पर्क-कुंजनपुरा, दतिया-(म० प्र०)

विशेष—काव्य सृजन में सहज अभिरुचि ।

गीत

तुम्हारी मिलन कामना को लिये मैं न जाने भटकता कहाँ आ गया हूँ ?
न पूछो कहाँ से कहाँ आ गया हूँ ?

मृदुल भावना ने तुम्हें जो पुकारा, उसी से द्रवित हो उठा हिय हमारा,
तुम्हारी कृपा कोर ने जो निहारा, इसी से तनिक सांत्वना पा गया हूँ।
तुम्हारी मिलन कामना को लिये मैं न जाने भटकता कहाँ आ गया हूँ ?

तुम्हें पत्र लिखता अगर ज्ञान होता, तुम्हें खोजता मैं अगर भान होता,
पर ज्ञानी बताते निराकार हो तुम, इसी से भ्रमित हाल मै आ गया हूँ।
तुम्हारी मिलन कामना को लिये मैं न जाने भटकता कहाँ आ गया हूँ ?

मिलोगे कभी मान लें यह सही है, पर तेरी राह तो मेरी देखी नहीं है,
बताओ कहाँ मार्ग कैसे मिलेगा, इन्हीं उलझनों में फंसा जा रहा हूँ ?
तुम्हारी मिलन कामना को लिये मैं, न जाने भटकता कहाँ आ गया हूँ ?

बिना राह के भी तो चल ही दिये हम, यही सोचकर पथ प्रदर्शक बनो तुम,
चरण चिन्ह तेरे न अब तक मिले हैं, इसी बात से कुछ मैं घबरा गया हूँ।
तुम्हारी मिलन कामना को लिये मैं न जाने भटकता कहाँ आ गया हूँ ?

मेरे पॉव रुकते कंटकाकीर्ण मग लख, कहाँ तक बचाऊँ मैं पग फूंक रख-रख,
पड़े पॉव छाले व्यथा भी धनी है, यही देखकर कुछ रुका जा रहा हूँ।
तुम्हारी मिलन कामना को लिये मैं न जाने भटकता कहाँ आ गया हूँ ?

निवेदन यही तुम दया पात्र भरदो, इन्हीं शूल को तुम प्रभो फूल करदो,
तभी फूल की राह में आ सकूँगा, हृदय कह उठे मार्ग मैं पा गया हूँ।
तुम्हारी मिलन कामना को लिये मैं न जाने भटकता कहाँ आ गया हूँ ?

श्री जगमोहन सिंह 'मोहन'

जन्म—भाद्र कृष्ण अष्टमी सम्वत् १६८६ वि०

निवास-ग्राम रुआ-राय, जिला-दतिया।

कृतियाँ-विखरे मोती, गीत संग्रह, मोहन सतसई, इतिहास के विन्दु, (अप्रकाशित), मोहन की चौकड़ियां—भाग सात (प्रकाशित)

विशेष—पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित अनेक लेख एवं रचनायें, समाजोत्थान की विचारधारा के सशक्त कवि।

पियो आँख का पानी

वन की मोर न जाने कैसी कुहकी बेढब,
वन तो वन मधुबन तक झुलसा डाला सारा!
और बादलों में थी नीरसता, नीरवता,
तितिक्षा खो बैठा था मेरा अपना तन मन।

यह तो सचमुच अहंभाव की पीड़ा है,
कष्ठ छिद्र अंतर में बैठा लघु कीड़ा है।
आवारा बहिरंग हमें अच्छा लगता है।
ठगिया बन जाने कितनों को ठगता है॥

पिक ने गाया कुछ ऐसा अनजाना गाना,
बहरा, नंगापन बसंत की कोपल पांखों पर।
और मधुप सब बैठे अपने पंख सिकोड़े,
उपवन की डालों पर था बोझिल रूखापन॥

बाहर सचमुच निमिषमात्र का पहरा है।
भीतर सचमुच जीवन का रंग गहरा है।
कलम उठी तो साध नहीं होती बचकानी'
पीना हो तो पियो दुःखी नयनों का पानी।

श्री द्वारिका प्रसाद उपाध्याय

जन्म–१ जनवरी १९२९ ई०

शिक्षा –बी० ए०,(सेवा निवृत व्याख्याता)

विशेष—हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी भाषाओं के माध्यम से साहित्य सृजन में अभिरुचि,बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न हँसमुख और उत्साही व्यक्तित्व । माँ सरस्वती की साधना में सतत् अनुरत ।

कविता

इस विश्व-वन में स्वार्थ की दावाग्नि,
ईर्षा की पवन से जपने लगी ।
नीति, न्याय अरु शान्ति-चन्दन तरु जपे,
प्रीत कोपिल बिलखकर भगने लगी ॥

गाँव के चौपाय धू-धू दह उठे,
नगर चौराहों पर भी लपटें उठने लगी ।
भय, व्यथा पीड़ा से भरकर हर ओर मानव
चींख- भगदड़ शोर गुल होने लगी ।

उग्रवादी, आततायी, चटक शोले उठ रहे
मनुष्यता की दुर्गन्धता धुवाँ लव उठने लगी
सोचिए परिणाम भविष्य स्वरूप का,
अरु-शिखा परमाणु की हद-दहने लगी ॥

श्री राम प्रकाश श्रीवास्तव

'उन्मत्त'

विशेष—रिटायर्ड ऐडमिनिस्टेटर आफीसर, दतिया (म. प्र.) निराला जी के साथ २ वर्ष रहे। उन्होने ही "उन्मत्त" नाम दिया। भारत भ्रमण। अप्रकाशित रचनाएें- "छाया" और "मुक्ति के गीत"

'कविता'

राष्ट्र का निर्माण करना चाहते हो,
तो तुम्हें कुछ बलि चढ़ानी ही पड़ेगी।
देश का उत्थान करना चाहते हो,
नीव ये पहले जमानी ही पड़ेगी।

कोई भी पूजन न तब तक पूर्ण होता,
लक्ष्य चलकर सामने अपने न आये।
वृक्ष की फल, की कभी रचना न होती,
फूल गिरकर धूल में यों सो न जाये।

इसलिये आओ सभी मिलकर नये दीपक जलायें,
स्नेह गुण के योग से तम को हरें नव ज्योति लायें।
हो प्रकाशित जगत सारा सब जगह आनंद हो,
राष्ट्र का हर एक बालक फिर विवेकानन्द हो।

श्री राधामोहन नगार्च

जन्म—२ फरवरी सन १९३३ ई०

शिक्षा—मैट्रिक, साहित्य विशारद,

व्यवसाय-प्रधान अध्यापक

विशेष—साहित्य सेवी, संगीतज्ञ, प्रकृति प्रेमी और मानवता वादी विचारक कवि।

सम्पर्क—शिवगिरि मन्दिर के पास, दतिया

गीत

प्रिये! तुम क्यों जाती हो पार?
तुम्हारे प्रथम मिलन का प्यार,
तुम्हारे बचनों का व्यबहार,
पालता रहा मुझे दिन रैन,
तुम्हारे अन्तर उर का प्यार,
साल सा है मुझको हर बार,
प्रिये! तुम क्यों जाती हो पार?

कुसुम खिलने भी ना पाया।
"कली" क्यों पहले मुरझाई?
शमा क्यों पहले ही बुझ गई।
शलभ की लगन न मिट पाई।
तुम्हारा कैसा यह उपकार?
प्रिये! तुम क्यों जाती हो पार?

जो चाहा गाऊँ मैं संगीत,
सुनादूँ तुमको अन्तिम गीत,
मगर कह भी नहि सका अतीत'
सुनादो प्रिय को अन्तिम गीत,
टूटा बीणा का तार,
प्रिये! तुम क्यों जाती हो पार?

श्री स्वामी शरण सक्सैना

'एडवोकेट'

जन्म तिथि:— २१ अगस्त १९३३ ई०

शिक्षा:— एम० ए० (तीन बिषय), एल० एल० बी०

प्रकाशित रचना:–पत्रकारिता विज्ञान एवं समाचार संकलन

बिशेष–मध्य प्रदेश शासन से 'जय भारत इतिहास लिख रहा' कृति पर प्रथम पुरस्कार से सम्मानित। विभिन्न विधाओं की अनेक रचनाऐ देश की विविध पत्र-पत्रिकाओं में निरतंर प्रकाशित।

सम्पर्क— छोटा बाजार, डा० भोडेले का मकान, दतिया

'शाप लिये चलता हूँ'

अनाहूत आरक्षण से पीड़ित मुक्त देश की तरुणाई है,
टूट रही अपने ही स्वर से मधु-रागों की शहनाई है,
बिंधा हुआ काँटों से प्रतिक्षण जीवन की इस फुल बगिया में,
खोज रहा यौवन की सत्ता दुख से जर्जर मधुपायी है,
कौन धरा के आक्रोश से रचे विधानों की उत्पीड़ा–
अपने ही मन के तापों से मैं उत्ताप लिए जलता हूँ।
अपने युग के अहसासों का मै अभिशाप लिए चलता हूँ॥

बहुत दूर तक अपवादों से अंगार सहेजे स्वप्नों के,
झंझावात उमड़ते पालग अनबूझे वासे प्रश्नों के,
कौड़ी की भी बात कठिन सी कौन गोमची समान चीन्हे,
कहते वे ले आएंगे हम अधिकोष सुनहले रत्नों के,
किंतु अनागत की पलकों पर जो घुमड़ी आगत की पीड़ा,
पी उसका दिनरात हलाहल मै संताप लिए पलता हूँ।
अपने युग के अहसासों का मै अभिशाप लिए-चलता हूँ॥

श्री राधेश्याम त्रिपाठी 'शांत'

जन्म—१४ जनवरी सन् १९३४ ई० ।
जन्म ग्राम—मतिराम पुरा, जिला-इटावा (उ०प्र०)
शिक्षा—एम० ए०, साहित्य रत्न, डी०यू०एम०टी० कलकत्ता
विशेष—कला एवं साहित्य समिति (म०प्र०) के संस्थापक एवं अध्यक्ष, अनेक काव्य कृतियों के प्रणेता, प्रौढ़ रचनाकार। प्रगतिवादी विचारधारा से सशक्त एवं समर्थ कवि, अनेक भारतीय तथा विदेशी पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित । सम्प्रति सहायक शाला निरीक्षक, दतिया (म०प्र०)
सम्पर्क—उषा निवास, डबरा, जिला-ग्वालियर ।

"दृष्टि इधर भी डालो"

ये कुटिया के पास बना, ऊँचा लगता सुन्दर घर है।
इसमें रहने वाले मानव से, सिकुड़ रहा कोई नर है ॥

कुटिया का मानव भूख प्यास से, बोझिल है उत्पीड़ित है।
कुटिया का मानव कर्ज और, दीनावस्था से पीड़ित है ॥

इस भाँति धनिक की चक्की में, पिसते रहते हैं-बेचारे ।
फिर भी भरपेट नहीं मिलता, बोलो कितने ये हत्यारे ॥

किसके बल पर यह महल खड़े, किसके बल पर ये मील बने,
किसके बल पर यह धनी हुये, यह लम्बे-चौड़े डील बने ॥

कामुकता कृमि कुटिल-कलंकी, कायर-कमला पर इतराते हैं।
मिशन मिटेगा पूँजीपति का, लक्षण यह बतलाते हैं ॥

निर्धन होना ही मात्र पाप ? पर भारत माँ के बेटे हैं ॥
इनको भी तो कुछ हक दे दो, अब तक मिट्टी पर लेटे है ॥

कितनी सरकारें बदल गई, पर पाया कोई न्याय नही ।
इनके स्वत्वों पर ताले हैं, क्या ? यह भी कम अन्याय नही ।

इसलिये देश के कर्णधार, कुछ दृष्टि इधर भी डालो अब ।
इनकी मिटती आशाओं को कुछ स्नेह, शक्ति दे, पालो अब ॥

श्री अनन्तराम गुप्ता

अध्यापक

जन्म—५ अगस्त १९३४ ई०

रचनायें— भारतीय स्वतंत्रता, ओरछायश, ईश्वर लीला (विज्ञान कथा)हितायन ।

शिक्षा—मिडिल ।

विशेष—अनेक कृतियों के रचयिता । भक्ति एवं दार्शनिक बिचार धारा के सहज कवि एवं समर्पित साहित्यकार ।

सम्पर्क शिक्षक, ग्राम-बडैरा, जिला दतिया (म०प्र०)

दोहा-दतिया मण्डल मध्य में, प्रसिद्ध तीन स्थान
बालाजी अरु सेंवढ़ा, सोनागिरि पहिचान ।

कवित्त (बालाजी)

सरिता पहूज तट, मंदिर बनो है भव्य,
दूजी ओर अमरूदन बाग प्रभुताई है ।
तामें स्नान कर, भीगे सु वस्त्र धार,
लोटा भर जल लै फूल माला सजाई है ।
पहिरे पै चढ़के ब्रह्म बालाजी दरस करें,
जल चढ़ाय भेंट धर दण्डवत कराई है ।
रबिवार दसमी मेला भरो रहै,
अनंत राम गुप्त कहै बैसे हूँ आबा जाई है ।

कवित्त [सनकुआ]

सेवढ़े में सनकुआ सनक सनन्दन जी को,
सिंध सरिता के मध्य में परत दिखाई है ।
नदी की धारा ता मध है टूट रही,
कछुक दूर जाकें पुन रूप निज पाई है ।
ताही के वीच में, गौ मुख शंकर बने,
दरसन कर मानव मन भावै प्रफुलाई है ।
अनन्त राम गुप्त कहै पर्व परें भर रहै,
कार्तिक की पूनो मेला की भराई है ।।

श्री डी०डी० सिंह चन्देल 'पीयूष'

जन्म—१५ अगस्त सन् १९३५ ई०

विशेष—पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित एवं आकाशवाणी के कवि। प्रौढ़ एवं समर्पित कवि। गीतापद्यानुवाद एवं अनेक स्फुट कविताओं के सृजक।

सम्पर्क—वरिष्ठ सहकारी निरीक्षक, सहकारिता विभाग, जिला, दतिया (म० प्र०)

गीत

भारत-भू-तेरी परतों में, सदियों के इतिहास लिखे हैं,
भारत-भू-तेरे अंगों में, सुधियों के त्यौहार लिखे हैं।
भारत—भू ... .।

मनु-सतरूपा के जीवन के, श्री-रामकृष्ण के स्वप्नों के,
मानवता की रुचि रचना के, प्रिय-पावन संवाद लिखे हैं।
भारत माँ के संत्राण हेतु, सृजनोचित उद्गार लिखे हैं,
भारत भू... ....

भीष्मार्जुन के विजयघोष के, दृढता के दृढनाद लिखे हैं,
द्रोणगुरू के ज्ञानतत्व के, मंत्र मनोहर सार लिखे हैं।
शिवि-दधीच के, कर्णवीर के, दान-भरे संसार लिखे हैं॥
भारत-भू.... ....

बाल्मीकि के, वेदव्यास के, अमित-कोष आचार लिखे हैं,
तुलसी, सूर, कबीरदास के, मन-मानव-भगवान् लिखे हैं।
भारत-संस्कृति रक्षा करने, इन सब के सद्-गान लिखे हैं॥
भारत-भू.... ....

युग-परिवर्तन हुआ अभी जब; गाँधी नेहरू स्वप्न लिखे हैं,
वर्ग-वर्ग-उत्थान - मनन के, मूल्यांकन उद्गार लिखे हैं।
बलिदानी-भारत - संग्रामी, सेनानी के त्याग लिखे हैं॥
भारत - भू.... ....

महाजनों का पंथ अनूठा, सदा-सदा अपनाना होगा;
भारत-भू स्वतंत्रत रक्षाहित, अर्पित-चित्त बनाना होगा।
माँ की रक्षा धर्म हमारा, यह "चंदेल" विचार लिखे हैं॥
भारत - भू.... ....

श्री रामाधार तिवारी 'निर्भीक'

जन्म — १ जनवरी सन् १९३५ ई०
शिक्षा—हाईस्कूल ।
विशेष–सहकारी आन्दोलन के अग्रणी, सेंवढा विपणन संस्था के संस्थापक व अध्यक्ष, को० आ० बैंक, दतिया के उपाध्यक्ष, म०प्र० राज्य सहकारी संघ के प्रतिनिधि म०प्र० राज्य विपणन संघ भोपाल के संचालक व कई सहकारी संस्थाओं के पदाधिकारी. अनेक समाचार पत्रों के प्रतिनिधि एवं पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित। साहित्य सृजन में सहज अभिरुचि, जीवन मूल्यों के समर्थक कवि ।
निवास—थरेट, जिला दतिया (म०प्र०)

'सहकारिता'

सह अरु कारिता कार्यता से सहकारी शब्द बना ।
जिसका अर्थ मिल जुलकर कार्य करना है ।
एक है सबके लिये, सब हैं एक के लिये ।
यही सिद्धान्त अब सफल कर दिखाना है ।
सहकारी कृषि करो, दुकान सहकारी करो ।
बन्ज व्यापार में अब सहकारिता लाना है ।
कहता "निर्भीक" सुनो तो सहकारी बन्धु ।
बिन सहकार के अब कदम नहि बढ़ाना है ॥

"जुल्मों के वारे में"

वो बलिया में थी जो वही खून धारा,
मिटाने गुलामी लगाया था नारा ।
लड़े व्यर्थ बम्बई व पूजा सितारा,
पुजारी अहिंसा का बापू हमारा ।
था बंगाल का शेर अब वो कहाँ है,
न रोटी मिली औ न कपड़ा झिला है ।
लगा टैक्स जो अब न हमसे मिला है,
जो पाया था हमने वह भी गवाया ।

श्री गजराज सिंह खरे 'निर्भीक'

जन्म—श्रावण कृष्ण ४ संवत् १९९२ वि०

जन्म स्थान – ग्राम-खरैला, तहसील मौंठ, जिला झाँसी (उ० प्र०)

कर्म स्थल—जिला-दतिया (उ० प्र०)

प्रकाशित रचनायें—श्री हनुमान आल्हा, बुन्देली बोल, लोक लहरी।

अप्रकाशित रचनायें—श्री रामायण आल्हा, दरिद्रता, वोट की चोट, हाय अब का होंनें (व्यंग्य-रचना), लोकगीत चालीसा, रसीले लोकगीत, पिंजड़े वाली मुनियाँ, निर्भीक की कुण्डलियाँ, दोहा-पद मुक्तावली।

विशेष—हास्य व्यंग्य के सरस एवं प्रेरक प्रौढ़ सहृदय कवि। बुन्देली के सशक्त रचनाकार।

सम्प्रति—शिक्षक, मा० विद्यालय, कुसौली, जिला-दतिया (म० प्र०)

बुन्देली-दोहे

हिन्दी की हलकी लली, ब्रज भाषा की बैंन।
बुन्देली बोली लला, हमें करें बेचैन॥

बुन्देली के बोलतन, मिलतइ ऐसौ चैन।
जैसें पोंड़ा ऊख कौ, चोंखत भैया—बैंन॥

अपने कवि 'निर्भीक' कौ, जो कर हैं विश्वास।
अंत समय में कढ़ैगी, उनकी सुख से साँस॥

करौ काम सबकौ सफल, धरौ राम कौ ध्यान।
जानों कवि 'निर्भीक' कौ, मानों मंत्र महान॥

रिश्वत खा-खा मर गए, बाप बाप के बाप।
उन पुरखन के पाप से, आप रहे अब टाप॥

मिले सफलता की कुची, खुले मुक्ति का द्वार।
सरल भाव से कीजिए, प्रतिदिन पर उपकार॥

हड़ गए ते 'निर्भीक' जी, लगा लगा कें झींक।
पवन-पुत्र की कृपा सें, परौ ठिकानौ ठीक॥

श्री प्रभुदयाल श्रीवास्तव

जन्म—१ जुलाई १९३५ ई०

शिक्षा—एम० ए० (हिन्दी)

विशेष—प्रगतिवादी एवं कर्मवादी कवि ।

सम्पर्क बस स्टेण्ड, पठाई पुरा, दतिया (म०प्र०)

कर्म प्रधान

भाग्यवादी स्वर्ण अवसर है गंवाते बैठकर,
परश्रमी बढ़ते सदा ही अपनी मूंछें ऐंठकर।
कर्म का फल है वो पाते बैठते ना निरर्थक,
इसलिये बनता है जीवन शुभ सलौना सार्थक ।
कुछ मनुज निज कर्म बिगड़ा देख किस्मत कोसते,
ईश को देकर इशारा अन्य बातें सोचते ।
भाग्य सुत है कर्म का कर्तव्य निष्ठा से करें,
कुछ न कुछ अनयास प्रतिशत पूर्व में निश्चय भरें ।
हम प्रथम अज्ञान थे भोजन ही अपना काम था,
दर-बदर भटके मिला कुछ ज्ञान भारत धाम था ।
अब न पीछे हम रहें, हर व्यक्ति को यह जताना,
विश्व में भारत धरा का भाल ऊँचा है उठाना ।
कह दिया अनमोल कहना माफ करना भूल को,
स्वर्ण सम सबको समझना इस धरा की धूल को ।
हम करें संसार में निज देश के शुभ नाम को,
हर मनुज उत्साह से लग जाये अपने काम को ।

———

श्री हरिसिंह 'हरीश'

जन्म—१-८-१९३५ ई०
शिक्षा—एम० ए० हिन्दी, बी० टी०
विशेष—कवि, लेखक, संपादक, उपन्यासकार, प्रकाशित पुस्तकें - कली भँवरे और काँटे (उप०), मनके गीत, नमन के अक्षर, श्री गुरु चरणों के फूल
सम्पर्क सुमन साहित्य सदन, दतिया (म० प्र०)

गीत

तन से मन तक, मन से तन तक ऐसा प्यार करें।
रोम—रोम हो जाये रंगीला, ऐसी धार करें।

तू-तू, मैं-मैं का यह झगड़ा खत्म हो इक पल में।
डूब जायें हम प्रेम सिन्धु के गहरे से जल में।
इक दूजे को अमिट-प्रेम की हम मनुहार करें।

जो भी देखें, देख न पाये, एक रूप होलें।
आज प्रेम की सुख—शैय्या पर ऐसे हम सोलें।
इक दूजे पर आज प्रेम की ऐसी मार करें।

जनम—जनम की प्यास बुझालें, पीलें प्रेमाजल।
इक दूजे को प्यार करें हम इस जग में निश्छल।
मन—मन्दिर में इक दूजे का हम दीदार करें।

अपलक देखें इक दूजे को, भूलके इस जग को।
छोड़के दुनिया की हर मंजिल, छोड़के हर मग को।
धरती—अम्बर एक रूप हो हम मिल पार करें।

साँस- साँस टकराये मिलकर, धड़कन इक होले।
जो करना है, कर लें हम तुम, कोई नहीं बोले।
सुख के सुमन लुटाकर हम तुम आज बिहार करें।

सदियों रहे, रहेंगे सदियों, हम दोनों मिलके।
इक दूजे को प्यार करेंगे, फूलों से खिलके।
जनम-जनम हम साथ रहेंगे, 'यह स्वीकार करें।

पं० श्री चन्द्रशेखर मिश्रा

प्रधानाध्यापक

जन्म—१ जनवरी सन् १९३६ ई०

शिक्षा—एम० ए०, बी० एड०, एल-एल० बी०

विशेष—प्रगतिवादी प्रौढ़ कवि एवं समाजवादी विचार धारा के समर्थ लोकप्रिय साहित्यकार।

सम्पर्क- पकौड़िया महादेव, दतिया (म०प्र०)

'कविता'

चोरी तो होती आई है काव्य जगत में सदियों से,
मेरा नम्र निवेदन है यह उदीयमान नये कवियों से।
स्यन्तक कैसे मिली कृष्ण को, कथा जानते आप हैं,
मित्र सुदामा तंदुल खाकर, करते पश्चात्ताप है।

एक कर्म के अलग अलग फल, यह कैसा अन्याय है ?
बड़े करें तो लीला करते, छोटे करें तो पाप है।
यही शिकायत नालों को है, गंगा जैसी नदियों से,
मेरा नम्र निवेदन है यह उदीयमान नये कवियों से।

बड़ी-बड़ी बातें कुछ बचपन, लिख जाते यह सत्य है,
ललना के गोड़े पलना में, दिख जाते यह सत्य है।
औरों की तुक में तुक जोड़े अलग दिखाई देते है,
गज की झूलें गर्दभ ओढ़े अलग दिखाई देते है।

मन की बात नयन कह देते जैसे आँसू सुख-दुख के,
चोर सिपाही को मुँह मोड़े अलग दिखाई देते है।
हिम्मत हो तो आँख मिलाओ साहित्यक प्रोहरियों से,
मेरा नम्र निवेदन है यह उदीयमान नये कवियों से।

तंत्राचार्य विभूतिनाथ जगदीशशरण बिलगइयाँ 'मधुप' द्विवेदी

जन्म—श्रावण शुक्ला ७ शनिवार संवत् १९९३ वि०

शिक्षा—एम० ए० (संस्कृत), बी० टी० ।

विशेष-देश की अनेक पत्र पत्रिकाओं में कविता, कहानी, लेख प्रकाशित, अनेक साहित्यिक संस्थाओं द्वारा सम्मानित, कई पुस्तकों के सपादक, आल इन्डिया आथर्स सोसायटी के सदस्य। श्री चामुण्डा तंत्र संस्थान के संस्थापक एवं महा निदेशक। म0 प्र0 बाल साहित्यकार परिषद्, शाखा दतिया के अध्यक्ष सुकवि एवं सफल साहित्यकार ।

सम्पर्क-श्री चामुण्डा तंत्र संस्थान, दतिया (म०प्र०)

माँ चामुण्डा

चामुण्डे ! चण्डघाती त्वं
भक्तानां सुखदायिनी ।
देहि वित्तं, प्रभाप्रज्ञां,
प्रणमामि मुहुर्मुहुः ।

गुविंद अलवेले हैं

देखे हैं अनोखे मित्र, ठाकुर जहान बीच,
गुरुअन के गुरू और चेलन के चेले हैं ।
डर है न काऊ, कोऊ पारावार लाँघ गये,
काऊ के संग चलत, क्षत्रिन झमेले हैं ।
कोऊ डरपोंक बड़े, नाम के ही शूरवीर,
कोऊ जगदीश 'मधुप' तेगन तें खेले हैं ।
इनमें अनोखे एक दतिया में आन बसे,
राधा ठकुराइन औ' गुविंद अलवेले हैं ।

पं० श्री नर्मदाप्रसाद ज्योतिषी

'मानस मराल'

जन्म तिथि—संवत् १९९३ वि०, माघ सुदी दसवीं।

विशेष—भक्ति एवं दार्शनिक विचारधारा के रस सिद्ध कवि।

सम्पर्क—भरतगढ़, दतिया (म० प्र०)

गोविन्द पच्चीसी के अंश

(१)

मेरौ तुम बिन और न कोई।
माता—पिता पुत्र संबंधी, स्वारथ के सब होई॥
खासे मित्र न होते संगी, धन दौलत के सोई।
पूजा भजन नेम नहिं होबत चिंता, चित को खोई॥
रैन दिना मैं विकल हो रहौ कितै रहौ मुख तोई,
वर्तमान संकट कौ काटौ ओ ब्रजभान की छोई॥
नर्मद भ्रमन करें वृन्दावन, मिलौ दर्शन में दोई। मेरौ०॥

(२)

जो हरि हमरे साथ न होते।
तो मन, सिंधु भँवर मैं फँसकर, खाते अगनित गोते॥
पशु पामर सम समय बिताते, सुखद जनम सुख होते॥
यज्ञ धर्म को जान न पाते कर्म भार खर ढोते।
पूजा पाठ नेम नहिं करते आलस में हम सोते॥
रैन दिना भ्रमते इत उतको सिर धुन-धुन कर रोते।
नर्मद के मन बसें निरंतर हरिमन माल पिरोते। जो हरि०॥

श्री प्रभु दयाल गोस्वामी

जन्म—४ नवम्बर सन् १९३६ ई० 'व्याख्याता'
शिक्षा—स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्त।
प्रकाशित पुस्तकें खलिहान की रात, जंगल में मंगल, जातक कहानियाँ।
अप्रकाशित पुस्तकें—अनेक कविता संग्रह एवं निबन्ध संकलन। लोक साहित्य एवं बुन्देली संस्कृति पर विशेष ग्रंथ।
सम्मान प्रकाशित कृतियों पर विंध्य प्रदेश, मध्य प्रदेश उत्तर प्रदेश, तथा राजस्थान की सरकारों से पुरस्कार प्राप्त।
विशेष-मानवतावादी, एवंप्रगतिवादी विचार धारा के समर्थ साहित्यकार समजोत्थान के सशक्त एवं समर्थ तथा प्रौढ़ कवि।
सम्पर्क - वाणी विहार, भरतगढ़, दतिया (म० प्र०)

झूठों की बस्ती में ही तो रहना है सच बोल के

घोर अँधेरा छाया, किरण न दिखती आँखें खोल के,
झूठों की बस्ती में ही तो रहना है सच बोल के॥

भैंस उसी की जिसकी लाठी, यह परिभाषा न्याय की,
खेत खा रही बाड़ी खुद ही, यह दुर्दशा उपाय की,
स्वाभिमान की मौत, अहम् के जीवन भरे किलोलके। झूठों०

गरबोली संस्कृति भारत की बोध कराती जन-जन को
साँप पूजते आये हैं हम नाग पंचमी पावन को,
दुख देने वालों को भी हम सुख देते बिन मोल के। झूठो०

नट नागर का देश कभी था, आज नटों का देश हैं
जिनके गिरवीं हुआ आचरण, बटमारी परिवेश है,
भ्रमित कर रहे, डाल आवरण अम्बारों पर पोल के। झूठों०

खाना कपड़ा, गृह, उद्यम, निज शिक्षा, रक्षा आन की,
राह देखतीं सभी समस्याएँ अब अनुसंधान की,
बिना परिश्रम पाया जिसने वह क्या जाने तोल के। झूठों०

श्री मिस्टर अली पहलवान

जन्म—५ जनवरी १९३७ ई०
शिक्षा-एच०एस०, अदीवमाहिर ।
विशेष-दतिया चैम्पियनशिप कुश्ती कला
सम्पर्क- तलैया मोहल्ला, जनानी अस्पताल के पास, दतिया

क़ता

किसी दर्जे के हों लोग उस दर्जे को याद करते है ।
देना है जिन्दगी का इम्तिहाँ सही पर्चे को यादकरते है
बिगड़ने क़रीब हो जब जिन्दगी की मोटर ।
मेकनिक मिलके सही पुर्जे को याद करते हैं ॥
जो खर्च उनकी मर्जी के मुताबिक हुआ मिर्जा ।
फिर क्या खाक फिजूल खर्चे को याद करते हैं ॥

ग़ज़ल

मिलती है मुश्किलों से मोहब्बत कभी-कभी ।
भूले न भूलती है ये उलफ़त कभी-कभी ॥
हद है मेरे जप्त की कहाँ तक में अव करु ।
बटती है जवकि हुस्न की दौलत कभी-कभी
जुल्मों सितम का शिकवा में केसे कर सकूँ ।
आती होंठ पर मेरे जुर्रत कभी-कभी ॥
पास तेरे सब कुछ तू कुछ भी चाहे दे दे ।
जी चाहता है मांग लू ये दौलत कभी—कभी ॥
वे रुखी का तेरा क्या शुक्रिया करुँ ।
वहकाये दिल को मेरे यूँ नफरत कभी-कभी ।
इतने के वाबुजूद भी हम तेरे हैं मिर्जा ।
मिल जाये काश थोड़ी सोहवत कभी—कभी ॥

पं० श्री बाबूलाल दुबे 'निषंग'

जन्म—१ नवम्बर सन् १९३७ ई०
शिक्षा—साहित्य रत्न, प्रधान अध्यापक।
विशेष—समर्थ कवि, गम्भीर चिन्तक, प्रौढ़ रचनाकार सशक्त साहित्यकार, अनेक प्रेरणास्पद काव्य रचनाओं के प्रणेता।
सम्पर्क—गाँधी रोड, दतिया (म०प्र०)

'कविता'

जाने कैसे काम चलेगा, असमय युग के परिवर्तन में,
धरती से लेकर अम्बर तक, सभी तरफ नजरें उदास है।

चारों ओर लगी अँधियारी, हर अन्तर पीड़ा से भारी,
गली-गली कुहराम मच रहा, सिसक रही फूली फुलवारी।
उपवन के मन हैरानी है, हर भँवरे में शैतानी है,
कली-कली की अस्मत लूटे, अहंकार की मनमानी है।
जाने कैसे लाज बचेगी, लोलुपता के इस आँगन में,
जब आशा की ओर बढ़ रहे, भ्रष्टाचारी वाहुपाश है।
निर्बलता नीलाम हो रही, हर द्वारे पर साख हो रही,
नैतिकता का पता नहीं कुछ सुन्दरता बरवाद हो रही।

गली-गली ने होड़ लगाई, अहंकार की मची दुहाई।
पीड़ा के मधुवन के आँगन सिसक-सिसक कर चिता लगाई,
पौरुषता जब लुप्त हो गई, सुप्त हो गई हर अभिलाषा।
इसीलिये हर अन्तर मन से, सड़ा निकलता दीर्घ स्वांस है।

स्थारथ नित्य कला करता है, दुखिया हाथ मला करता है,
इसीलिये पतझर के द्वारे, दुर्दिन आज पला करता है।

कैसे हमसे पिंड छुड़ाए, कैसे अपना चरण बढ़ाए,
सूझ-बूझ की नादानी से कैसे अपना पंथ दिखाए।

जाने कैसे दान मिलेगा, ठगनी माया के हाथों से,
हर कंकाली काया घेरे मरघट पर अगनित विलास है।।

श्री सीताराम खरे 'मानस चातक'

जन्म—सन् १९३७ ई०

विशेष—बुन्देली के सशक्त रचनाकार, सहृदय एवं विचारक कवि, समाजोत्थान एवं जीवन मूल्यों की स्थापना के साहित्यकार, सफल मानस प्रवक्ता ।

सम्पर्क –शिक्षक, मु० पो० भाण्डेर, जिला–ग्वालियर ।

बसंत गीत

पर गए है डेरा बसंतन के, बागन में, आँगन में, हारन में ।
फूले-फूले रे फूले रे फूल बेलन में, डारन में ।।

बिरछन ने छोड़ दए बूढ़े विचार, पीरे पत्तन कों नेंचें दए डार ।
नए—नए कों लग गए संवारन में । बागन में० ।

बालन की ज्वानी लएँ गोंऊँ अऊँ मतया गए ।
पीरी-पीरी सरसों संग, झूम-झूम गा रए ।
दुकी हंसै अरसी झरोखन में ।। बागन में० ।।

प्यारी पवनियाँ जौ एँनई मस्ता गई,
हरें हरें चलै तौऊ जगां—जगां जा रई ।
रस सौ बगरा रई हजारन में ।। बागन में० ।।

पतरी छरैरी जो मौज भरी जा रई,
पटिया सी परें खूब खुशियाँ मना रई,
नदियाँ के आए पिया सालन में । बागन में० ।।

कोइलिया अपनों बजा रई अलगोजा,
कै रई है विरहिन, कै आग लगी सोजा ।
वड़े-बड़े गुन जा गमारिन में ।। बागन में० ।।

श्री जयवीर सिंह

'शिक्षक'

जन्म—५ जुलाई सन् १९३७ ई०

शिक्षा—बी० ए०, बी० एड०, संगीत-विशारद ।

बिशेष— सहृदय विचारक एवं शाश्वत जीवन मूल्यों के समर्थक समर्थ कवि ।

सम्पर्क रिछरा फाटक, दतिया ।

जब तक बजे साँस की वीणा

जब तक बजे साँस की बीणा,
तब तक राग बजायेगा ।
अपनी धुन में गायेगा ॥

ना जाने कब टूटे तार,
जाना है इक दिन उस पार ।
न जाने छूट जाये कब साथ ?
अभी तो तेरे साथ बहार,
बहुत तेज रफ्तार वक्त की ।
चला चल तू मत हिम्मत हार ॥
जब तक बजे......................

छूट गए जो संगी साथी।
वो पहुँचे उस पार ।
जब तक सधे कंठ में स्वर हैं ॥
तब तक उन्हें पुकार,
यही प्रेम का सच्चा नाता ।
यही प्रेम उपहार ॥
जब तक बजे......................

डॉ० श्री हरिशंकर शर्मा

जन्म २६ जुलाई सन् १९३७ ई०
शिक्षा –एम० ए०, (हिन्दी) पी० एच० डी०
विशेष–मानव जीवन मूल्यों के समर्थक कवि, लोक भाषा के सशक्त रचनाकार, पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित तथा आकाश वाणी से प्रसारित।
सम्पर्क—व्याख्याता–इन्टर कालेज, सेवढ़ा, जि० दतिया।

॥ गांवन की ओर ॥

कान थके सुन-सुन के शहरन कौ शोर,
नैन थके देख-देख फैशन को जोर।
फैशन कौ जोर चका चौंध सब ओर,
चलो चलें लौट बलम गाँवन की ओर।

बर्षा की रित में तालन की हिलोर,
फूलन सी बूँदें बदरा की घोर।
बदरा की घोर, पुरवइया झकोर, । चलो चलें०

बिजली के कोंदन की बाँकी मरोर।
बागन में, खेतन में, नाचरै मोर
नाचरै मोर लेंय सबके चित चोर। चलो चलें०
दुल्हैया की मुइयाँ सी घुँघट की ओट,
पियराई बदरई में सूरज की कोर।
सूरज की कोर, उअत पूरब की ओर, । चलो चलें०

साउन के झूलन पै इमरत से बोल।
कारस के, कजरी के, कौन करै मोल,
कौन करै मोल, लुटें हीरा करोर। चलो चलें०

चटकीली चुनरी लई गोरी ने ओढ़,
मेंहदी सें रचे हाथ चंदा – चकोर।
चंदा - चकोर, चकई - चकवा के जोड़, । चलो चलें०

श्री गुलाब चन्द्र अग्रवाल

बालिद 'मेम्बर'

जन्म—१५ अक्टूबर सन् १९३८ ई०
शिक्षा—हाईस्कूल
विशेष—विनम्र व्यक्तित्व, राजनीतिज्ञ एवं सार्वजनिक संस्थाओं के सहयोगी।
सम्पर्क—होली पुरा, दतिया (म० प्र०)

हज़ल

कहाँ तो तै था चिरागा हर घर के लिए।
तड़प रहे हैं जुदाई में हम डियर के लिए
वों ढीट आती नहीं है कभी खबर के लिए।

सगाई आज ही हो जाये लाख काना हूँ,
मिले जो आँख किराये की रात भर के लिए।

हमारे पास भी आयें उसे नहीं फुरसत,
खुशी को टाइम है लेकिन इधर-उधर के लिए।

दवा जुलाब की लिखदी है डाक्टर ने हमें,
हम अस्पताल गए थे इलाजे-सर के लिए।

हैं ऐसे साँडों के मानिन्द आज के लीडर,
न गाड़ियों के लिए हैं न हल-बखर के लिए।

जो आम राह में कीचड़ हुई तो हो जाये,
कि हमने नाली बनाई है अपने घर के लिए।

न बैठ पाओगे इन कुर्सियों पै तुम 'बालिद',
रिर्जव सीटें हैं ये तो चुखर-मिदर के लिए।

डॉ० हरिहर गोस्वामी

'मानस विश्वास'

जन्म—१ जनवरी सन् १९३९ ई०

शिक्षा—एम० ए०, पी० एच० डी० ।

पद-प्राध्यापक शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दतिया

विशेष—समर्थ एवं सफल मानस प्रवक्ता, गम्भीरचिन्तक, दर्शन, भक्ति एवं निरपेक्ष व्यवहार के समन्यवादी सिद्ध साहित्यकार, अनेक गद्य काव्यों, उपन्यासों तथा प्रेरक स्फुट रचनाओं के प्रणेता ।

सम्पर्क—मानस मन्दिर, चूनगर फाटक, दतिया ।

परम्परा और हम

युगों-युगों से, अपने चारों ओर जमे हुए,
मलवे को मैंने हाथों
फावड़ों और कुदालों से और
कभी-कभी बारूदी विस्फोटों से
भी इस कदर हटाकर, दूर फेंक दिया है कि
कभी-कभी बाथरूम के पास
हाथ धोने व लोटा मांजने के
लिए मामूली मिट्टी के लिए
फर्श पर बढ़ाया गया मेरा, अभ्यस्त हाथ
स्फटिक चट्टान की वज्र कठोरता
से टकरा कर नखों में खून, लेकर लौटता है, और मैं
गर्वीले चोट खाये, हिंस्र पशु की तरह
आहट दृष्टि से, चारों ओर देखता
गिरती हुई रक्त की बूंदों, को पोंछता रहता हूँ
पर एक मक्खी तक, सहानुभूति की भिन्नाहट
करती हुई पास नहीं फटकती
तब मैं सोचता हूँ कि मैं कितना रिक्त हो गया हूँ
कितना अकेला रह गया हूँ

श्री हमीर सिंह जी 'कृषक'

जन्म—१ जनवरी सन् १९३९ ई०

विशेष—बुन्देली लोकगीतों के समर्थ सिद्ध-कवि। मानव जीवन मूल्यों के समर्थक रचनाकार, समाज सुधारक साहित्यकार। अनेक लोकगीत प्रकाशित, अपनी कृतियों के माध्यम से अत्यन्त लोकप्रिय।

सम्पर्क -रुआराय, जिला—दतिया (म०प्र०)।

लोकगीत

॥ चौकड़ियाँ ॥

बिटियाँ परी बाप कौं भारें, जई दहेज के मारें।
कैसे ब्याह करै बेटी कों हाथी बंधो द्वारें॥
जी के घरै चार बिटियाँ हैं, काँ तक कोऊ सम्हारें।
ऊखाँ चोखो बाबा होनें, फिरनें झोरी डारें॥
"कृषक" हमीर कहैं जो मिथ्या तौं मोय राम विचारें॥

मैंटों जौ दहेज कौ चालौं, अपनौ भविष्य संभालों।
लेतन में सुख होत सबई कों, देतन परत कसालो॥
आज फूल रये, काल तुम्हें भी, बननें बिटियां वालों।
कुल समाज को करें कलंकित ऐसे बान न घालो॥
दीन-हीन कौं अपयँ जानकें, नोने भलें निभालो।
कवि "हमीर" संजय की शिक्षा, गा कें दै रये झालो॥

श्री ओम किशोर श्रीवास्तव

(चाचा)

जन्म—२ फरवरी सन् १६३६ ई०

शिक्षा—मैट्रिक।

व्यवसाय—शिक्षक, मा० वि० क्र० ३ दतिया।

विशेष—सहज एवं सहृदय समर्पित कवि, व्यंग्यकार तथा प्रौढ़ रचनाकार।

सम्पर्क—धमताल पुरा, दतिया।

ग़ज़ल

साहिल पै आगये हैं सफीने बहार के।
दिन कट गये खुशी से गमे-इन्तज़ार के।।
कहने को ज़माने में फसाने हैं बेशुमार।
सुनने को चन्द ही मिले पर जाँनिसार के।।
एक फ़िक्र है क़सम से और अम्नोंचैन है।
पहलू में बैठने को तरसते हैं यार के।।
इन महिरबानियों की सज़ा पारहा हूँ मैं।
ये कैसे खेल हैं मेरे परवरदिगार के ?
साहिल पै आगये है सफीने बहार के।
दिन कट गये खुशी से गमे इन्तजार के।।

'कविता'

इक्कीसवी सदी में नये परिवर्तन लायेंगे।
धरती पर गेहूं के बदले रुपया उगायेंगे।।
विदेशों में अपनी भी इज्जत होगी।
जाते रहते हैं वहाँ श्री महेश योगी।।
रजनीश जी का तो बही काफला था।
नये जाने वालों में मैं भी वहाँ था।।
बैठे खजूर तले हम हवा खायेंगे।
इक्कीसवीं सदी में नये परिवर्तन लायेंगे।

श्री बैजनाथ उदैनिया 'विमल'

शिक्षक

जन्म — १५ दिसम्बर सन् १९३९ई०

शिक्षा—एम० ए०, साहित्य-रत्न, साहित्यालंकार।

सम्पर्क—पो० उदगवां, जि० शिवपुरी (म० प्र०)

'देश अखण्ड रहेगा'

दलितों के शोषण पर अब तो, रोक लगानी होगी ;
बहुत हो चुकी अनहोनी अब, ऐसी कभी न होगी।
दलित, शोषितों, पीड़ित जन ने ली है अब अँगड़ाई ;
अनाचार से बदला लेने, नव चेतनता आई।

अति संघर्षण से चन्दन भी, अग्नि प्रकट करता हैं ;
अति दबाव से कीचड़ भी ऊपर उछला करता है।
इसीलिये सब भेद छोड़कर, दलितों की सीमा बांधो ;
पिछड़े मानव को संग चलने, अपने कंधे पर कांधो।

क्या सवर्ण ? क्या हरिजन होते, भेद मिटानाहोगा ;
दीन-दलित सब में होते हैं, यह निर्णय लेना होगा।
भेद भाव की खाई खोदना, अति संघातक होगी ;
है इसका इतिहास साक्षी हैं सब भुगते भोगी।

व्यापक दृष्टि बनानी होगी, मानव उन्नायक को ;
जनाक्रोश नहिं सहन करेगा, अन्धे अधिनायक को।
खण्डित क्रिया कलापों से नहिं, राष्ट्र अखण्ड बनेगा ;
शोषित-जन अर्न्तपीड़ा को, अधिक न सहन करेगा।

भीमराव, नेहरू, गान्धी की, बात समझना होगी ;
वर्तमान सन्दर्भो की भी, नीति समझनी होगी।
जाति, धर्म, रंग वर्ण, लिंग को संविधान नहिं माने ;
तो उसको सुखमय धारायें, क्यों न सभी पहिचाने।

श्री श्याम सुन्दर बंसल

कार्यपालन यंत्री, पी० एच० ई०, दतिया

जन्म -२५ अगस्त सन् १९३९ ई०

विशेष—युग निर्माण योजना से सम्बद्ध, मानवतावादी विचारक समाजसेवी व्यक्तित्व, जीवन मूल्यों के समर्थक, साहित्यकार, अनेक स्फुट रचनाओं के प्रणेता एवं प्रौढ़ सुकवि ।

क्षमा

तुम उसे
पत्थर मार रहे हो,
उसे
विधर्मी काफिर कहकर
दुत्कार रहे हो,
क्योंकि
उसने
उस पत्थर को ठोकर मारी है,
जिसको
तुम
भगवान समझकर
पूजते रहे हो।
तुम्हारा यह आक्रोश
बेमानी है।
उसे
क्षमा कर दो।
उसे
हृदय परिवर्तन करने का
अवसर दो।
उसे अपनी भूल
स्वयं

महसूस करने दो ।
तुम उसकी
ठोकर खाई उँगलियों को,
प्यार से
सहला दो, उस पर
मरहम रख दो,
अपनी आस्था को
किसी पर मत लादों ।
फिर, तुम देखोगे
कि
वह स्वयं पत्थर में
भगवान के दर्शन करेगा ।
अपनेमन में तुम्हारे हाँ तुम्हारे,
भगवान के प्रति
आस्था का दीपक जलेगा,
अपने
अंधेरे कोंनों को,
उससे उजालेगा ।
आदमी,
बनने का अवसर दो उसे,
क्षमा कर दो ।
फिर
तुम में और उसमें
बड़ा फर्क नहीं है
इस दूरी को
और न बढ़ाओ,
उसे क्षमा कर
अपने से क्षमा माँगलो,
क्षमा वीरस्य् भूषणम् ।

श्री अब्दुल रहीम ,शिक्षक

जन्म—१२ जनवरी सन १६४० ई०

शिक्षा –बी० ए० एवं अदीव कामिल ।

सम्पर्क—दाँतरे की नरिया, दतिया ।

विशेष -मानवतावादी विचारक एवं भावनात्मक गजलकार ।

ग़ज़ल

तुम से मुमकिन हो तो बालों में सजा लो मुझको
शाख से टूटने वाला हूँ सँभालो मुझको ।
कल का वादा न करो, कल तो कयामत होगी ।
कल न आयेगा कभी, कल पै न टालो मुझको ।
दूर होते हैं जमाने के अँधेरे मुझसे ।।
सूरते शमा हूँ जब चाहो जलालो मुझको ।
तुम से मुमकिन तो बालों में सजालो मुझको ।।
नाम है इश्क मेरा लोच है फितरत में 'रहीम' ।
चाहे जिस रूप में जिस रंग में ढालो मुझको ।।

(२)

दोस्तों से दुश्मनी करने लगे ।
जो न करना था वही करने लगे ।।
कर न पाये जो कभी शैतान भी ।
काम वो अब आदमी करने लगे ।।
दूसरों का घर जलाकर लोग अब ।
अपने घर में रोशनी करने लगे ।।
खुद अपने अमल पर न डालो नजर ।
'रहीम' अपनी अब - दी खोने लगे ।।

डॉ० कृष्ण बिहारी लाल पाण्डेय

शिक्षा—एम० ए०, (अँग्रेजी, हिन्दी) पी० एच० डी०
व्यवसाय-प्राध्यापक, शा० स्नातकोत्तर महाविद्यालय,दतिया
विशेष—प्रतिभाशाली चिन्तक, प्रगतिवादी विचारधारा के
सशक्त हस्ताक्षर,प्रौढ़ रचनाकार एवं समर्पित सुकवि
अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित।

जिन्दगी का कथानक

है कथानक वही आँसुओं से लिखा,
जिन्दगी सिर्फ शीर्षक बदलती रही।

जिन्दगी ज्यों किसी कर्ज के पत्र पर,
काँपती उँगलियों के विवश दस्तखत,
साँस भर-भर चुकाती रही पीढ़ियाँ,
ऋण नहीं हो सका पर तनिक भी विगत।
जिन्दगी ज्यों लगी होंठ पर बन्दिशें,
चाह भीतर उमड़ती मचलती रही।

तेज आलाप के बीच मे टूटती,
खोखले कंठ की तान-सी जिन्दगी,
लग सका जो न हिलते हुए लक्ष्य पर,
उस बहकते हुए बाण-सी जिन्दगी।
हो चुका खत्म संगीत महाफिल उठी,
जिन्दगी दीप-सी किन्तु जलती रही।

देखने में मधुर अर्थ जिनके लगें,
जिन्दगी सेज की सिलवटों की तरह,
जागरण में मगर रात जिनकी कटी,
उन विमुख करवटों की तरह जिन्दगी।
जिन्दगी ज्यों गलत राह की यात्रा,
इसलिये तीर्थ की छाँह टलती रही।

जिन्दगी रस भरे पनघटों-सी जहाँ,
प्यास के पाँव खोते रहे सन्तुलन,
जिन्दगी भ्रान्तियों का मरुस्थल जहाँ,
हर कदम पर बिछी है तपन ही तपन।
जिन्दगी एक शिशु की करुण भूख-सी,
चन्द्रमा देखकर जो बहलती रही।

श्री महेश कुमार मिश्र

'मधुकर'

जन्म – आषाढ़ कृष्ण ६ संवत् १९९८ वि०

शिक्षा – बी० ए०, संगीत प्रभाकर, आई० जी० डी०

व्यवसाय—शिक्षक

विशेष–सन् १९६३ ई० से देश की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओ में शोध-पूर्ण लेख और रचनाएँ प्रकाशित। आकाशवाणी के अनुबंधित गीतकार। जिला पुरातत्व संघ दतिया के सक्रिय सदस्य बुन्देली-हिन्दी-संस्कृत के सर्मपित सिद्ध सुकवि।

"गीत"

तुम अगर व्योम में, मेघ पनपा सको।
तो तुम्हें इन्द्रसा मान लूंगा अभी॥
यह धरा उर्वरा अब नहीं रह गई।
इसलिए बीज का अंकुरण थम गया॥
तुम अगर खेत में खाद डलवा सको।
तो तुम्हें ही कृषक मान लूँगा अभी॥

लोग हैं पर न जाने कहां खो रहे।
हँस रहे, रो रहे, मौन से हो रहे॥
देखता है न कोई किसी को यहां।
आँख खोले हुए भी सभी सो रहे॥
इन शवों में अगर चेतना ला सको।
तो तुम्हें देवता मान लूंगा अभी॥

कह रहा एक, बदलो पुराना चलन।
कह रहा दूसरा, व्यर्थ नव जागरण॥
लालसा अंकुरों की कटें पेड़ सब।
बरगदों ने बदल से दिये आचरण॥
तुम अगर क्रान्ति का अर्थ समझा सको।
तो तुम्हें युग, जनक मान लूँगा अभी॥

श्री राम स्वरूप सगर 'मानस हंस'

ग्राम छैकुरी. जि० दतिया।

जन्म तिथि- २ जनवरी सन् १९४१ ई०

शिक्षा—हायर सेकैन्ड्री। प्रधानाध्यापक पद पर कार्यरत।

प्रकाशन —नई शिक्षा, लोकगीत (भाग १-२), सुन्दर शिक्षा-कीर्तन।

'मरघट ज्वाला'

नश्वर तन को जला रही है जली नहीं मरघट ज्वाला
इसके आगे नहीं किसी की, चली कोई गड़बड़ झाला ।।
इस मरघट ज्वाला से बचने, भक्तों ने बहुयत्न किये !
फिर भी वह जल गये इसी में, जली नहीं मरघट ज्वाला ।।

जिस माता ने निज स्वारथ हित, जन्मा था प्रातः लाला।
छीन लिया है उसका जीवन, सांझ होत मरघट ज्वाला ।।
जिसका चक्षु बिन्दु मोती था, वह अखण्ड जलधार बहाकर।
कहती मेरा लाल जल गया, जली नही मरघट ज्वाला ।।

सोमधरा भी शीत हो गये, हुई न शीत मरघट ज्वाला।
क्षुधा बढ़ी है वैश्वानर की, जला चुकी है अलि माला ।।
इसकी लौ से बचे नहीं हैं, रामकृष्ण। गौतम गांधी।
रंक, राव, फक्कड़ औ धनपति, जल गई मनुबाई वाला ।।

प्रजापति अवधेश पंचसर कर्ण, दशवदन महिपाला।
राजेश्वर, योगेश्वर बन गये, धारण करके हरि छाला ।।
परम कृपाला दीनदयाला, बचे न फिर भी इसकी लौ से।
द्रव्याभूषण शेष रह गये, छत्र-मुकुट अरु मणि ज्वाला ।।

जीवनांत तक करता मानव, इससे बचने उपराला।
ताऊ नानी फेरा करती, ले कर में तुलसी माला
इस मरघट ज्वाला से बचने, प्राणी दूर भागते हैं।
लेकिन इक दिन 'सगर' सभी को, ले लेती मरघट ज्वाला ।।

—————

श्री कण्ठमणि बुधौलिया

'एडवोकेट'

शिक्षा— बी० ए०, एल-एल० बी०, संस्कृत प्रथमा
विशेष— लेखक, कवि, प्रगतिवादी विचारक, चिन्तक
सम्पर्क –कुंजन पुरा, दतिया ।

आज उनके एक हाथ में

आज उनके एक हाथ में कारतूस दूसरे में माऊजर है,
कल ही शान्ति मेले में उड़ाये थे उन्होंने कबूतर हैं ।

सब कुछ लुटा कर कांप रहीं हैं मैंमने सी प्रार्थनायें,
लोक-सेवक कुर्सी पर बैठे ये भेड़ियों के दफ्तर हैं ।

हम तो फसल हैं जाति की, धर्म की सियासत की,
काटते हैं वो जिनके हँसिये खून से तरबतर हैं ।

कुकर्मी शहर के आगोस में आ, दम तोड़ सी गई,
मेरे गाँव को ले जाती थी मित्रो ! जो प्यारी डगर है ।

समाजवादी-जूती पग में, सिर गठरी पूंजीवाद की,
तानाशाही राजमार्ग पर बकरे सा गांधी का स्वर हैं ।

ले धूप का टुकड़ा फुदकती गौरैया रोशनदान में ।
मुड़ेर पर है बिल्ली बैठी, नींव के नीचे अजगर है ।

सड़कों की साजिस तो देखो मुझे अकेला करने की,
दुर्घटना का साइनबोर्ड टंगा, उसके आगे मेरा घर है ।

कुँ० नारायण सिंह कटारिया

एडवोकेट

शिक्षा—बी० ए०, एल० एल० बी०

जन्म तिथि—२० मई सन् १९४१ ई०

सम्पर्क—राजगढ़ फाटक, दतिया (म० प्र०)

भारत को दुश्मनों से बचाना है साथियो

भारत को दुश्मनों से बचाना हैं साथियो,
दुश्मन को फिर से मार भगाना है साथियो।

तुम वीर भगतसिंह के साँचे में ढले हो,
हाथों में 'तिरंगे' को उड़ाना है साथियो।

सीने पर तुमने खाई है गोली कमाल से,
सीने को खोल सबको दिखाना है साथियो।

श्री कृष्ण ने गीता में दिखाया जो रास्ता,
फिर उसपै चलके, आज बताना है साथियो।

जो धूल थे कदमों की आज सिर पर चढ़ रहे,
फिर कदमों तले उनको झुकाना है साथियो।

जो तोड़ने की ताक में बैठे हैं देश को,
फिर उनको सबक ऐसा सिखाना है साथियो।

भारत के भाल पर तुम्हीं टीका लगाओगे,
भारत का मान तुमको बढ़ाना है साथियो।

श्रीमती ममता श्रीवास्तव

जन्म—१५ नवम्बर सन् १९४१ ई०

शिक्षा—एम० ए०, बी० एड०, एल०एल० बी०

विशेष क्षणिका विधा की कुशल रचनाकार, समाजसेवी एवं व्यवहार कुशल। कैप्टन-महिला रक्षा समिति, दतिया।

सम्पर्क—मकान न० १, हरदुआ बाली गली, दतिया।

कविता

दो अक्टूबर तीस जनवरी
केवल दो दिन
तुम्हें याद करता है,
बापू देश तुम्हारा।
लगता है मेला समाधि पर
केवल दो दिन।
हम भी सजते है खादी में
केवल दो दिन।
इसके बाद भूल जाते है
तुमको गाँधी,
क्योंकि हमें अच्छी लगती
पश्चिम की आँधी।

क्षणिका

नववधू के
दहेज कम लाने पर
सास ने कहा
बहू,
दहेज तो तुम कम लाई
फिर क्यों नही लाई
मिट्टी का तेल और
दिया सलाई।

सैयद अलमदार अली ज़ैदी

'अख्तर'

जन्म –२१ दिसम्बर सन् १९४१ ई०

शिक्षा—एम० ए०, अदीवे कामिल।

व्यवसाय – शिक्षक

विशेष—आदर्श शिक्षक, मिलनसार व्यक्तित्व, उदारवादी कवि।

सम्पर्क—पटवा वाली गली, दतिया।

मुक्तक

जिनसे हासिल हुई है आजादी
जिनकी तसवीर मुसकराती है।
अपनी जम्हूरियत के साये में
उन शहीदों की याद आतीहै।

ग़ज़ल

सारे जहाँ से आगे हिन्दुस्ताँ रहेगा।
उलफत का नवश बनकर जब तक जहाँ रहेगा,
मेरा दिले परेशाँ बनके फुगा रहेगा।
मानाकि जवतेगम से मैं काम ले रहा हूं,
आखिर निहाँ ये कब तक दरदे निहाँ रहेगा।
माना कफस में तेरे है लाख राहते भी,
दिल यादे गुलसिताँ में महवे फुगाँ रहेगा।
जिसको बगैर मेरे आये न चैन 'अखतर',
वो जिन्दगी मे कब तक दामन कुशाँ रहेगा।

वर्तमान—दशा

कोई फितना है ज़माने मे न कोई फितनागर,
अपनी-अपनी आग में खुद जल रहा है हर बशर।
जबगुलों की बेवफाई देखकर मै चल दिया,
खारे गुलशन चीख उट्ठे आप जाते हैं किधर।
अपनी अपनी जुसतुजु है अपने अपने रास्ते,
कौन किसका राहबर है कौन किसका हम सफर।
हमने देखा है 'अखतर' आजकल के दौर में,
वे हुनर भी बा हुनर है वा हुनर भी वे हुनर।

श्री तुलसीराम दांगी

जन्म—२ मार्च सन् १९४२ ई०
स्थान—ग्राम विराटा, जिला झाँसी (उ० प्र०)
शिक्षा—बी० ए०, एल० एल० बी०
व्यवसाय—वकालत दतिया
विशेष—प्रगतिवादी विचारक, चिन्तक एवं समाजसेवी तथा साहित्यिक रुचि के व्यक्ति।

❦ इस कविता में उस समय का वर्णन हैं, जब विराटा की पद्मिनी, 'कुमुद-पालर' से विराटा पहुंचकर दुर्गा माता के मन्दिर में पूजन करती हैं।

वेत्रवती के तट पर

कोमल अंगों वाली आयी गामिनी।
वेत्रवती की लहरों की रागिनी।।

मृगनी जैसी चंचल उसकी चालपर,
तलवारें भी रुक जाती हैं ढालपर।
खुशी कुमुद पर आज बहुत पंचाननी। कोमल अगों० ।।

कामदेव का वाहन 'शुक' भी बोलता।
मुग्ध हुआ पत्ता-पत्ता है डोलता।
नव बधुओं के सिर पर चमके दामिनो। कोमल अंगों ।।

सेना नायक, अनी किनी सब मस्त हैं,
अंगपाल और अहलकार भी मस्त हैं।
आज नगर में आती हँसती नाम्नी। कोमल अंगों ।।

तिलतिल चलकर पहुँच गयी वह चौर पर,
सुनी खबर जब सबदल आये दौड़ कर।
आज सेविका की पूजा पर प्रसन्न कपालिनी। कोमल अगों० ।।

क्षेमकरी आवाजें आयीं दूर से,
बातें बच्चे करते हँसकर, धूर से,
आज कुमुद से मिल रही सिंह वाहिनी। कोमल अंगों० ।।

श्री प्रकाश चन्द्र विलगैयाँ

जन्म—१-७-१९४२ ई०।
व्यवसाय - शिक्षक
शिक्षा—बी० ए०, बेसिक ट्रेन्ड
विशेष—जीवन मूल्यों की समर्थक विचारधारा के समर्थ साहित्यकार, समर्पित कवि एवं चिन्तन—रत व्यक्तित्व ।
सम्पर्क—विलगैयाँ सदन, चूनगर फाटक, दतिया

ग़ज़ल

जाने क्यों इस कदर बदल गये हैं लोग ?
अपने ही घर में अज़नवी बन गये हैं लोग ।

ज़िन्दगी के मूल्य सारे चुक गये हैं अब।
अपने आप में इतने सिमिट गये हैं लोग।

हाथ को हाथ की पीड़ा का नहीं अहसास।
खून के रिश्तों से इतने कट गये हैं लोग।

खुद्दारी और इन्सानियत की बात क्या करें ?
गैरत से, आदमियत से दूर हट गये हैं लोग।

श्री कमलेश कुमार श्रीवास्तव

जन्म—१ जुलाई सन् १९४२ ई०

व्यवसाय—व्याख्यता, बी० टी० आई० दतिया

बिशेष—कवि, साहित्यकार एवं संपादक, अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित।

सम्पादन कार्य—पुस्तक 'दतिया की विभूतियाँ।'

सम्पर्क—राजगढ़ फाटक, दतिया।

भैरव जी तेरी इक आशा

भैरव जी तेरी इक आशा।
और कहाँ तक रहूं प्यासा ?
तेरी सेवा में तन-मन से।
बीते दिवस वर्ष और मासा।

मिला सहारा जबसे तेरा,
आनन्दित है मन ये मेरा।
तोड़ो दुःख-दर्दों का घेरा,
या उठवा दो मेरा डेरा।

अब जल्दी पलटो ये पासा,
आगे करो न और तमाशा।

अब तो लगे न जीवन अपना,
सुखमय, सहज, सुघर यह सपना ?

मुझको लगी एक ही रटना,
नाम करुँ तेरा कब जपना।

रो रोकर कहता यह दासा,
देवि पुत्र ! मुसकाओं ज़रा सा।

श्री घनश्याम यादव

जन्म -सन् १९४२ ई०

विशेष—साहित्यिक रुचि के सरल व्यक्ति।
सम्पर्क—ग्राम ऊँचिया, दतिया

नर होकर हम क्यों हों निराश ?

सुर दुर्लभ तन हमने पाया,
वेदों ने जिसका यश गाया।
हम हैं कितने गौरव शाली,
सब जीवों से सुन्दर काया।
    प्रभु-दत्त प्रकृति की सब चीजें,
    दिन रात हमारे आस-पास। नर होकर०॥
मकड़ी बुनती जब जाल घना,
तब वह भर पाती उर अपना।
वह करके कठिन परिश्रम फिर,
करती भोजन आनन्द सना।
    हम मानव फिर क्यों अकर्मण्य ?
    बस इसीलिये हम हैं उदास। नर होकर०॥
हीनाङ्ग उदर भी भर लेते
कुछ बचा और को भी देते।
रहते पशु पंछी क्या भूखे,
नर अब तक किन्तु नही चेते।
    जीवन का लक्ष्य न केवल धन,
    हो लक्ष्य, न हो गौरव विनाश। नर होकर०॥
अपनों के लिए सभी जीते,
रोते—गाते खाते—पीते।
निज जन्म बिताकर सब अपना
रहते हैं रीते के रीते।
    पर हेत जियें यह जीवन है।
    औरों के हित में हों प्रयास। नर होकर०,

श्री बैजनाथ अहिरवार

जन्मतिथि—६ फरवरी सन् १८४३ ई०
शिक्षा—मिडिल पास ।
व्यवसाय—नगर पालिका में सिपाही के पद पर कार्यरत ।
विशेष—मानव जीवन की मूल भूत भावनाओं से जुड़े हुये व्यक्ति । काव्य के प्रति सहज रुचि ।

रही जरूरत रोटी की

शिरदार है सभी जगत में, सुनो हकीकत रोटी की ।
शुरूआत से खतम-सुदा तक, रही जरूरत रोटी की ।

रोटी का है चमत्कार, सब देख रहे हैं आँखों से ।
यहां किसी की भूख मिटै, बादाम न पिस्ता दाखों से ।।
दो रोटी के लिये कई, कर्जदार बने हैं लाखों से ।
रोटी के पश्चात् जगत में, ढेर लगे हैं राखों से ।।
दुनिया भर में व्यापक है, सभी नजाकत रोटी की ।
शुरूआत से खतम सुदा तक, रही जरूरत रोटी की ।।

समबन्धित हैं रोटी से, दायर केश अदालत में ।
रोटी पर ही खींचतान हो, होती वहिश वकालत में ।।
कभी—कभी तो रोटी खातिर, होते बन्द हवालत में ।
रोटी की है जटिल समस्या, मैजूदा इस हालत में ।।
वा मुश्किल से कर पाते हैं, पैदा सूरत रोटी की ।
शुरूआत से खतम-सुदा तक, रही जरूरत रोटी की ।।

मारे मारे फिरते है, देखो जो रोजी रोटी को ।
इन्कलाव से पटकेगें, मँहगाई उच्च कोटि की ।।
करें सामना हट करके, हम रखे न स्थिर बोटी को ।
वैजनाथ कह गीत बनाकर, हासिल करिये रोटी को ।।
रोटी बंचित जीना मुश्किल, पहले फिदरत रोटी की ।
शुरूआत से खतम-सुदा तक, रही जरूरत रोटी की ।।

श्री भागीरथ जाटव

जन्म—२ मार्च १९४३ ई०
व्यवसाय-तहसीलदार, डबरा (ग्वालियर)
शिक्षा—बी० ए०।
बिशेष—प्रकृति प्रेमी, शृंगार प्रिय एवं प्रगतिवादी कवि, प्राचीन एवं नवीन के समन्वयक। दो कविता संग्रह प्रकाशित।
सम्पर्क—भदौरिया की खिड़की, दतिया।

'प्यार की फटकार'

प्यार की फटकार भी, कितनी मधुर है;

कमल लहरों के अधर मृदु चूँमता है,
मत्त मादक प्रेम में वह झूँमता है;
यद्यपि लहर चंचल उसे झक झोरती है,
किन्तु फिर भी, कंज का मृदु मुख मुखर है;
प्यार की फटकार भी कितनी मधुर है!

जब श्याम बादल घेर लेते नील अम्बर,
तब नाचते होकर मुदित मन, मोर सुन्दर;
यद्यपि कि घन, प्रियमोर को, कटुगर्ज कर ललकारता है,
किन्तु फिर भी मोर नच-नच कर सुनाता, रुचिर स्वर है;
प्यार की फटकार भी कितनी मधुर है!

प्रेमिका अपनी लखी बस दूर से ही—
श्वान प्रेमी हो गया. बस एक क्षण के घूरते ही;
यद्यपि कि कुतिया प्रेमिका,हरवार खौं-खौं कर उसे दुदकारती है
किन्तु फिर भी दुम हिला, पीछे फिरे प्रेमी कुकर है;
प्यार की फटकार भी कितनी मधुर है!

श्री सियाशरण भट्ट 'वज्र'

जन्म १६ अगस्त सन् १९४३ ई०
शिक्षा-हाईस्कूल।
विशेष—भक्त कवि, नेतृत्व प्रधान व्यक्ति।
सम्पर्क—धमताल पुरा, दतिया

काली कपाली माँ

काली, महाकाली, भद्रकाली, कपाली माँ,
रिपुदल संहारवे को ब्रह्म अस्त्रवान हो।
विप्रन के पालवे को कारण सँभारवे को,
मोरे हित जानवे को आप वरदान हो।
भद्रावति नगरी में आयें पाँच बरस भये,
भई का चूक मोसें मैं तो अज्ञान हों।
कौन ढिग जाऊँ और कौन को मनाऊँ मातु,
आप विश्व व्यापी और आप ही जहान हो।
अब देर जिन लगाओ, शीघ्र शरन में बुलाओ मातु,
मैं तो अज्ञानी किन्तु आप तो महान हो।

गली-गली छानो, तौ बात नहीं मानी।
का बतायें कैसे किताब छप पाई है।

हे माँ! मंगल कारिणी, मै मूरख मतिमंद,
कृपा करो निज दास पर, रचजायें कछु छंद।
रच जायें कछु छंद, आपकी स्तुति गाऊँ,
सदा रहे सानिध्य, चरण में शीश नवाऊँ।
शीश नवाऊँ चरन में, आराध्या जग माता हो,
बगलामुखी के नाम से आप जगत विख्यात हो।

कह 'बज्र' कवि मित्र, आप जग माता ठहरीं,
लेवे को माँ थाह, आप तो सबसे गहरी।

डॉ. रामेश्वर प्रसाद गुप्त

जन्म– २१ जनवरी सन् १९४८ ई०

शिक्षा –एम०ए० (संस्कृत, हिन्दी) पी-एच०डी०, स्वर्ण पदक प्राप्त

कृतियाँ– शिवाजी महाकाव्य, भरत काव्य, गुरु गोविन्द सिंह के दो बालक (काव्य), मायावती (उपन्यास), भारतीय एकता (एकांकी नाटक), कुण्डली कुञ्ज, दोहा शतक, श्रीमती का सैकड़ा (व्यंग्य रचनायें), सरदार पटेल (काव्य), इन्दिरा शतक (राष्ट्रीय काव्य) सवैया सिन्धु, बजरंग विनय (वर्ण-अनुक्रमण से अनुबन्धित कवित्त-काव्य), रामायण में राजनीतिक तत्व (शोध ग्रन्थ), संस्कृतसुधा भाग २ (सम्पादन) अनेक स्फुट रचनायें।

विशेष—राष्ट्र भक्ति से परिपूर्ण एवं मानवतावादी जीवन मूल्यों के पोषक, प्रौढ़ साहित्यकार एवं सुकवि।

सम्पर्क –प्राध्यापक,(संस्कृत), सिविल लाइन्स, दतिया।

मातृभूमि ही श्रेयस्कर

यों तो स्रष्टा के सुसृजन के सर्व सर्ग ही सुन्दर हैं।
शैल,शिखर, सरिता, सरवर, निशिचर, दिनकर भी मनहर हैं।
सर्व सृष्टि ही प्रिय है, हर घर भूषित भव-भावन भू पर।
सर्व श्रेष्ठ मानव को लेकिन मातृभूमि ही श्रेयस्कर॥

रम्य हर्म्य, मञ्जुल मृदु मनहर मणियों की गुम्फित माला।
अभ्यवहार्थ शोण मज्जा की खुली हुई सुन्दर शाला।
अगरु धूप से धूपित सुरभित सुमन सुवासित हो पय, पर।
प्रिय न बन्ध स्वच्छन्द, नाग को मातृभूमि ही श्रेयस्कर।

कनक रजत विरचित सुकूट हो चित्र विचित्र विहंगम हर्म्य।
ज्योति-पुञ्ज सम जिस पर हों आकृष्ट प्राणियों के मन रम्य।
ललित केलिगृह मञ्जुल मनहर मणिमाणिक निर्मित पिञ्जर।
विविध भोज्य, पर रुचि न शुकी को जन्मभूमिही,श्रेयस्कर॥

विबुध धाम से भी अति प्रियतम जन्मभूमि की पावन रज।
शोभित सुरभित सुखद शस्य सह सुन्दर शिव शोभन सजधज।
शीश समर्पित सदा सुरक्षाहित बसुधा के कण-कण पर।
अमर रहे यह भारत भू, यह मातृ भूमि ही श्रेयस्कर॥

श्री हरीराम पहारिया

जन्म—सन् १९४४ ई०

विशेष—सशक्त गीतकार ।

गीत

कोई ऐसा जतन कर पाऊं ।
मैं चंदन बन जाऊं ।

छोड़ चला सुख की गलियां, अपने पिछैय्यां,
याद आये, भर आये, नयन तलैयां ।
बीती कैसे अब बिसराऊँ ?

पीर मेरी साथिन बनके संग-संग डोले ।
बावरी है रुठी रहे, अधर नहीं खोले ।
पल-छिन पीड़ा को दुलराऊँ ।

पगली उमरिया की राह अलबेली रे ।
कौन जान पाया इसे, समय तो पहेली रे ।
गाकर अन्तर को बहलाऊँ ।

श्री कृपा शंकर त्रिपाठी

जन्म—१ जनवरी सन् १९४५ ई०

शिक्षा—बी० ए०, संस्कृत शास्त्री (बनारस)

प्रकाशित संकलन—सभा की सात बाते, मानस के मार्मिक प्रसंग, आकाशवाणी से रचना प्रसारण।

अप्रकाशित अनेक छुटपुट रचनायें।

रुचि—मानस स्वाध्याय, प्रवचन ज्योतिष संगीत।

सम्प्रति—प्रधानाध्यापक प्रा० विद्या०, भलका, जि० ग्वालियर।

सम्पर्क—श्री राधे आइल मिल-भाण्डेर रोड, इन्दरगढ़।

'कविता'

जो मुझ छोड़ते जाते हैं मैं उन्हें छोड़ता जाता हूँ।
कितना नाजुक गाँठ गठोला, संबधों का धागा है।
जिसने मुझको दुहरा तिहरा बांधा है।
ये गाँठे खुल भी सकतीं है मैं तभी सोचता जाता हूँ।
मैं यही सोचता जाता हूँ। ....

प्रेमी मेरे भाग्यवान हो किन्तु परीक्षा से पहले।
शायद कोई साथ निभाने अपनी इच्छा से पहले॥
परमारथ का नहीं स्वार्थ का नाता छोड़े जाता हूँ।
मैं यही सोचता जाता हूँ।......................................

कितने प्यार से मीठे शब्दों में मीठा-मीठा बिष घोलते हैं।
तलस्पर्शी बोली कोयल क्या बोलेगी, जैसी ये बोलते हैं॥
मैं अब भ्रमित नहीं हूँ मणि बने काचों को तोड़ता जाता हूँ।
मैं यही सोचता जाता हूँ।......................................

जग मैं कुछ नहीं केवल जग जाल ही जानना है।
कुछ नही मानते तों न मानो पर ईश्वर को मानना है॥
जो रहस्य बनकर रह गये उन्हें खोलता जाता हूँ।
मैं यही सोचता जाता हूँ।......................................

श्री महेन्द्र कुमार राय

जन्म २८ मार्च सन् १९४८ ई०
शिक्षा—एम० ए० (अपराध शास्त्र एवं न्यायिक विज्ञान), एल० एल० बी० (आजीवन सदस्य भारतीय लोक प्रशासन संस्थान, नई दिल्ली) महासचिव एवं कोषाध्यक्ष, म०प्र० नगर पालिका अधिकारी सघ, मुख्य नगर पालिका अधिकारी दतिया।
विशेष- प्रशासक के साथ-साथ साहित्यिक अभिरुचि के सहृदय साहित्यकार तथा सुकवि।
सम्पर्क—फिल्टर, दतिया।

[पत्नी स्व० श्रीमती उर्मिला देवी को समर्पित]

श्रद्धांजली

तुमने दुनियाँ छोड़ दी अब कहाँ पाऊँ तुम्हें।
दिल में क्या दर्द है कैसे दिखलाऊँ तुम्हें।
खिदमते दुनियाँ को छोड़ के जन्नत भी न भाएगी।
दीन दुखियों की जब तुमको याद-याद सताएगी।।
सिसकियां लेती हुई माँ बहनें जब आएगी।
या सो गम से जब वे मायूस लौट के जाएगीं।।
तुमने दुनिया छोड़ दी .... ।।

पसंद आते नहीं अब गुलजार मुझे।
नजर आने लगे अब गुलों में खार मुझे।।
दिखने लगी जिन्दगी अब बेकार मुझे।
अपने भी नजर आते हैं अब पराए मुझे।।
तुमने दुनियाँ छोड़ दी .... ।।

आ जाओ कि जान पे बन आई है।
देखो मर न जाऊँ मैं दिल में बन आई है।।
यह कैसी दिल पे गम की घटा छाई है।
निराश हर कली है देखो हर बेल मुरझाई है।
तुमने दुनियाँ छोड़ दी .... ।।

मालूम न था यों छोड़ के जाओगी।
गर्दिशे माहौल में अकेला छोड़ जाओगी।।
एक बार जाकर फिर लौट के न आओगी।
यमदूतों के डर से दिल तोड़ के जाओगी।।
तुमने दुनिया छोड़ दी..।।

मोड़ के मुंह दुनियाँ से जो जाता है।
छोड़ के स्वर्ग कौन यहाँ आता है।
वहां न मय है जो सबको भुला देता है।
बेगानों को अपना, अपनों को बेगाना बना देता हैं।।
तुमने दुनियाँ छोड़ दी ....।।

खौफनाक बड़ा वह समा होता है।
कूच जब यहाँ से वहाँ होता है।।
सातवें आसमान पर जब आत्मा जाती है।
पाप और पुण्य का हिसाब वहीं होता है।।
तुमने दुनियाँ छोड़ दी ....।।

उम्मीद न थी यों छोड़ के जाओगी।
दुनियाँ से हमारी मुँह मोड़ के जाओगी।।
भरोसा था तुमसे न बिछड़ेंगे कभी।
पैदा होते ही मेरी दुनियाँ नई बसाओगी।।
तुमने दुनिया छोड़ दी..।

इतना तो बताओ याद करूँ तो आओगी।
जलवागर होकर कभी मुझे सीने से लगाओगी।।
जब याद आए तो आप भी जरूर आना।
दुनियाँ में नहीं तो ख्वाबों में समा जाना।।
तुमने दुनियाँ छोड़ दी..।।

आप की याद ही जीने का सहारा है।
वरना इस दुनियां में कौन हमारा है।।
दिल में जब तक है मधुर याद आपकी।
यही दौलत है मेरी यही जिन्दगी का सहारा है।।
तुमनें दुनियाँ छोड़ दी..।।

अब्दुलसत्तार ख्याल मन्सूरी

जन्म—१० -५—१९४५ ई०
शिक्षा—मिडिल पास।
विशेष—गायक एवं गीतकार।
सम्पर्क—शेखों का मोहल्ला, दतिया।

ग़ज़ल

जाने क्या लिखा है, मेरी हयात में।
जल गया घर हमारा बरसात में,

व.र्क ने कर दिया खाक नशेमन मेरा,
क्या से क्या हो गया एक ही राह में ?

ग़म ही ग़म क्यों दिये, देने वाले मुझे,
इक हम तो न थे तेरी कायनात में।

अश्क पी लेंगे, रो रोके जी लेंगे हम,
हम खुशी तुमसे न लेंगे खैरात में।

चाँद छुप जायेगा, तारे शरमायेंगे,
आप आये अगर चाँदनी रात में।

बेखुदी में तुम्हें बेवफ़ा कह दिया,
आप ख़फ़ा हो गये बात ही बात में।

'खयाल' सोचा न था, ऐसा हो जायेगा,
वो मेरे हो गये पहली मुलाकात में।

श्री पी० एस० सूर्यवंशी

'उपयंत्री'

जन्म –८ मार्च सन् १९४६ ई०

सम्पर्क—जी–१०, राजघाट कालोनी, दतिया।

विशेष—साहित्यिक रुचि के व्यक्ति।

यौवन–सुधा

तुम यौवन दीप जला दो ता,
हम स्नेह–सुधा बरसा–देंगे।
तुम्हारे माथे की बिंदिया से,
जीवन की ज्योति मिलती है।
भूले मन को पथ दरसाने,
बिजली सी मांग दमकती है॥
तुम लट को गर बिखरा दो तो,
हम यामिनी में शशि बना लेंगे।
कमल सी तेरी आँखों से,
सम्मोहन मंत्र छलकता है॥
नथुनी से मुखड़े मैं लगता,
दूजा का चाँद चमकता है।
तुम मुस्का–के अधर से भरलो तो,
सावन का सतरंगा चाप बना लेंगे॥
रंगों पर रंग जमाने को,
मेहदी को श्याम रचाती हो।
कुछ सोये भाव जगाने को,
पायल को मुखरित करती हो॥
तुम कदमों से कदम मिलालो तो,
हम गीत बसंत का गा लेंगे।
तुम यौवन दीप जला लो तो,
हम स्नेह सुधा बरसा देंगे॥

श्री मती राजदुलारी लक्ष्मी देवी भट्ट

जन्म—७ मई सन् १९४४ ई०

विशेष—भक्ति भावना से ओत प्रोत, सहृदय कवियत्री।

सम्पर्क—श्रीमती राजदुलारी भट्ट, पत्नी श्री सीता राम भट्ट
संगीतज्ञ, दतिया।

झूला

झूलें सिया रघुराई हिंडोला बगियन,
आम की डारन घलेहैं हिंडोला।

मेघ घटा नभ छाई हिंडोला,
नैनी-नैनी बुंदियन मेह बरसैं।
पवन चलत पुरवाई हिंडोला,

सिया जू की भींजे सुरंग चुनरी।
रघुवर मुकुट हजारो हिंडोला,

'राजदुलारी' इन चरनन पै।
वार-बार बलिहारी हिंडोला,

श्री द्वारिका प्रसाद विश्वदेवा 'निडर'

जन्म—३ जुलाई सन् १९४८ ई०
शिक्षा—हायर सेकेन्ड्री
व्यवसाय—केशियर, पंजाब नेशनल बैंक, इन्दरगढ़।
विशेष-संस्कृति के पोषक, प्रौढ़ कवि।
सम्पर्क—गोविन्द गंज के पीछे, दतिया।

चौराहे पै ठाँड़े होकें ना तुम लड़ो लड़ाई

चौराहे पै ठाड़े होकें ना तुम लड़ो लड़ाई,
दादागिरी करना छोड़ो जामें नही बड़ाई।

बैसें ही तो तुमनों नइयां सूखे चना चबावे,
दीन दशा है बहुत तुम्हारी दौलत नही मिटावे।
छोड़ो नेता गिरी करना, करलो यार पढ़ाई।

माता पिता के दिल से पूछो कैसे तुम्हें पढारये,
अपनी इज्जत गाने धरके, फिर भी तुम्हें खवारये।
फीस मांग कर रुपया लाये कर रये यहाँ सफाई।

घर सें बस्ता लेंके आये बागन में बिरमा रये।
मात पिता समझे पढ़वे गये, लल्लू मजा उड़ारये।
आँखे मीचे फिर भी तुम तो लादे वेशरमाई।

अगर न पढ़ने हौवै तुमको सच सच घरैं बतादो,
कहदो साफ पिता से, हमको हिल्ले सिर करवादो।
चकमा दो ना घरबालों को जामें निहित भलाई।

लगत फालतू लड़का दुश्मन सबको यह बतलावैं।
हम पर बीत चुकी है लल्लू जासें हम समझावैं,
पढ़ने हो तो पढ़ो लगन से नातर करो कमाई।

अगर न सुधरो रंग रबइया, तो तुमको दुखदाई,
रिस्ते नाते दार छड़क हैं हुई है नहीं सगाई।
पक्कयात होना भी मुश्किल सपनेहु नही मिठाई।

सार लड़ाई में का रक्खो होती सिरिफ बुराई।
मिलजुल कें तुम चलो जगत में समझों सबको भाई,
कहैं 'निडर' कवि सीख सलोनी इसमें ही चतुराई
चौराहे पै टाडें होकें ना तुम लडो लडाई॥

श्री भगवान दास पाठक

जन्म—११ मार्च सन् १९४९ ई०   पत्रकार

शिक्षा—एम० ए० (अर्थ०)

व्यवसाय—संपादक—दतिया की आवाज।

सम्पर्क- छोटा बाजार, दतिया।

विशेष- निर्भीक पत्रकारिता के हेतु अखिल भारतीय पत्रकार संघ द्वारा सम्मानित। काव्य सृजन में सहज रुचि।

"मैंने"

मैंने दिल की तमन्नाओं को संजोया था
तुम्हारे लिये।
प्यार का फूल बड़े प्रेम से पिरोया था
तुम्हारे लिये।
तुम्हारे प्यार को किस तमन्ना से
सीने लगाया था।
तुम्हें अगर मालूम होता तो तुम दौड़े
चले आते।
और लिपट जाते मेरे बदन से,
चूम लेते मेरे जिस्म को अपने कोमल
थरथराते होंठो से।
पर तुम ने हमें समझा नहीं,
परखा नहीं,
और कर दिया बदनाम।
बेबुनियादी सवालों को मेरे ऊपर थोपकर
अब मै घुट घुटके जी रहा हूँ।
और पी रहा हूँ आपकी तमन्नाओं का लहू।
फिर भी मेरी दिली तमन्ना है
तुम जहाँ भी रहो
खुशहाल रहो, आनन्द रहो।
यह में दिल से कहता रहता हूँ,
अब तुम्हीं फैसला करदो,
कि ऐसा क्या किया मैंने।

प्रो० पी० आर० शुक्ल

'रवि'

जन्म—६-६-१६४६ ई०

शिक्षा—एम० ए० (समाज शास्त्र)

विशेष—कहानीकार, सम्पादक, पत्र-पत्रिकाओ में प्रकाशित, अनेक कृतियों के रचयिता समर्पित साहित्यकार।

सम्पर्क—३, गोविन्द गंज, दतिया (म० प्र०)

'प्रश्न ?'

क्यों जलते हो हे! रवि तुम,
हर तम, प्रकाश फैलाते हो।
किसके वियोग में निशि दिन ?
अपना सर्वस्व लुटाते हो।

ग्रीष्म की कड़ी दोपहर में,
क्यों निर्दय पवन चलाते हो ?
अतिशय वियोग में भरे हुए,
तुम किसके गीत सुनाते हो ?

नित अरुणौदय की लाली बन,
तुम किसे ढूढ़ने आते हो ?
सन्ध्या मलीन मुख लिये हुए,
क्यों रोते से छुप जाते हो ?

है कौन तेरा प्रियतम हे! रवि?
तुम किसके लिए तड़फते हो,
वेदना हृदय में लिये हुए,
तम किसके लिएं सिसकते हो ?

सहकर नित जलने की पीड़ा,
जग में प्रकाश फैलाते हो।
निशि में तुषार का रूप लिये,
क्यों आँसू नित्य बहाते हो ?

श्री वीरेन्द्र जैन

जन्मतिथि— १२ जून सन् १९४९ ई०
शिक्षा— बी० एस-सी०, एम० ए०
व्यवसाय— नौकरी (बैंक में)
विशेष—सशक्त गीतकार, श्रेष्ठ व्यंग्यकार, प्रभावी साहित्यक चेतना से सबन्धित कवि। प्रगतिवादी साहित्यकार।
सम्पर्क— पुराने जेल के पीछे, दतिया (म० प्र०)

बुन्देली गीत

तीस दिना तक काम करावै
तौई न देवै मइना।

तुमई बता दो साउकार
अब मैं हों या जौ बनियाँ।

काम की बेरां गटा निकारै,
दाम की बेरां काल खौं टारै।

टेढ़ी टेढी आँखें करकें
घूरै मोरी धनियाँ।

तुमइं बता दो साउकार
अब मैं हों या जौ बनियाँ।

अपनौ होवै, ब्याज लगावै,
मेरौ है, सो दूर भगावै

जी दिन एका करकें चढ जैं
खुल जै है परदनियाँ।

तुमई बता दो साउकार
अब मैं हों या जौ बनियाँ।

श्री महेश लाक्षाकार 'अनुरागी'

जन्म—१ जनवरी सन् १९५० ई०
शिक्षा हायर सेकेन्ड्री।
विशेष—काव्य सृजन के प्रति सहज अभिरुचि।
सम्पर्क—पीताम्बरा चूड़ीगृह, गांधी रोड, दतिया।

अल्हड़पन

मेरे बचपन के अल्हड़पन को
यौवन लेकर जब उछल पड़ा।
मधुमास मिलन की वेला थी
मधु प्रणय लूटने मचल पड़ा।

मुश्काई बौरी आँखो ने
नभ तारों का संकेत दिया।
है निश्चलनिधि इन प्राणों में
मन प्राणों ने अभिषेक किया।
प्राणों से प्रिय आकर्षण
पाने को दिल मचल पड़ा।
मेरे..

झंकृत हो उठे प्राण-प्राण
मन पुलकित होकर झूम उठा।
प्राणों से प्रिय दर्शन पाकर
मन व्यथा भरा दिल झूम उठा।
जब मन मुखरित झाँकी देखी
मन मृदुल तरल सा पिघल उठा।

व्यथा भरे जीवन में मैं
प्रिय की मनुहारें क्या जानूँ ?
भव सागर में गोते खाकर
स्वर्णिम यादें मैं क्या जानूँ ?
प्रिय मिलने की निश्छलता में
यह मन अनुरागी, मचल पढ़ा।

श्री चन्द्र प्रकाश पटसारिया

जन्म –२४ मई सन् १९५० ई०
शिक्षा—एम० एस-सी०, बी० एड०
सम्प्रति व्याख्याता, शा० उच्च० मा० विद्यालय, इन्दरगढ़ जिला, दतिया।
विशेष—कई पत्रिकाओं में प्रकाशित, काव्य सृजन में सहज अभिरुचि।

"दतिया की बात निराली है"

इस नगरी के पूरब-पश्चिम, भरे सुहाने ताल हैं,
पंचम कवि, उड़नू सु टौरिया, रक्षक खड़े बिशाल हैं।
बीच नगर में बाग-बगीचे, दिखलाते हरियाली है।

बस स्टैंड पर गल्लामंडी, यहीं बना स्टेडियम।
श्री गोविंद भवानी पारक, किला चौक बाजार गरम,
सब्जी मंडी बड़ा डाकघर, पास यहीं कोतवाली है।

२०२५ वर्ग है (किलोमीटर) पूर्ण क्षेत्रफल इसे मिला,
उत्तर भिण्ड ग्वालियर इसके, दक्षिण झाँसी जिला मिला
सिन्धु, सोन, पहूज सरिता हैं, दो-दो नहरों वाली है।

ज्वार मसूर चना गेहूँ सब, उर्बर धरती देती है।
गेरू, खड़िया, चूना, पत्थर, मुरम ये धरती देती है,
पडुआ है, पथरीली थोड़ी, थोड़ी मिट्टी काली है।

गामा और कुदऊसिंह जैसे, विश्व विदित व्यक्तित्व यहाँ
तांत्रिक सिद्धपीठ-धर्मस्थल, दतिया जैसे और कहाँ।
महल पुराना, किला राजगढ़, ने पहचान बना ली है,

सोनागिरि, उनाव में मन्दिर, बनी चंदेवा बावरी।
तपोभूमि सनकुआ सेवढ़ा, नियति रूप उद्भावरी,
इन्दरगढ़ की मात शीतला, अपनी रक्षा वाली है।

श्री आर. एस. बौद्ध

जन्म—६ मई सन् १९५० ई०

शिक्षा—एम० ए०, एल० एल० बी०

ग्राम—हेतमपुरा।

संस्थापक— अध्यक्ष, डॉ० अम्बेडकर विचार मंच।

विशेष—चिन्तक, कवि, साहित्यकार उपन्यासकार, समाज -सुधार में रुचि, ऊर्जस्विल व्यक्तित्व।

वह खूँनी पथ स्वीकार नहीं

उन मदहोशों से जाकर कहदो, अब जुल्म हमें बरदाश्त नहीं।
रोटी वस्त्रावास बिना, अब शान्ति हमें स्वीकार नहीं॥

हम कतई नहीं डरते उनसे, उनकी तोपों तलवारों से।
कर लेंगे कब्जा याद रखो, इक दिन बारूदी ढेरों पै॥
वह दूर नहीं है दिन अपना, जब छायेंगे हम दुनिया पै।
"संघर्ष हमारा नारा", अब झुकना हमको स्वीकार नहीं॥
उन मदहोशों से०.... ....

हम श्रमवीरों का रक्तिम ध्वज, स्मित होकर लहराता है।
खुले गगन के नीचे भू पर, गीत क्रान्ति के गाता है॥
आँधी, वर्षा में लहरा कर, यह मुक्ति सन्देश सुनाता है।
नहिं बदलें वे, हम बदलेंगे, ये हाल हमें स्वीकार नहीं॥
उन मदहोशों से०.... ....

हम धरती से आकाश तलक, इक रक्तिम मार्ग बना देंगे।
जो नहीं हुई है श्रमिकों की, वह कीमत उन्हें दिला देंगे॥
रहने दो अब मत विवश करो, हम सप्तम दर्शन रच देंगे।
दे-दो! हम अधिकार माँगते, वह खूँनी पथ स्वीकार नहीं॥
उन मदहोशों से०.... ....

श्री बाबूलाल अग्रवाल 'राही'

जन्म तिथि—५-६-१९५० ई०

शिक्षा—बी० ए०

रुचि—व्यवसाय/दुकानदारी।

विशेष—साहित्यिक अभिरुचि के व्यक्ति।

"ये चुनाव नहीं है"

ये चुनाव नहीं है, है पतन हमारे देश का।
अब न जाने क्या होगा, अंजाम हमारे देश का ?

हर चौराहे पर वोटों के ऐजेन्ट नज़र आते हैं।
क्योंकि नोटों से वोट खरीदे जाते हैं।

जिस दौर में अत्याचार हुआ, उस दौर में उसका अन्त हुआ।
जिस दौर ने उसको जन्म दिया, उस दौर ने उसको दफन दिया।

ओ समाज के ठेकेदारो, रे मानवता के हत्यारो।
तुम्हें समय आगाह कर रहा, ज़रा समय की ओर निहारो।

करते हो खूँन ग़रीबों का, पीते हो लहू यतीमों का।
लगते हो तुम कितने भोले, जेहन में खूँन कमीनों का।

आज जिन्हें तुम ठुकराते हो, कल तक वो भी राजा थे।
आज जिन्हें तुम मरवाते हो, कल तक वो भी दादा थे।
उन्हें समय ने हीं ठुकराया, तुम से तो वो ज्यादा थे।
ओ कश्ती में सोने वालो, मत भूलो तुम तूफानों को।
ओ महलों में सोने वालो, मत भूलो तुम वीरानों को।
जिन्हें समय के साथ है चलना,
बनकर रोड़े उन्हें न रोको।
बढ़ने दो अब उनको आगे,
बातों से मत उनको टोको।

श्री सुरेश कुमार सेन

जन्म—१-१०-१९५० ई०

शिक्षा—बी० ए०, एल० एल० बी०,

व्यवसाय एडवोकेट

विशेष—सहृदय एवं कविहृदय।

ग़ज़ल

पास आकर अचानक जुदा होगए,
ऐसा लगता है तुम वेवफा होगये।

मेरी सारी हकीकत पता थी तुम्हें,
फिर भला बेवजह क्युँ खफा हो गए।

मोड़कर जिन्दगी को नये मोड़पर,
छोड़कर यू अकेला कहाँ खो गए।

जख्मी दिल में जगाकर अनोखी तड़फ,
बे करवी ओढ़लो वे जुवां होगए।

तन बदन जल उठा दर्द की छाँव में,
बीते कल, आज खुद ही जवां होगए।

वास्ता दे रहा हूँ तुम्हें प्यार का,
मत सताओ सनम हम तबाह हो गए।

जिन्दगी सौंप दी आपके हाथ में,
आप ही अब हमारे खुदा होगए।

श्री भगवान दास निरंजन

जन्मतिथि—२-४-१९५२ ई०

व्यवसाय—"ग्रामीण कृषि विस्तार अधिकारी" पद पर सेवारत।

प्रकाशित रचनायें—१६ कवितायें व गीत।

अप्रकाशित रचनायें -७४ कवितायें।

विशेष—काव्य सृजन में सहज अभिरुचि।

स्थाई पता -ग्राम व पो०-रावरी, जिला-दतिया (म० प्र०)

"कौमी एकता"

देश प्रगति में भेदभाव, और द्वेषभाव बाधा देते।
वर्गभेद और जातिभेद, ये ऊँच नींच पनपा देते॥
धर्मभेद साँप्रदायिक दंगे, और अधिक भड़का देते।
हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, आपस में बदला लेते॥
भेदभाव का रोग देश में, इसी तरह बढ़ जायेगा।
तो भाई, यह देश हमारा, आगे ना बढ़ पायेगा॥
हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई, आपस में लड़ जायेंगे।
साँप्रदायिक सद्भाव बिना, हम फिर पीछे रह जायेंगे॥
प्रान्तवाद भाषाविवाद, सब रोग देश से दूर रहे।
ईश्वर से है विनय हमारी, राष्ट्र एकता अमर रहे॥
आओ आज प्रतिज्ञा करलें, भेदभाव को दूर करेंगे।
एक दूसरे के धर्मों का, मिलजुल कर सम्मान करेंगे॥
कहे "निरंजन" भेदभाव में, नरसहार न हो पाये।
बापू और इन्दिरा जैसे, नेता नहिंखोने पायें॥

श्री तफ़ज़्ज़ुल अली 'हसनी'

जन्म तिथि—१७-७-१९५२ ई०
शिक्षा अदीव कामिल, बी० ए०, एल० एल० बी०, संगीत प्रभाकर, आयुर्वेद रत्न ।
समन्वयक—नेहरु युवक केंद्र
विशेष—सफल गजलकार
सम्पर्क—हजरत जी हाउस, आनन्द टाकीज रोड दतिया ।

ग़ज़ल

न सिर्फ ये के ज़ुबाँ से गिला नहीं करते।
सितम भी सहते हैं और बददुआ नहीं करते।

सुनो सभी की अगर मुत्तफिक नहीं न सही;
ख्याल सबके हमेशा मिला नहीं करते।

न डर सफर से मुसाफ़िर खुदा पे शाकिर हो,
बग़ैर हुक्म के पत्तें हिला नहीं करते।

वो जिन में अज़्म है, हिम्मत है, पुख्ता ईमाँ है,
किसी के रहमो करम पर पला नहीं करते।

न टूट जाये के दोस्ती है मुँह बोली,
हम इस सबब से कोई फैसला नहीं करते।

वो दौर आया था मिलने की कोशिशें तो हुई,
जो मुख्तलिप हों वो जज़्बे मिला नहीं करते।

यही तो नजमे जहाँ का उसूल फितरत है,
बिछड़ के शाख़ से गुन्चे खिला नहीं करते।

सितम उठाने की आदत सी हो गई हमको,
के दर्द में भी हम आहो बुका नहीं करते।

हम एहले ग़म को रकीबों का खौफ क्या मानी,
सिवा खुदा के किसी से डरा नहीं करते।

जो सीधी राहों पे चलते हैं उनको ऐ 'हसनी',
चिरागे फ़िक्रे नज़र तो बुझा नहीं करते।

श्री अवधेश उपाध्याय

जन्म—जन्म सन् १९५४ ई०

ग्राम-पठरा

विशेष— सफल एवं प्रभावी व्यंग्यकार तथा सहज कवि।

सम्पर्क—डाक्टर भौड़ेले की हवेली के निकट, छोटा बजार, दतिया (म० प्र०)।

आज दिवाली आ गई

आज दिवाली आ गई, पोते घर 'औ' द्वार।
अरु वार्नस से रंग दिये, सुन्दर सुघर किबार।
सुन्दर-सुघर किबार, जमकर करी पुताई।
फुर्सत मिलो न नैक, कहें मोड़न की बाई।
कह 'अवधेश कुमार' बड़ा त्योहार निराला।
दोंनो खाली जेब, दिवाली नहिं दिवाला।।

ग्राम सु पठरा जान लो, इक पहाड़ के बीच।
खास बात बरसात में, मचे वहाँ न कीच।
मचे वहां न कीच, मगर दुःख सबसे भारी।
बीच ग्राम में कुआं, मगर पय उसका खारी।
कह 'अवधेश कुमार' समस्या पर गई ऐसी।
पानी भरतन मरे, मताई आफ़त कैसी?

श्री ऋषि मोहन श्रीवास्तव

जन्म — ७ सितम्बर सन् १९५४ ई०
शिक्षा— एम० ए० (समाज शास्त्र, हिन्दी साहित्य), संगीत प्रभाकर (जूनियर डिप्लोमा), वैद्य विशारद ।
सम्प्रति—ग्रामीण क्रियात्मक साक्षरता परियोजना में पदस्थ ।
विशेष—सफल लेखक, प्रौढ़ रचनाकार एवं सम्पादक, परिचर्चाकार अनेक पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित ।

सम्पर्क—१६, वर्मा लेन, दतिया ।

कुछ व्यंगिकायें

* नेता *

नेता अर्थ समझते हैं ?
नहीं जनाब ।
जो दूर से ही करे
आपको ता-ता, (टा-टा)

* भ्रष्टाचार *

वे भ्रष्टाचार में चार चांद लगा रहे हैं
तभी तो साधारण से बाबू को
चार-चार कप
चाय पिला रहे हैं ।

* दरिया *

उन्होंने मेरे प्यार को
एक 'दरिया' समझ रखा है
तभी तो वे चाहे जब
एक पत्थर मार देते हैं ।

* प्रभाव व्यवस्था *

तुम्हारी नजरों ने
घायल तो कर दिया
पर प्रिये ! इतना तो कर दो
कि अस्पताल पहुँच जाऊँ ।

डॉ. रमेश चन्द्र गुप्ता 'सोनी'

जन्म—१-?-१९५५ ई०
शिक्षा—हायर सेकेन्ड्री।
विशेष—साहित्यिक रुचि के व्यक्ति।

नसबन्दी

बच्चे दो ही कीजिये, इक बेटी इक लाल,
जो बच्चे ज्यादा करें, उनका हाल विहाल।
उनका हाल विहाल, कष्ट वहु घर में आवें,
तूँ-तूँ, मैं-मैं होय, पढ़न नहिं बालक पावें।
कहें 'गुप्त' कानून, नियम के बनना सच्चे,
नसबंदी करवायें, बंद करवालो बच्चे।

औंगन

औंगन गाड़ी दीजिये, होवै हल्की चाल,
बो गाड़ी औंगन नहीं, उसका हाल विहाल।
उसका हाल विहाल, कष्ट रस्ता में आवे,
देख पराया कष्ट, नहिं कोउ ढिग में जावे।
कहत गुप्त' विनतेल, नहीं आता है रोगन,
गाड़ी चलवे ठीक, डालीये इसमें औंगन।

श्री वीरेन्द्र कुमार शर्मा

शिक्षक

जन्म— २२ जनवरी सन् १९५५ ई०

शिक्षा— बी० ए०

विशेष— सामाजिक अन्याय के प्रति संघर्ष की विचारधारा के कवि।

न्यायालय

एक युवा ने न्यायालय का
दरवाजा खट खटाया।
मेरे मकान पर
संभ्रान्त नागरिक का
हो गया अधिकार।
माई बाप सरकार
मेरे पास एक मात्र छाया
मेरे बाबा ने इसे बनवाया।
कन्धे पर हाथ रखते हुये
एक व्यक्ति बोला—
ओ तू बहुत है भोला!
मुकदमा झगड़ा जाता है
भला आदमी जीत पाता है
मैंने न्याय पाने में जिन्दगी बितादी।
अब मै क्या कर सकता हूँ
तुम अपने मकान का
सपना छोड़ दो।
अव्यवस्था के हवन कुण्ड में
जीवन की आहुति दे दी।
उसी की लौ के प्रकाश से
न्याय मिल पायेगा।
सोते हुये व्यक्ति को जगाना है,
इस अन्याय को हटाना है।

श्री संतू राम उदासीन

जन्म —२ मार्च सन् १९५५ई०
व्यवसाय —संपादक, संत उदासीन।
विशेष–कविताओं के प्रणेता। सहृदय कवि एंव साहित्यिक विचार धारा के सहज व्यक्ति। अध्यक्ष छात्रसंघ परिषद्।
सम्पर्क—छोटा बाजार, दतिया।

बढ़े चलो

बढ़े चलो भई बढ़े चलो।
आगे-आगे बढ़े चलो।
जीवन गीता पढ़े चलो।

सबको गले लगाओ तुम।
गीत प्रेम के गाओ तुम।
जीवन में मुसकाओ तुम।

इक पल कभी न खोने दो।
छल-बल कभी न होने दो।
गड़बड़ कभी न होने दो।

भारत माँ के गीत सुनाओ।
दुश्मन को तुम मार भगाओ।
हिन्दी भाषा को अपनाओ।

सत्य राह पर चलना तुम।
वेमौसम न ढलना तुम।
दीप-शिखा से जलना तुम।

कायर कभी न बनना तुम।
सिर अपना न धुनना तुम।
काँटे कभी न चुनना तुम।

कमजोरों को गले लगाओ।
अपराधी को सजा दिलाओ।
सही नीति 'संतू, समझाओ।

श्री महेन्द्र 'इकदिली'

जन्म— ७ दिसम्बर सन् १९५५ ई०

शिक्षा — स्नातकोत्तर (पूर्वाद्ध), अँग्रेजी

विशेष— फिल्मी तकनीक के युवा पीड़ी के लेखक एवं ध्वनि संयोजक। सशक्त एवं सफल गीतकार तथा गज़लकार।

सम्पर्क— बड़े बहादुर जी की हवेली के सामने, दतिया।

ग़ज़ल

वो इस तरह मुझे बरदास्त कर रहा होगा,
कि मेरी याद में खुश होके जल रहा होगा।

एक तवारीख मुकर्रर है मिलने की अदम,
कितने जन्मों से सिलसिला ये चल रहा होगा।

मैं तेरी रूह की खुश्बू का नुमाया भी नही,
छाँव पलकों में मेरा नक्श पल रहा होगा।

बूँद शबनम की, या सावन का दर्द हो यारो,
छूके देखोगे कब, जब दम निकल रहा होगा।

बात इक दिल की 'इकदिली' कहां समझ पाया,
लब की खामोशियों से ग़म पिघल रहा होगा।

श्री विजय भटनागर

शिक्षक

जन्म — १५-७-५६ ई०

शिक्षा— एम० ए०, बी० म्यूज

विशेष – नवोदित कवि, लेखक एवं संगीतज्ञ, विविध विधाओं में साहित्य, सृजन के प्रति अभिरुचि।

सम्पर्क— पुराने सेवढ़ा भाण्डेर स्टेण्ड के पास, दतिया।

गीत

गुल गोहर फूल गए, जब से मिल आप गए,
खुशियों से भर आये नैन, तुमसे मिल आज मिला चैन।

गीतों में भाव जगे, जबसे हम प्रेम-पगे।
तुम्हें देख रह गए हैं देखो हम आज ठगे।
आँखों में डूब गई चाहत की रैन।
खुशियों से भर आये नैन।

तुमसे मिल जीत गए, दुखड़ों से रीत गए।
सुन्दर भविष्य हुआ, बुरे दिन बीत गये।
प्रेम में तुम्हारे पगे करते हैं बैन।
खुशियों से भर आये नैन।

स्वर्णिम दिन आज हुआ, प्रफुल्लित मिजाज हुआ।
तूही हैं मेरा फकत आज यह अंदाज हुआ।
बाहों में तेरी हम करने लगे सैन।
खुशियों से भर आये नैन।

श्री शैलेन्द्र बुधौलिया

जन्म दिनांक—२३/१२/५६ ई०
बिशेष—सशक्त गीतकार, चुटीले, व्यंग्यकार, अनेक काव्य रचनाओं के प्रणेता।

गीत

जुवाँ पर आकर थम जाती है,
कैसे कह दूं दिल की बात।
कोई भी मरहम न दे सका,
सभी से मिले मुझे आघात।
हँसी है पलभर की मेहमान,
छलों का छाया घना वितान।
गमों की गजल सुनाता नित्य,
दर्द के हैं लाखों अहसान।
हुआ है कई बार ऐसा भी,
संग-संग जागा सारी रात।
जुबां पर आकर.... ....
समझ न पाओ परिभाषा,
न थी तुमसे ऐसी आसा।
मात्र गहराई नापा किया,
घाट पर बैठ रहा प्यासा।
अधर पिहु-पिहु न चिल्ला सके,
निठुर धन ने न की बरसात।
जुबां पर आकर थम.... ....

श्री राज गोस्वामी

जन्म—१ जनवरी १९५७ ई०
संगठन मंत्री— श्री रामचरितमानस चतुश्शताब्दी समारोह समिति (मानस मंडल)
प्रकाशित ग्रंथ—ओ मेरे मन/अनुबंधों के छंद/मम्मी की मिट्टी/जटायु/मेरी कविता यात्रा।
सम्पर्क—४८९/१ श्रीसदन, सिविल लाइन्स, दतिया (म० प्र०) ४७५-६६१

डोल रहा मन

यादों के विखर गये लोहित से कण।
पीपल के पत्ते सा डोल रहा मन॥
गंगा सा निर्मल है,
आंखों का नीर।
रूप का सलोनापन,
बेसुध सी पीर॥
अंतस में झांक रहा प्रिय का आनन।
पीपल के पत्ते सा डोल रहा मन॥
मीत भली लगती है,
शीतल छाया।
किसकिसको मिलती है
कंचन काया॥
कलियों से भौंरों की गुनगुन— गुनगुन।
पीपल के पत्ते सा डोल रहा मन॥
गंध कोष फैली है,
रंगों की हाट।
पूनम ने मावस के,
पंख दिये काट॥
धीरे ही धीरे फिर महक गए क्षण।
पीपल के पत्ते सा डोल रहा मन॥

श्री अजय कुमार जैन

शिक्षा—बी० ए०, डिप्लोमा
व्यवसाय—सब इंजीनियर
विशेष—खेलों में रुचि एवं अध्ययनशील।
सम्पर्क—डाक बँगले के पीछे, इन्दरगढ़।

कविता

दे दे कोई नौकरी मुझे
मैं शिक्षित बेरोजगार हूँ।
नजरों में खुद की ही
सबसे बड़ा गुनहगार हूँ।
कि मै शिक्षित बेरोजगार हूँ।

तिरस्कृत किया जाता हूँ, हर निगाह में,
विचारों में दुनिया के बढ़ता हुआ बिकार हूँ।
कि मैं शिक्षित.... ....

डिगरियाँ बन गई मेरी, अभिशाप मेरे लिए,
बजह से इनकी ही अब तक बेकार हूँ।
कि मैं शिक्षित.... ....

मात पिता बंधु जब कहते है निकम्मा मुझको,
लगता हैं रोटी में इनकी जबरन का हिस्सेदार हूँ।
कि मैं शिक्षित.... ....

लगी है हाय निराशा ही अब तक मुझको,
भीड़ मैं हिस्सेदारों की मैं गैर हिस्सेदार हूँ।
दे दे.... ....

पूँछता है जब आइना मुझको, कि तुम क्या हो ?
निकल जाता है मुख से मेरे, कि मैं धरा पर भार हूँ।
कि मै शिक्षित बेरोजगार हूँ
दे दे.... ....

पं० श्याम बिहारी शर्मा

जन्म— १ जनवरी सन् १९५८ ई०

शिक्षा—स्नातकीय शिक्षा प्राप्त ।

विशेष—समाज सेवी, कवि, लेखक, पत्रकार, कुछ पत्रों के प्रतिनिधि तथा ब्राह्मण पराग के प्रधान संपादक एवं गाँधीवादी विचार धारा के परिपोषक ।

निवास—ग्राम कुसौली, जिला दतिया (म० प्र०)

गीत भी बदनाम हो गये

काम सब बेकाम हो गये, नाम सब गुम नाम हो गये ।
आदमी लाचार हो गये, गीत भी बदनाम हो गये ।।
रो रहे हैं शास्त्र अब अस्तित्व अपना खो रहे ।
ज्ञान के भण्डार खाली सब आप ही से हो रहे ।
रास्ते अब मौन हो गये वास्ते अब कौन हो गये ।
ढह गये हैं मान सब नष्ट सब अरमान हो गये ।।
कल्पना भी वास्तविकता सी झलकती थी अतीत ।
अब वास्तविकता भी नहीं सार्थक होती हमें प्रतीत ।।
इनके भी कोई हो गये उनके भी कोई हो गये ।
नाटक बिचारे रो रहे हैं नायक तमाम हो गये ।।
श्रृंगार का माहोल जग में और भी बदला हुआ है ।
उठ रहा है आस्ते से नयन का कुचला हुआ है ।।
अस्थि पंजर हो गये घर वार बंजर हो गये ।
आज से आशिक तुम्हारे पीछे श्याम हो गये ।।

श्री सुरेन्द्र कुमार तिवारी

जन्म—४ अगस्त सन् १९५८ ई०,

शिक्षा—बी० ए०, बी० टी०, एम० ए० पूर्वार्ध।

व्यवसाय—शासकीय शिक्षक

रचनाएें—विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित शीघ्र ही खण्ड काव्य का प्रकाशन।

सम्पर्क—छोटा बाजार, दतिया।

वे

'वे'

दिन में सोते हैं

रात में जागते हैं

रात के अन्धेरे में

जाने अनजाने में

न जाने

क्या-क्या

गुल खिलाते हैं।

सुश्री उमा भार्गव

जन्म—१७/८/१९५८ ई०
शिक्षा—एम० ए० संस्कृत, बी० लिब ।
व्यवसाय—जिला जन सम्पर्क अधिकारी दतिया ।
विशेष सहज काव्य रुचि, सहृदय कवयित्री ।
सम्पर्क—जी० १, ग्वालियर रोड, सिविल लाइन्स दतिया ।

"सपनों में"

सपनों में कई रंग बिखरे हैं,
इनमें कोई चटक, शोख, और खूब सूरत है ।
तो कोई बेहद उदास, मटमैले और फूहड़ ।
बावला मन जब सुन्दर, चञ्चल, और आकर्षक
रंगों को ललचाकर देखता है तब
कल्पना के हाथ उन्हें अनायास छूने के लिये
बढ़ जाते हैं ।
पर ये सजीले रंग इन हाथों की पकड़ से
दूर-दूर और दूर होते जाते हैं ।
पर काफी प्रयत्नों के बाद कोई मन भावन रंग
हाथ आता है कि तभी
आस पास तैरते गन्दे बद सूरत रंग चारों ओर से
हाथ पर लिपट जाते हैं ।
और मेरा मन पसंद रंग इन अनचाहे रंगो
के बीच कहीं दब जाता हैं ।
कल्पना के हाथ वापस आ जाते हैं ।
मन फिर उदास, अकेला, सपने के किसी
वीरान कोंने में दुबक जाता है ।

श्री उमाचरण शर्मा (विलगइयाँ)

''अजेय''

जन्म —२-१०-१९५९ ई०
शिक्षा—एम० ए० (अर्थशास्त्र)
व्यवसाय - आरक्षक, यातायात शाखा दतिया (म० प्र० पु०)
विशेष—नई कविता में व्यंग्य विधा के नवोदित कवि।
सम्पर्क—श्री चामुण्डा तंत्र संस्थान शिवा-शिव-साहित्य-
साधना सदन, दतिया।

व्यंग्य

शहर के व्यस्ततम चोराहे पर
खड़े
यातायात के सिपाही ने
उल्टी दिशा से
आने वाले स्कूटर —
सवार से कहा
क्यों भाई ?
उल्टे क्यों आ रहे हो ?
युवक ने मुस्कराकर, गम्भीरता से सोचकर,
उत्तर दिया—
आदत सी हो गई है।
ट्रैफिक मैन ने कहा—
क्या ये आदत तुम्हारी नियति बन गई है ?
युवक पलटा
और कहा-नहीं, भई नहीं
पच्चीस रुपया जुर्माना होगा,
आदत अपने आप सुधर जायेगी,
और न सुधरी तो
दुर्घटना का शिकार बनूँगा,
और सारी आदतें एक साथ
सुधार लूँगा, एक साथ सुधार लूँगा,
एक साथ सुधार लूँगा।

श्रीमती कुंमकुम भट्ट 'कुमकुम'

जन्म—२ सितम्बर १९६० ई०

शिक्षा—एम० ए० (हिन्दी)

विशेष—काव्य सृजन के प्रति सहज रुचि, सहृदय कवयित्री।

ग़ज़ल

मजबूरियों का जाल है औरत की ज़िन्दगी,
कितना बड़ा सवाल है, औरत की ज़िन्दगी।

ये जुल्म बलात्कार तो चांटे की तरह हैं,
सहलाया हुआ गाल है औरत की ज़िन्दगी।

गाँवों ने अगर रौंदी तो शहरों ने उछाली,
गोया कोई फुटबाल है, औरत की ज़िन्दगी।

जो चाहें जिसके सामने इसको परोस दें,
सुविधा से भरा थाल है, औरत की ज़िन्दगी।

भाई के लिये, माँ के लिये, बाप के लिए,
सिर का सफेद बाल है, औरत की ज़िन्दगी।

दुनियाँ को जिसने खुशबुऐं बांटी है उम्र भर,
काँटों भरी वो डाल है, औरत की ज़िन्दगी।

चूनर की जगह इसको कफ़न तो न दीजिये,
वैसे ही तंग-हाल है, औरत की ज़िन्दगी।

'कुमकुम' को सभी खूंन की रोली समझ रहे,
शतरंज जैसी चाल है, औरत की ज़िन्दगी।

प० राजेन्द्र कुमार उदैनिया

जन्म तिथि— ६-१२-६१ ई०
शिक्षा— बी० ए०
व्यवसाय— सहायक शिक्षक, दतिया
विशेष— सहज काव्य सृजन की रुचि

विज्ञान आयुर्वेद और समाज

प्रगति हुई है विश्व में, आया जब विज्ञान ।
जीवन मूल्य गिरा दिये, बड़ा दिया अज्ञान ।।

फिलमी दर्शन से मिला, फैशन औ व्यभिचार ।
हत्या, लूट-खसोट का, गर्म हुआ बाजार ।।

टी वी, फ्रिज औ वीडियो, आविष्कार अनेक ।
पराधीन मानव हुआ, गैस से रोटी सेक ।।

मोटर, वाहन, रेल से, मरते लोग हजार ।
बिजली दुर्घटना करे, इनसे इन्हें उबार ।।

एलोपैथी दवा का सेवन दे नुकसान ।
देशी औषधि लीजिए, आयुर्वेद महान् ।।

बात, पित्त, कफ, नाड़ि का, जिन्हें न किंचित ज्ञान ।
रोग कहा? रोगी बता, डाक्टर है अनजान ।।

टी० बी०, कैंसर, डायबिटी, एड्स रोग एक नाम ।
कुष्ठ रोग पर नहिं करै, एलोपैथी काम ।।

क्रोध, घृणा और ईर्ष्या, मन से शीघ्र निकाल ।
स्वस्थ रहोगे सर्वदा, छूट जाए जंजाल ।।

श्री शान्ति स्वरूप सक्सेना

जन्म—३१-१२-१९६२ ई०
शिक्षा—हायर सेकेन्ड्री
व्यवसाय—पत्रकारिता, अशासकीय शिक्षक
रुचि—समाज सेवा, साहित्य सेवा
पता—'शैल' साहित्य सदन, ८ रावबाग, दतिया (म० प्र०)

कविता

(१)

जीवन में कई साथी होते अपने।
ये मात्र होते हैं सपने।
जो समय पर काम आये।
कहें- "शैल" उसी को अपना समझा जाये।

(२)

आज का मानव !
हो गया दानव।
वहू की ,ससुराल आते ही—
करदी जाती है हत्या।
और कह दिया जाता है—
बहू ने करली आत्म हत्या।

श्री रवि ठाकुर

जन्म—१९ सितम्बर १९६३ ई०
संपादक- साप्ताहिक बुन्देलखंड टुडे
सम्पर्क—६२, जय निवास, छोटा बाजार, दतिया (म० प्र०)

अमर-चांदनी

परिलक्षित, पुलकित, पहुमी पर/पूर्णेन्द्रु प्रद्योत
प्रदीपक, प्रतिबिम्बक/चिर पाथिक प्रिया, वह
अमर चांदनी, विस्मृत विभ्रम/हतप्रभ होकर
ठिठक रह गई/रवि तनया के महाकूल पर
निर्निमेष, निष्पंद निहारे/प्रतिबिम्बित शशि सुजल सतह पर
अरे करे यह केलि कौन ?/ लघु लोल लहर पर
कालिन्दी की चपल राशि में, धवल मौन
चन्द्रानुकृति, यह छद्म वेशि/यों भान हो रहा,
आया छलने/चन्द्र प्रेयसी रजनी को,
लब्ध वियोगनी, सजनी से या/
यह शंशाक ही मिलने आया
और, लक्षकर मुझे, खेद वश/भेद बचाने,
छुपा हुआ है/तरणि तनूजा तल में/
यही कदाचित सत्य सार है/निशि मंयक का मिलन,
भुवन पर/सोच प्रफुल्लित हुई जुन्हरी
लिये हुये थी, तृप्ति-शांति का/सौम्य प्रेमका, चिर संदेश
जिसे, धरा की पीड़ा हरने/ताड़ वृक्ष की पत्रावलि पर
प्रेम पत्र मय लिख रजनी ने/चंद्र रशिम के हाथों भेजा
सोते सागर के, सिरहाने/रखकर गुमशुम खड़ी हो गई
उज्जवल, शीतल, अमर चांदनी ।

श्री फूलसिंह जाटव

जन्म—१-१-६४ ई०

रचनाऐं—अनेक लोकगीत प्रकाशित एवं अनेक अप्रकाशित रचनाएं।

विशेष—लोकप्रिय लोकगीतकार।

चौकड़ियाँ

मन को क्यों जग में भरमावै ?
भरमत लोग हजारन देखे, कोउ अन्त नहिं पावें ?
बड़े-बड़े पारखिया भरमे, जो सब वेद बताबें।
जासें विषय-वासना तेरी, चली अखारत जावे।
मन की बाग हाथ में राखो, कुलै दाग नहिं आवै।
'फूलसिंह' हिरदे को खोलो, रामइ राम दिखाबें।

ठगिनी नें ठगे तिलक धारी, वे मानें बैठे हारी।
ब्रह्मा बिष्णु ठगे शिवशंकर जो रये वज्जरतारी।
बुरई तरा सें नारद ठग गए, गरब करेंते भारी।
साधू-संत बचे नहिं एकउ, श्रृंगी से तप धारी।
जासें और बचौ को न्यारौ, जाकी महिमा न्यारी ?
तीनउ लोक जीत लये जानें, निगुन-सगुन-साकारी।
अगम वेद की गाथा जौ है, 'फूलसिंह, कह सारी।

कानों कर बंदेज, बलम जा बखरी कौ।
जा बखरी के दस दरवाजे चौपारे में सेज।
फाटक लगे काउ में नइयाँ, हर द्वारे पै मेज।
छलिया-छैल पकर कें लैजें, ना बन पैहो तेज।
दै-दै भार भुला दें ठसकें, तुम पै करें न हेज।
'फूलसिंह' सब देखत रह जें, जा दिन खुल जै पेज।

श्री अनूप किशोर गोस्वामी

"मयूर"

जन्म—३-१-१९६४ ई०
शिक्षा—एम० ए० बी० एड०
विशेष —अनेक स्फुट कविताओं के रचयिता,पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित, नवोदित कवि।

॥ फागुनी गीत ॥

कर सोलह श्रृंगार, राधिका रमण विहार,
फाग के रंग हजार, चली वा सखियन संग आली।
उड़त अबीर लाल भये अम्बर नाचत दे ताली,
कि होली आई रे, कि मस्ती लाई रे।।

राधा-राधा फिरत पुकारत कृष्ण कन्हैया ब्रज में।
बरसाने राधा लुक गईं रंग अबीरन रज में।।
विटप बहुरंगी होंय अपार कि जैसें फूलन की डाली।
सारी रँगी अपार, रंग की ऐसी भई बौछार,
नृत्य करत हैं सखा श्याम संग, देत प्रेम गाली,
कि होली आई रे, कि मस्ती लाई रे।

सब जग सें न्यारी या ब्रज की होली वृन्दावन में।
रूप 'अनूप' लखहिं नित श्यामहिं,
मथुरा अरु मधुवन में।।

नंदबाबा की है जा पौर, पाँव रखिवे को नाहीं ठौर,
गोप-ग्वालन की हो रई दौर, पौर वा हो गई अब लाली,
गुंजत भ्रमर मुखर नित रवयुत उपवन की डाली,
कि होली आई रे, कि मस्ती लाई रे।।

श्री निलय गोस्वामी

जन्मतिथि—२३-६-१९६४ ई०
शिक्षा—एम० ए०
व्यवसाय—सहायक प्राध्यापक
विशेष—सहज काव्य-सृजन-रुचि।

बदहज़मी

वह बुरी तरह चीख रहा था।
बुरी तरह छटपटा रहा था।
कभी बाल पकड़कर नोंचता
कभी हाथ पकड़कर काटता

डाक्टर बुलाये गए, मगर मर्ज़ बढ़ता ही गया
दोस्तों ने पूछा-क्या हुआ, कैसे हुआ, ?
पत्नी ने बताया-रात कवि सम्मेलन में गए थे
तभी से यही हाल है।

एक मित्र आये, सहृदय थे, किन्तु
कवितायें सुनाने में बड़े निर्दय थे

उन्होंने चटपटी दवा के रूप में
एक कविता पिलानी चाही

तभी वह बिलबिला उठा
घबराहट में उसने फर्श पर उल्टी कर दी

पास खड़ी बीवी ने देखा
उसके गले से कुछ मुक्तक और
कविताएं टपक रही थीं।

श्री संतोष दुबे

जन्म तिथि—८-७-६४ ई०
शिक्षा—एम० ए० (इतिहास)
व्यवसाय—शिक्षक
पता—बालाजी धाम, उनाव दतिया

राष्ट्र-गीत

सुनो साथियो तुम्हें सुनाऊँ गीत में हिन्दुस्तान का।
जन-जन के अरमान का॥

यह धरती वो जिस पर पहले,
विधि ने सृष्टि रचाई है।
यहीं से सभ्यता संस्कृति की,
हर देश ने शिक्षा पायी है॥

भजन सुनाता इसका कण-कण राम कृष्ण भगवान का।
जन-जन के अरमान का॥

सतयुग त्रेता द्वापर कलियुग,
हम सब में आजाद रहे।
क्षेत्र धर्म जाति भाषा रंग,
बंधन के अपवाद वहे॥

इतिहास हमारा जन्म से अवतक आन मान अरुशान का।
जन-जन के अरमान का॥

खायी कसम जान है जब तक,
हर थल, हर सीमा पर।
तब तक माता की रक्षा में,
हँसते शीष कटाकर॥
जुटते-हँसते कदम बढ़ाकर,

लहरायेंगे जन्नत में झण्डा माँ भारत के सम्मान का।
जन-जन के अरमान का॥

सुनो साथियो तुम्हें सुनाऊँ गीत में हिन्दुस्तान का।
जन-जन के अरमान का॥

श्री सुरेश कुमार सातम 'शिक्षक'

जन्म—८-११-१९५९ ई०
शिक्षा— एम० ए० (हिन्दी)
विशेष—साहित्यिक रुचि के व्यक्ति।
सम्पर्क—उनगर फाटक बाहर, दतिया म० प्र०

मेरा उपहार

क्या दोगे तुम ?
है क्या तुम्हारे पास ?
मैं जानता हूँ मीत,
अधूरा है तुम्हारा विकास।

भौतिकता सिर्फ भौतिकता,
है दोस्त तुम्हारे पास।
नहीं रखता मैं इन क्षणिकाओं,
से कुछ भी आस।

मेरे शब्द मेरी पूँजी हैं,
अंकित है इनमें विश्वास।
जग स्वीकारे मेरा उपहार,
नाम के बिन क्या है हमारे पास।

श्री राजेन्द्र 'राज'

जन्म—१ जनवरी, सन् १९६६ ई०
शिक्षा - एम० ए० (अर्थ०), एल० एल० बी०
व्यवसाय—पत्रकार।
विशेष—सहृदय, उदीयमान, एवं प्रगतिवादी कवि।
सम्पर्क—टेलीफोन एक्सचेन्ज के पीछे, गोविन्द गंज, दतिया।

"प्रकाश बढ़ रहा है"

धरती को सुलाता
अब घना नहीं है
अंधेरा
छट रहा है।
फैल चुका है
कुछ धरती पर
उजाला और
अंधेरे की ओर को
बढ़ रहा प्रकाश।
उन्नति का आगार है
परिवर्तन
विध्वंश नही चाहता।
धरती विभाजित है
विश्वास करो
धरती एक होगी
प्रकाश बढ़ रहा है
धीरे-धीरे
धरती जागेगी।

मिर्जा अकरम बेग

'अकरम दतियावी'

जन्म—५ जून, सन् १९६६ ई०

शिक्षा—बी० कॉम

विशेष—गजलकार एवं सशक्त गीतकार।

सम्पर्क—महिला चिकित्सालय के सामने, दतिया।

ग़ज़ल

खुदी में इस तरह उलझा हुआ हूँ,
कि अपने आपसे उक्ता गया हूँ।
मोहब्बत में तेरी रूसवा हुआ हूँ,
कली न बन सका मुरझा गया हूँ।
अजीज़ो देखलो मेरी हकीकत,
क़बाये खाक में लिपटा हुआ हूँ।
कहाँ रक्खूँगा इस मासूम दिल को,
वुजूद अपना ही जब मैं खो चुका हूँ।
अखुव्वत है कहाँ दुनियां में अकरम,
बड़ी हसरत से मैं ये पूछता हूँ।

श्री हरिश्चन्द्र गौड़

जन्म—८ अक्टूबर, १९६६ ई०
शिक्षा—बी०-एस० सी० (बायलोजी),पत्रकारिता डिप्लोमा
व्यवसाय—प्रेरक [साक्षरता मिशन]
सम्पर्क—पुराना बाजार, थरेट, जि० दतिया (म० प्र०)

अस्तित्व की पहचान

करवटें बदलते—बदलते
बहुत देर बाद—
खो गया नींद के आगोश में।
स्वप्नों के अप्रत्यक्ष लोक में।
देखा—
महत्वाकांक्षाओं की प्रचण्ड भूख—
ले चलीं आसमान की ओर,
मनो विकारों की जागृति हुई,
द्वेष, मत्सर, हिंसा, अंह आदि
हावी होते गये व्यक्तित्व पर।
कल्पनाओं का सिलसिला;
अपनी श्रेष्ठता की तुलना में,
हर प्राणी को हेय देखने लगा।
दो से चार बना लिये ....?
सोचकर—
इंसान—इंसान में देखने लगा
अन्तर भू-नभ का।
और अपनी तुलना,
मैं ... .।
करने लगा दैवी शक्ति से।
परन्तु जब—
टूटा यह भ्रम और
गिरा यथार्थ के धरातल पर।
तो अहसास हुआ—
स्वयं के बौनेपन का।

किरनमयी यादव 'किक्की'

जन्म—७ मार्च १९६७ ई०

शिक्षा—एम० ए० (इतिहास)

विशेष—सहृदय कवयित्री।

सम्पर्क—सुमन साहित्य सदन, दतिया (म० प्र०)

मैं छोटी हूँ, मैं छोटी हूँ

मैं छोटी हूँ, मैं छोटी हूँ, तो छोटी मेरी पूजा है।
बस यही समझलो अब भगवन् ! यह मोटी मेरी पूजा है।

मैं पानी माँगू पीने को, मैं साँसे मागू जीने को,
मैं रोटी माँगू खाने को, तो रोटी मेरी पूजा है।

कभी फ्राक कभी कुर्ती माँगू, कभी दौड़ू तो फुर्ती मांगू,
कभी बालों की खातिर माँगू तो चोटी मेरी पूजा है।

कभी चाय प्याला माँग रही, कभी एक निवाला मांग रही,
कभी खाने की खातिर मांगू, तो रोटी मेरी पूजा है।

कभी होली कभी दीवाली में, कभी सावन की खुशहाली में,
कभी ईद मनाने माँगू तो यह बोटी मेरी पूजा है।

मैं चाँदी कभी न मांगूगी, मैं सोना कभी न मांगूगी,
कभी पीने की खातिर मांगू तो लोटी मेरी पूजा है।

मैं छोटी हूँ न बोल सकूँ स्पष्ट चीज का नाम प्रभु,
तन ढकने की खातिर माँगू. तो लँगोटी मेरी पूजा है।

सच कहती हूँ मैं स्वामी से, दुनिया के अन्तरयामी से,
जो नहीं मांगती हूँ तुमसे तो खोटी मेरी पूजा है।

श्री राज कुमार सोनी 'राजू'

जन्म—१-७-६७ ई०

शिक्षा—बी० ए०

साहित्य सृजन—साप्ताहिक हिन्दुस्तान, आचरण, भास्कर, नई दुनिया, प्रज्ञा, गाँव का जीवन, नंदन, चंपक, स्वर्णकार दर्पण, स्वदेश एवं अन्य पत्र-पत्रिकाओं में रचनायें प्रकाशित ।

संपादन—'यायावर' साहित्य एवं कला संगम द्वारा प्रकाशित "जलतरंग" वार्षिक का संपादन

प्रसारण—आकाशवाणी ग्वालियर एवं छतरपुर केन्द्र से समय-समय पर कविताओं का प्रसारण ।

सम्पर्क—सदर बाजार, सेवढ़ा, जिला-दतिया (म० प्र०)

इंसान

जो बुरे कर्म करे,
उसे शैतान कहते हैं ।
जो इंसानियत को डसे,
उसे हैवान कहते हैं ।।
जो इन दुर्गुणों को छोड़कर,
सन्मार्ग अपनाये,
सचमुच उसे इंसान तो क्या,
भगवान कहते हैं ।

जिन्दादिली

ज़िन्दगी का दूसरा नाम,
जिन्दादिली है ।
फूल की रक्षा न कर पाना;
बुज़दिली है ।।
प्यार की चिता पर,
स्वयं को भस्म कर डाले,
वही तो सच्ची मोहब्बत के,
संग दिली है ।।

कु० वन्दना ठाकुर

जन्म —१८-१२-१९६७ ई०

शिक्षा—मिडिल में अध्ययनरत

विशेष - सहृदय कवयित्री।

सम्पर्क—सुमन साहित्य सदन, दतिया।

॥ भारती-माँ की वन्दना ॥

माँ भारती तुम्हारी जयकार कर रही हूँ।
अपने हृदय में तेरी मुस्कान भर रही हूँ।

मैं हूँ छोटी पुजारिन, पूजा करूँगी कैसे?
छोटे से तन व मन से, सेवा करूँगी कैसे?
मैं हूँ अपढ़, अनाड़िन, स्वीकार कर रही हूँ।
माँ भारती तुम्हारी जयकार कर रही हूँ।

मेरा विकास करदो, अक्षर का ज्ञान देकर।
इतनी विनय ही सुनलो, थोड़ा सा ध्यान देकर।
मैं हूँ तुम्हारी बच्ची, तुम्हें प्यार कर रही हूँ।
माँ भारती तुम्हारी जयकार कर रही हूँ।

तुम ही बतादो माता, पूजा का ढंग मुझको।
अपना समझकर अपने कर लेना संग मुझको।
कहीं भूल कुछ न कर दूं, इससे ही डर रही हूँ।
माँ भारती तुम्हारी जयकार कर रही हूँ।

गीतों को गुनगुनाकर तेरी आरती उतारूँ।
पल-पल में मुस्कराकर मैं तेरी तरफ निहारूँ।
अपनों की तरह माँ से व्यवहार कर रही हूँ।
माँ भारती तुम्हारी जयकार कर रही हूँ।

श्री ब्रजेश कुमार शर्मा

जन्म—१५ अगस्त, सन् १९६८ ई०
शिक्षा—एम० ए० अध्ययनरत
विशेष—साहित्य सृजन में अभिरुचि अनेक स्फुट रचनाओं के प्रणेता।
सम्पर्क—श्री के० आर० शर्मा, टेक्नीशियन, दूरभाष केन्द्र, दतिया (म० प्र०)

"प्रवेश बर्जित है"

आज से
कुछदिन पूर्व
मैं एक महाशय के यहाँ गया,
द्वार पर लिखा था—
गरीब तबके के लोग
किसी भी समय मिल सकते हैं।
किन्तु आज,
जब मैं उस गली से गुजरा तो
द्वार पर नजर पड़ी
लिखा था—
"प्रवेश बर्जित है"
क्योंकि,
वे अब आपके लिए नहीं,
अपितु देश के लिए समर्पित हैं।"

"स्मृति"

पराये तो पराये थे ही, अपने भी पराये हो गये।
अरे दोस्त तुम क्यों? मुझसे खफा हो गये।
सोचा था लूंगा तुमसे ब्याज, किन्तु तुम तो देकर न असल गये।
अरे बड़ी तमन्नाएं थी गम तुम्हें देने की।
हम रहें ख्वाबों में खोये किन्तु नहीं लालसा अब जीने की।
क्या ऐसा पता था कि, तुम ही खुदा को प्यारे हो गये।"

नौशाब उद्दीन 'सुहेल' दतियावी.

जन्म—२६ अक्तूबर, १६६८ ई०
शिक्षा—वी० ए० द्वितीय वर्ष
विशेष—गजलकार।
के प्रणेता।
सम्पर्क—तलैया मुहल्ला, दतिया (म० प्र०)

ग़ज़ल

※ १ ※

तअल्लुक़ ही न जब रहा तुमसे,
कैसा शिकवा और क्या गिला तुमसे ?
हमसे रोशन रही है शम्म-ए-वफा,
हुस्न वालो उम्मीदे वफा तुमसे
आह, आंसू और रुस्वाइयों के सिवा,
इश्क का क्या सिला मिला तुमसे ?
मैं इक शायर आवारा,ओ,बदनाम 'सुहेल',
तमाम शहर पूछेगा मेरा पता तुमसे।

※ २ ※

नाम ले करके तुझे दोस्त दुआ देते हैं।
अपने सोये हुऐ जख्मों को हवा देते हैं॥
दर्द के रिश्ते हैं कौन निभाने वाला ?
लोग रिश्तों को बनाकर के भुला देते हैं॥
हम तो बरवाद मुहब्बत हैं कोई क्या जाने ?
मिटते-मिटते भी कातिल को दुआ देते हैं॥
अपना ग़म देके शायद आप भी शरमिंदा हैं।
अपनी आदत है कि ग़म को भी में छुपा लेते हैं॥

कु० रजनी बुन्देला

जन्म—२०-२-६२ ई०
शिक्षा—एम० ए०, अर्थशास्त्र
सम्पर्क—कुंजन पुरा, दतिया

'स्वतंत्रता'

स्वतन्त्रता इतना विकास कर गई,
माता—पता को मानना भूल गई।
जनता जनता के शासन में मिल गई,
खुद ही नैतिकता से गिर गई।

'समानता'

समानता एक माला में पिरो गई,
जातिवाद, साम्प्रदायिकता में व्याप्त हो गई।
जनता जनता के शासन में खो गई,
खुद की धार्मिकता से गिर गई।

भाईचारा

भाईचारे में आज इंसानियत गिर गई,
लूट—खसोट, जमाखोरी बढ़ गई।
जनता जनता के शासन में रो गई,
खुद ही बन्धुता से गिर गई।

'प्रजातंत्र'

ये कैसा नवयुग कैसा निर्माण,
कैसा ये प्रजातन्त्रीय व्यवस्था का विधान।
आज जनता के शासन में जनता,
अपने आपको कर रही है बदनाम।
आज नवयुग निर्माणों का आया,
जनतन्त्रीय व्यवस्था ने गजब ढाया।

श्री कल्याण सिंह राजपूत 'मुन्ना'

जन्म—सन् १९७० ई०
शिक्षा—मैट्रिक
विशेष—साहित्य एवं पत्रकारिता में अभिरुचि।
सम्पर्क—पुराना बाजार, थरेट, जिला दतिया (म० प्र०)

अन्तर्द्वन्द्व

मैं !
बैचेनी से छटपटा रहा हूँ।
समर ! तर्क-वितर्कों का—
मेरे अन्तर में छिड़ा हुआ है।
तर्क सेनापति—
व्यूह रचना कर वितर्क सेना को—
अपने घेरे में ले रहा है।
चला रहा है, 'शब्दास्त्र'' व्यूह प्रणेता 'तर्क'
आहत हो रहे हैं, वितर्क क्षत्री।
क्रमशः—
सभी परास्त हुये हैं।
अकेला बचा है, वितर्क।
शनैः शनैः—"वितर्क"
हावी हो रहा है, तर्क सेना पर।
व्यूह टूट रहा है—
वितर्क के शब्द प्रहारों से—
और निरुत्तर हो रहा है, तर्क।
अचानक !
जोश पकड़ा है, तर्क सेना ने ;
खदेड़ दिया है, अकेले वितर्क को—
क्षितिज के उस पार।

कु० अरुणा त्रिपाठी

जन्म—२१-५-१९७५ ई०

शिक्षा—११ वीं (अध्ययनरत)

विशेष—सहसचिव, म० प्र० बाल साहित्यकार परिषद।

प्रकृति का आँचल

अपने में ही इक नवींनता, लिये प्रकृति का आँचल है,
जैसे कई नदियां पीकर भी, प्यासा खड़ा हिमाचल है।

अद्‌भुत शांति बहे पवन संग, हर कलख लगता प्यारा,
सदा फूटता है किरणों से, शीतलता का अंगारा।

नदियों का शीतल जल बहकर, कल-कल की धुन गाता है,
प्रातः सूरज का प्रकाश भी, मस्ती सी विखराता है।

सूरज की किरणें वृक्षों से आंख-मिचौनी करती हैं,
मुस्काती नन्हीं कलियों से जैसे खुशियां झरती हैं।

गाना गाती चिड़ियों का कलरव भी चित्त लुभाता है,
गुन-गुन करना भौंरा भी, कुछ नया संदेशा लाता है।

वह पर्वत अपनेपन का हमको अहसास दिलाते हैं,
स्वाभिमानी से खड़े फूल, एक नयी राह दिखलाते हैं।

नभ पर सजे हुये ये तारे रत्नों जैसे दिखते हैं,
दौड़ रहे रुई जैसे बादल, नयी कहानी लिखते हैं।

कहीं सुशोभित गंगा बहती, कहीं खड़ा विंध्याचल है।
अपने में ही इक नवीनता लिये प्रकृति का आंचल है!

हार्दिक-अभिनन्दन

हरी-भरी झाड़ियों से आच्छादित विन्ध्याचल की सुरम्य पर्वत शृंखलाओं से घिरा धार्मिक तपस्थल एवं ऐतिहासिक दतिया नगर अपने नागरिकों के साथ ही दतिया काव्य धारा(दतिया के कवि) नामक संग्रह के प्रकाशन-कर्ताओं एवं काव्य-सृष्टाओं का आत्मिक अभिनन्दन करता है।

नगर पालिका दतिया के

सौजन्य से।

Bhawan Shankaracharya Sanskrit Vidya... Bhavan ... Pustakalaya
628

ए0 आर0 पा[illegible]	महेन्द्र कुमार रा
प्रशासक एवं	मुख्य नगर पालि
उप—जिलाध्यक्ष	अधिकारी, दति